# शायरी
# नये दौर

ગોયલીય

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

ए० पी० गोयलीय

जन्म-भूमि — बादशाहपुर ( जिला गुड़गाँव-पंजाब ) ।

लालन-पालन — पिताजीका स्वर्गवास हो जानेसे तीन वर्षकी उम्रसे १५ वर्ष तक मातुल-गृह कोसी-कलाँ (मथुरा) में शिक्षा-दीक्षा ।

अध्ययन—जैन-महाविद्यालय चौरासी-मथुरामें न्याय, व्याकरण और काव्यका अध्ययन, विद्यार्थी-सभाका मंत्री। १९१९ ई० में रौलट-एक्ट-आन्दोलनसे प्रभावित एवं विद्यालय-परित्याग ।

ज्ञानपीठ-लोकोदय ग्रन्थमाला–हिन्दी ग्रन्थाङ्क–१४१

# शाइरीके नये दौर

## पाँचवाँ दौर

वर्तमान युगीन लब्ध-प्रतिष्ठ चार शाइरोंका
जीवन-परिचय एवं चुना हुआ श्रेष्ठ कलाम

१—जमील मज़हरी
२—रविश सिद्दीक़ी
३—अफ़सर मेरठी
४—निहाल सेवहारवी



अयोध्याप्रसाद गोयलीय

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

# समर्पण

लगा रहा हूँ मज़ामीने-नौके फिर अम्बार
ख़बर करो मेरे ख़िरमनके ख़ोशाचीनोंको

—मीर अनीस

मैं अपने इस ग्रंथरूपी खलिहानको, ऐसे शोषक वर्गीय नक़्लची लेखकोंको विवश होकर समर्पित कर रहा हूँ, जो कि निःसंकोच माले-मुफ़्त समझकर पूर्व प्रकाशित भागोंके समान इस भागसे भी शेर चुनकर अपनी कृतियोंकी संख्या बढ़ायेंगे। पत्र-पत्रिकाओंमें लेख लिखकर उर्दू-फ़ारसी बग़ैर पढ़े भी आलिम फ़ाज़िल कहलायेंगे और कवरका डिज़ाइन उड़ाकर अपनी सुकृति-की ज़ीनत बढ़ायेंगे। बीक़ौल 'सफ़ी' लखनवी—

ज़ोर ही क्या था जफ़ाए-बाग़बाँ देखा किये
आशियाँ उजड़ा किया, हम नातवाँ देखा किये

—गोयलीय

## यह सीरीज़

प्रस्तुत पाँचवें दौरपर 'शाइरीके नये दौर' सीरीज़ समाप्त की जा रही है। अब केवल 'शाइरीके नये मोड़' सीरीज़के तीसरे, चौथे और पाँचवें मोड़ शेष हैं। सम्भवतः वे भी इस वर्षमें मुद्रित हो जायेंगे।

यद्यपि कुछ ऐसे शाइर, सीरीज़में उल्लिखित होनेसे रह जायेंगे, जनका कि परिचय एवं कलाम—'शेर-ओ-सुख़न' 'शाइरीके दौर' और 'शाइरीके मोड़' में जाना आवश्यक था, किन्तु यह क्रम तो कभी समाप्त होनेवाला नहीं। समुद्रमें मोतियों और आँखोंमें आँसुओंकी कमी नहीं, निकालने वाला ही लाचार हो जाता हैं।

उम्र थोड़ी है और स्वांग बहुत

उर्दू-ग्रंथ-माला प्रारम्भ करते समय यह ध्यान भी न था कि बीस वर्षके रात-दिन इसमें घुल जायेंगे और फिर भी पोत-पूरा न पड़ेगा—

'मुसहफ़ी'! हम तो समझे थे कि होगा कोई ज़ख़्म
तेरे दिलमें तो बहुत काम रफ़ूका निकला

पाठकोंने जिस चाव और स्नेहसे ग्रन्थ-मालाको अपनाया है और ममता भरे उत्साहवर्द्धक पत्रों-द्वारा लिखते रहनेके लिए प्रेरणाएँ देते रहे हैं, उसको देखते हुए 'साक़िब' लखनवीका यह शेर मेरे हालपर कितना मौज़ूँ चस्पाँ होता है?

ज़माना बड़े शौक़से सुन रहा था
हमीं सो गये दास्ताँ कहते-कहते

न मैं थककर सो रहा हूँ और न क़लम रख रहा हूँ और न मेरा जोशेजुनूँ कम हुआ है। केवल इस सीरीज़को समाप्त कर रहा हूँ। अब जो बहुत से अधूरे कार्य्य पड़े हुए हैं, उन्हें पूर्ण करूँगा और कुछ नवीन लिखूँगा।

इल्तफ़ाते-जोशे-वहशत फिर कहाँ
हो सके जब तक बयाबाँ देखलें

डालमियानगर (बिहार)
१५ अगस्त १९६१ ई०

—अ० प्र० गोयलीय

# विषय-सूची

## जमील मज़हरी



## रविश सिद्दीक़ी

## अफ़सर मेरठी



## निहाल सेवहारवी

# शाइराका पाँचवाँ दौर

अल्लामाँ जमील मज़हरी

प्रोफ़ेसर अफ़सर मेरठी

हज़रत रविश सिद्दीक़ी

मरहूम निहाल सेवहारवी

# जमील मज़हरी

सैयद काज़िमअली 'जमील' मज़हरीका जन्म विहार प्रान्तीय 'सारन' ज़िलेके हसनपुरमें सितम्वर १९०५ ई० में हुआ था। आपके दादा मौलाना मज़हर हुसैन उत्तरप्रदेशीय ग़ाज़ीपुर-निवासी थे। उनका विवाह हसनपुरमें हुआ था और वे वहीं वस गये थे। उन्हीं दादाकी स्मृति-स्वरूप 'जमील' अपने नामके साथ 'मज़हरी' ( मज़हर वंशीय ) लिखते हैं। जमीलकी प्रारम्भिक शिक्षा घरपर ही हुई। १९१५ ई० में मोतिहारी ज़िला-स्कूलमें प्रविष्ट हुए। १९२० ई० में कलकत्ते चले गये। वहींसे मैट्रिक पास किया। कलकत्तेसे ही १९२८ ई० में बी० ए० और फ़ारसी एवं मुस्लिम इतिहासमें १९३१ में एम० ए० किया।

**परिचय**

शिक्षा सम्पन्न होनेपर आपने पत्रकारिताको अपनाया। प्रारम्भमें 'अलहिन्द' का सम्पादन-भार सँभाला। उग्र राष्ट्रीय विचार, जवानीका आलम, हृदयमें कुछ कर दिखानेके वल्वले, मस्तिष्क लेखन-कलामें दक्ष, लेखनीमें प्रवाह, स्फूर्तिदायक, प्रेरणाप्रद और देश-भक्तिसे ओत-प्रोत मर्मस्पर्शी सम्पादकीय लेख, गोरी सरकारके साम्राज्यी दुर्गपर गोलेके समान वरसने लगे। एक मासमें ही वह घवरा उठी। परिणाम-स्वरूप आपको वहाँसे सम्बन्ध-विच्छेद करना पड़ा। समूचे परिवारके भरण-पोषणका भार आपपर था। आजीविकोपार्जनके लिए कोई-न-कोई कार्य करना आवश्यक था और लेखन-व्यवसायके अतिरिक्त और किसी तरफ़ रुचि न थी। अतः कलकत्तेमें ही रहकर १९३७ ई० तक कई पत्र-पत्रिकाओंमें काम किया। उन दिनोंके कलकत्तेके उर्दू-पत्र कोई मुस्लिम-लीगी, कोई मौलवी टाइप, कोई मज़हवी और कोई पोंगापंथी विचार-धाराके थे। जमील उनमें अपने राष्ट्रीय विचार और हृदयोद्गार प्रकट नहीं कर सकते थे। अतः उनमें आप साहित्यिक, सामाजिक आदि ऐसे

लेख देते रहे, जिससे विभिन्न विचार-धाराओंके पत्र-स्वामियोंसे व्यर्थका टकराव न हो।

१९३५ ई० में खिलाफ़त कमेटी वालोंने मुस्लिम-कान्फ्रेंसके साथ एक उर्दू-लिटरेरी कान्फ्रेंसकी भी स्थापना की। राजनैतिक विचार-धाराओंमें पृथ्वी-आकाशका अन्तर होते हुए भी शहीद सुहरावर्दी[1], मुल्लाजान मुहम्मद वग़ैरहने उर्दू-कान्फ्रेंसकी स्वागतकारिणीका अध्यक्ष जमीलको बनाया। इस कान्फ्रेंसमें आपने जो स्वागत-भाषण पढ़ा, वह बहुत क्रान्तिकारी साबित हुआ। उस भाषणमें आपने स्पष्ट शब्दोंमें 'साहित्य केवल साहित्यके लिए' पुरातन दृष्टिकोणका विरोध करते हुए फ़र्माया कि—"उर्दू-अदबकी तरक़्क़ी अगर हिन्दुस्तानकी तहरीके-आज़ादीके काम नहीं आ सकती तो यह अपना फ़र्ज़ पूरा नहीं करती। इसे तहरीके-आज़ादीको आगे बढ़ानेका मुक़द्दस तारीख़ी फ़र्ज़ ( पवित्र ऐतिहासिक कर्त्तव्य ) अंजाम देना है।"

मौलाना 'हसरत'[2] मोहानीने अपने व्याख्यानमें आपके भाषणकी कटु आलोचना की, किन्तु ख़्वाजा हसन निज़ामीने[3] उस आलोचनाका दन्दान शिकन जवाब देते हुए भाषणकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और जब आप मंचसे उतरे तो मौलाना शौकतअलीने[4] आपको बाहुओंमें भरकर उठा लिया। इसी कान्फ्रेंसके सम्बन्धमें मौलाना अबुलकलाम साहब 'आज़ाद' की सेवामें दो-चार बार जाने-आनेसे उनसे सम्बन्ध बढ़ते गये। यहाँ तक कि

---

१, भारत-विभाजनके दिनोंमें बंगालके मुख्य मंत्री, बंगाल रक्त-पातके प्रसिद्ध नेता और फिर कुछ अर्से तक पाकिस्तानके प्रधान मंत्री।

२. १९२४ ई० तक कांग्रेसके बड़े सरगर्म नेता, फिर जीवन पर्यन्त सम्प्रदायी, उर्दूके बहुत बड़े ग़ज़ल-गो शाइर। आपका परिचय एवं कलाम शेरो-सुख़नके तीसरे भागमें दिया जा चुका है।

३. कट्टर साम्प्रदायिक नेता, उर्दू-गद्यके ख्याति-प्राप्त लेखक।

४. खिलाफ़त-आन्दोलनके प्रमुख।

हर शनिवारको तीन वर्ष तक उनकी सेवामें उपस्थित होते रहने और उनके अपार ज्ञान-भण्डारसे लाभ उठानेका सौभाग्य मिलता रहा।

बिहारमें काँग्रेस-मंत्रिमण्डल बन जानेके बाद २ दिसम्बर १९३७ ई० से आप वहाँके पब्लिसिटी ऑफ़ीसर पदपर नियुक्त किये गये। १९३९ ई० में काँग्रेसने मन्त्रिमण्डलसे त्याग-पत्र दिया तो आप भी त्यागपत्र देनेको प्रस्तुत हो गये, किन्तु देशरत्न राजेन्द्रबाबू ( वर्तमान राष्ट्रपति ) ने आपको त्याग-पत्र नहीं देने दिया। १२ अगस्त १९४२ ई० में राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी बन्दी बनाये गये तो आपने त्याग-पत्र देते हुए लिखा—"शहीदोंके खूनकी रौशनाईमें अपना क़लम डुबोकर मैं हुकूमते-बरतानियाकी पब्लिसिटी नहीं करना चाहता।"

त्याग-पत्र देनेके बाद आप भी काँग्रेसी गुप्त कार्य करनेके सन्देहमें गिरफ़्तार कर लिये गये। एक मासके बाद मुक्त हुए तो आप कलकत्ते चले गये, क्योंकि पारिवारिक स्थितिको देखते हुए अर्थोपार्जनके लिए हाथ-पाँव मारना ज़रूरी था। १९४३ से १९४७ ई० तक आप फ़िल्म कम्पनियोंके लिए गीत और संवाद लिखते रहे, किन्तु वहाँका वातावरण आपके मनके अनुकूल न था। वहाँ धन तो मिलता था, परन्तु चैन नसीब न होता था। वहाँके विलासपूर्ण जीवन और शातिराना दाव-पेंचोंसे आप भाग खड़े हुए। उस समयकी मनःस्थिति आपने अपने इन शब्दोंमें व्यक्त की है—

तोल अपनेको तोल

[ ८ में-से २ बन्द ]

देखके कर्रोफ़र दौलतकी तेरा जी ललचाय
सूँघके मुश्की ज़ुल्फ़ोंकी बू नींद-सी तुझको आय
जैसे बे-लंगरकी किश्ती लहरोंमें बोलाय
मनकी मौजमें तेरी नीयत यूँ है डावाँडोल
तोल अपनेको तोल,

यह गेसू[1] यह बिखरे गेसू, नाग हैं, काले नाग
इन तिर्छी-तिर्छी नज़रोंको लाग है, तुझसे लाग
रूपकी इस सुन्दर नगरीसे,भाग रे शाइर भाग
तुझसे तुझको छीन रहे हैं, यह परियोंके गोल
तोल अपनेको तोल

भारत-स्वतन्त्र होनेपर १९४७ ई० में जमील डिप्टी डायरेक्टर ऑफ़-पब्लिसिटी-पदपर नियुक्त किये गये और फ़िल्म-विभाग आपके सुपुर्द किया गया। जब वह विभाग बन्द किया गया तो जनवरी १९५० में बिहार सरकारने आपकी मुलाज़मत पटना-कॉलेजमें परिवर्तित कर दी। तभीसे आप वहाँ प्रोफ़ेसर हैं।

**शाइरीका शौक़**

जमीलको शाइरी उत्तराधिकारमें प्राप्त हुई है। आपके दादा सैयद मज़हर हुसैन लखनऊके प्रसिद्ध मर्सिया-गो शाइर 'दबीर' के शिष्य थे। आपके पिता मौलवी सैयद ख़ुर्शीदहुसेन भी बहुत अच्छे शाइर थे। हर रंगमें कहते थे। उनकी बे-पर्वाहीकी वजहसे उनके कलामका ज़खीरा तो अब अप्राप्य है, किन्तु स्मृति-स्वरूप किसी तरह एक मसनवी बची रह गई है। जिसके देखनेसे विदित होता है कि मसनवी-गोईमें भी उनका मर्त्तबा बुलन्द था। उन्हींकी देख-रेखमें 'जमील' की शाइरी परवान चढ़ी। आश्चर्य है कि ४—५ वर्षकी उम्रसे ही आपको शाइरीका चस्का लग गया। आपके पिता 'अनीस'के मर्सिये पढ़ते तो आप बालसुलभ कौतुकतावश उनकी नक़ल उतारते और नक़ल करते-करते कभी स्वयंके मुखसे भी अपने मिसरे निकल पड़ते थे। आपके पिता खूब उत्साह बढ़ाते थे और शेर कहनेकी प्रेरणा देते रहते थे। एक बार १९२२ ई० के एक मुशाअ़रेमें

---

१. बालोंकी लटें।

उन्होंने ग़ज़ल पढ़नेके लिए आपको प्रोत्साहित किया और स्वयं अपनी ग़ज़ल पढ़नेको दी; जैसा कि नवदीक्षित शिष्योंको उस्ताद स्वयं अपनी ग़ज़ल पढ़नेको देते आये हैं। पिताजीकी कही हुई ग़ज़लमें दो शेर जमीलके स्वयं अपने भी थे। जिनका एक मिसरा यह था—

हम उठके बैठ गये गर्दे-कारवाँकी तरह

१९२४ में 'जमील' ने सबसे पहली नज्म 'मालनकी बेटी' १९ अशआ़रकी कही, जोकि उसी वर्ष कलकत्तेके 'नश्तर' में प्रकाशित हुई। यहाँ हम बतौर नमूना उसके दो शेर दे रहे हैं। ताकि आपकी प्रारम्भिक शाइरीकी उड़ानका अन्दाज़ा लगाया जा सके—

फैला हुआ रुख़पर काजल है, सरका हुआ सरसे आँचल है
कमसिन है, उठती कोयल है, तनहाईमें भी शर्माती है
बचपनका ताक़ज़ा है शोख़ी, शोख़ीका नतीजा है ग़ैरत
झुक जाती हैं आँखें शर्मसे ख़ुद होंटों पै हँसी जब आती है

उक्त दो शेरोंसे यह स्पष्ट हो जाता है, कि जमीलकी शाइरीकी महबूब: (प्रेयसी) सरे-महफ़िल दीदे लड़ाने वाली, आशिक़के सामने ही अग़ियारको बोसा-ओ-कनारसे लुत्फ़-अन्दोज करनेवाली बेहया तुर्की हूर न होकर, अपने भारतकी ही लाजवन्ती, सुशीलाकुमारी है। जिसकी नारी सुलभ लाज उसका एकान्तमें भी दामन नहीं छोड़ती। परपुरुषको तो बात ही क्या, स्वयं अपनेको देखनेसे भी उसकी आँखें शर्मसे झुक जाती हैं। जमील नारीको भोगविलासका साधन न समझकर सृष्टि-निर्माणका मुख्य अंग समझते हैं। उसके अस्तित्वसे ही संसारमें प्रकाश, सुख, शान्ति है। नारी ही विश्व-उद्यानके पुष्पोंमें सुगन्ध है। नारीके ही शील-सदाचार, रूपके कारण हम गौरवान्वित हैं। जमीलने नारी सम्बन्धी अपने पवित्र विचार यूँ व्यक्त किये हैं—

**नारी-चित्रण**

## औरत

### [ १६ में-से ११ शेर ]

है तेरे जल्वए-रंगींसे[1] उजाली दुनिया
तुझसे आबाद है शाइरकी ख़यालो दुनिया
नग़मए-रूहेअमल[2], बूए-गुलिस्ताने-हयात[3]
गर्मिए-बज़्मे-जहाँ[4] शमए-शबिस्ताने-हयात[5]
तू है मासूम, तिरी सारी अदाएँ मासूम
इन्तहा ये है कि होती हैं ख़ताएँ मासूम

जो नारीके अपराधों ( ख़ताओं ) को भी निष्पाप ( मासूम ) समझने और कहनेकी क्षमता रखते हैं, उन जमीलकी सहृदयता और नारीके प्रति सम्मानकी भावनाके क्या कहने ?.

हुस्न किरदार निहाँ[6] हुस्न तबीयतमें[7] तेरे
मए-सर-जोशो-वफ़ा शीशए-इस्मतमें[8] तेरे
अपने हाथोंसे ख़ुदाने है, बनाया तुझको
हम कहेंगे दिले-फ़ितरतकी तमन्ना तुझको
माहे-कामिलसे[9] तड़प, बर्क़से[10] ग़ैरत माँगी
सीनए-मिहरसे[11] थोड़ी-सी हरारत माँगी

---

१. सौन्दर्य्य-आभासे, २. सदाचारी प्राणोंका संगीत, ३. जीवन वाटिकाकी सुगन्ध, ४. संसारके उत्सवकी शोभा, ५. जीवन प्रासादका दीपक, शमा, ६. गुप्त सदाचार ही तेरा रूप है, ७. सौन्दर्य्य-सुरुचि तेरे स्वभावमें है, ८. नेकी और भलाईकी उमंग रूपी मदिरा ही तेरे शील रूपी पात्रमें है , ९. पूर्णिमाके चन्द्रसे, १०. बिजलीसे, ११. सूर्यके सीनेसे ।

रूह[1] फूलोंकी बनी, जिससे वह ख़ुशबू लेकर
दिले-शाइरके अमानत थे जो आँसू लेकर
गूँधा क़ुदरतने तिरी शोख़ तबीयतका ख़मीर
और तिरी ख़ाकके ज़र्रोंसे मुहब्बतका ख़मीर
दहरमें[2] मक़सदे-तख़लीककी[3] हामिले[4] है तू
जिसके आग़ोश में[5] कुलज़म[6] है, वह साहिल[7] है तू
चढ़के परवान तेरी गोदसे इन्साँ निकला
तूने जिस फूलको सींचा वह गुलिस्ताँ निकला
मानिए-लफ़्ज़े-सकूँ राज़े-मुहब्बत है तू
है यह मुजमर्ल[8] तेरी तारीफ़ कि औरत है तू

जमीलकी शाइरीकी प्रेयसी न तो जन्नतकी ऐसी हूर है, जिसे देखकर सूर्य्य भी थरथराने लगे—

सोज़—थरथराता है, अब तलक ख़ुर्शीद
सामने तेरे आ गया होगा

न ऐसी अनुपम रूप लावण्यवती है कि जिसके कपोल-प्रकाशके सम्मुख परवानेको दीप-शिखा भी नज़र न आये—

मोमिन—उस माह-वशके[9] जल्वेके[10] क़ुर्बान[11] क्यों न हूँ
परवानेको भी रात न आया नज़र चिराग़

न ऐसी बर्क़-तूर है कि जिसकी उपस्थितिसे चिराग़ोंकी रोशनी मांद पड़ जाये—

---

१. आत्मा, २. संसारमें, ३. सृष्टिके उद्देश्यके लिए, ४. साधन, ५. गोदमें, ६. दरिया, ७. किनारा, ८. संक्षिप्त, साररूपमें, ९. चन्द्रमुखीके, १०. आभाके, ११. न्योछावर।

मीर—वे आये बज़्ममें, इतना तो 'मीर'ने देखा
फिर इसके बाद चिराग़ोंमें रौशनी न रही

और न वह सात घाटका पानी पीये हुए कोई छिनाल छक्को हैं—

दाग़—हर अदा मस्ताना सरसे पाँवतक छाई हुई
उफ़ तेरी काफ़िर जवानी जोश पर आई हुई

जमीलने तो अपने ही गाँवकी बचपनमें साथ खेलनेवाली मामूली घरानेकी लड़कीको कभी 'राधा' कभी 'उजरा' के छद्मनामसे अपनी शाइरीका मौज़ूँ बनाया है।

खड़ी है मन्दिरमें इक हसीना सियाह जूड़ा खुला हुआ है
नशीली आँखोंमें इक तमन्ना कुआरे होंटोंपै इक दुआ है

जमीलकी प्रेयसी महफ़िलोंकी ओर आँख भी उठाकर नहीं देखती। वह तो मन्दिरमें जाती है। उसकी मादक आँखोंमें किसीको बेसुध करनेकी क्षमता नहीं, उनमें शुभ कामनाओंके गुलाबी डोरे हैं। वह हरजाई नहीं, कुमारी है। उसके ओठोंपर कोसनोंके एवज दुआएँ हैं, मंगल-भावनाएँ हैं। जमीलकी प्रियाके पास न तो ऐसा रूप है कि मनचले फोटोग्राफ़र फ़ोटो खींचनेके लिए उमड़ पड़ें और न ऐसा परिधान है कि जिसके वर्णनके लिए पृथ्वी-आकाशके कुलावे मिलाने पड़ें। वह तो नहा-धोकर मामूली-सी साड़ी पहनकर भी ऐसी खिल उठती है कि मेकपशुदा औरतें देखें तो पानी-पानी हो जायें—

**सौन्दर्य-वर्णन**

नहा-निखरकर हमारी राधाने आज पहनी है धानी सारी
लटें हैं शानों पै[1] भीगी-भीगी, कि खेत पर अब्र[2] झूमता है
अगर्चे आँचल ढलक गया है, अगर्चे गगरी छलक रही है
मगर ज़रा मुड़के देखती जा, किसीका दिल भी पिघल रहा है

---

१. कन्धोंपर, २. बादल।

जमीलने 'दोशीज़ए-बंगाल' शीर्षकसे २८ शेरकी नज़्म कही है। उसमें उन्होंने बंग-कुँआरी युवतीका ऐसा पवित्र एवं स्वाभाविक चित्रण किया है कि मनमें क्षणभरको भी विकार न आकर ऐसा प्रतीत होने लगता है कि अपनी ही बहू-बेटी सामने बैठी है। यहाँ १२ शेर दिये जा रहे हैं—

अल्लाहरे नैरंगी[1], मन-मोहनी सूरतकी
कुछ रंग सबाहतका[2] कुछ छाँव मलाहतकी[3]
है ख़्वाब मुसव्वरका[4] आग़ोशे-हक़ीक़तमें[5]
या शोलए-मूसीक़ी[6] है पैकरे-निकहतमें[7]
सुलझाई हुई ज़ुल्फ़ें, हैं शानए-उरियाँपर[8]
या शामकी तारीकी[9] दीवारे-गुलिस्ताँपर[10]

इन चम्पई आँखोंमें इक कैफ़[11] है वज्दानी[12]
इक सहर[13] है ख़्वाबीदः[14] इक राज़ है पिन्हानी[15]
यह नर्गिसे-ख़्वाब-आवर[16] जागी हुई शब भरकी[17]
बूँदें न कहीं टपकें छलके हुए साग़रकी
इक जाममें घोली है, बेहोशी-ओ-हुश्यारी
सरके लिए ग़फ़लत है, दिलके लिए बेदारी[18]

---

१. जादूगरी, २. रूपका, ३. लावण्यकी, नमकीनोकी, ४. चित्रकारका स्वप्न, ५. वास्तविकताकी गोदमें, ६. संगीतकी ज्वाला, ७. सुगन्धके वातावरणमें, ८. निर्वस्त्र कन्धोंपर, ९. सन्ध्याकालीन अँधेरा, १०. उद्यान-की दीवारपर, ११. नशा, आनन्द, १२. आत्म-विस्मृत करनेवाला, आनन्द-विभोर करने वाला, १३. जादू, १४. सोया हुआ, १५. छिपा हुआ भेद, १६. नर्गिसी स्वप्निल आँखें, १७. रातभरकी, १८. जगानेवाली।

ग़म्माज़िए-फ़ितरतको[1] आँचलसे छुपाती है
बेचैन अदाओंको तहज़ीब सिखाती है
हैं गोश:नशीं[2] देखो शर्माई हुई नज़रें
सिमटी हुई यह नज़रें, सिमटाई हुई नज़रें
संजीदगी पैदा है, सरशार[3] निगाहोंसे
ठुकराती है, दुनियाको ख़ुद्दार[4] निगाहोंसे
है सुबह जवानीकी चेहरे पै है नूर[5] उसका
परवर्दए-ग़ैरत[6] है, मासूम ग़रूर[7] उसका

ख़्वाबीद: तरन्नुम[8] है, ख़ामोश क़यामत[9] है
रफ़्तारकी शोख़ीमें गंगाकी मतानत[10] है
जज़्बातकी बेदारी[11] ज़ाहिर है, रगो-पैसे[12]
तालाबके पानीमें बहता हो कँवल जैसे

गंगाकी मतानत और कमलका तालाबके पानीमें बहना, कितनी अछूती कल्पना है ? जमीलकी इश्क़िया शाइरीका परिचय पानेसे पूर्व आपकी राष्ट्रीय नज़्मोंकी एक झलक देखिए—

---

१. स्वभावतः उभरनेवाले यौवनको, २. एकान्तवासी, ३. मादक, ४. गर्वीली, ५. रूप, प्रकाश, ६. लाज-द्वारा पाला हुआ, ७. निष्पाप, गर्व, ८. स्वप्निल संगीत, ९. प्रलय, १०. गम्भीरता, ११. भावनाओंकी जागृति, १२. अंग-अंगसे ।

'जमील'को शाइरीका शौक़ तो बचपनसे ही था। उनकी १९ वर्षकी उम्रमें १९२४ ई० में 'मालनकी बेटी' शीर्षक नज़्म प्रकाशित भी हो गई थी, किन्तु अभीतक किसी कामिल उस्तादका सहारा न पानेके कारण शाइरीमें वह निखार और लालित्य न आने पाया था, जिसके लिए आप लालायित थे।

**राष्ट्रीय-विचार**

बी० ए० (१९२७ ई०) में पढ़ते हुए अपने प्रोफ़ेसर 'वहशत' कलकतवीसे आपने उनके शिष्य समूहमें सम्मिलित होनेकी अभिलाषा व्यक्त की और सौभाग्यसे हज़रत वहशतने[1] स्वीकृति भी दे दी। तबसे आपकी शाइरीमें उत्तरोत्तर निखार आता गया और अब तो स्वयं एक प्रामाणिक उस्तादका मर्त्तबा रखते हैं। आप स्वभावतः राष्ट्रवादी और भारतीय-सभ्यताके पुजारी रहे हैं। यहाँ तक कि उर्दू-साहित्यमें क्लिष्ट और अव्यावहारिक अभारतीय शब्दोंके मिश्रणको भी आप पसन्द नहीं करते, फ़र्माते हैं—

कीजे न 'जमील' उर्दूका सिंगार अब ईरानी तलमीहोंसे
पहनेगी बिदेसी गहने क्यों, यह बेटी भारत माताकी

भारतमाताके प्रति जमीलकी कितनी अगाध श्रद्धा-भक्ति रही है, यह आपकी 'भारतमाता' शीर्षक नज़्मसे जाना जा सकता है। आप 'जोश' मलीहाबादीकी तरह अपनी मादरे-वतनको यह कहनेकी धृष्टता नहीं करते—

ऐ सियह-रूह[2], बेहया, वहशी, कमीने, बदनुमाँ[3]!
ऐ जबीने-अर्ज़के दाग़[4], ऐ दनी[5] हिन्दोस्ताँ!

अपितु बहुत विनम्र और प्यारभरे स्वरमें अपनी भारतमाताकी आरती उतारते हैं। नज़्म पढ़ते हुए ऐसा आभास होता है, जैसे भारत माँके

---

१. आपका परिचय एवं कलाम शेरो-सुखन तीसरे भागमें दिया जा चुका है, २. काले हृदय, ३. कुरूप, ४. पृथ्वीके कलंक, ५. पामर, नीच।

मन्दिरमें किशोर-किशोरियाँ उन्मुक्त होकर नाचते-गाते स्तुति कर रहे हैं—

## भारत माता

[ १० मेंसे २१ शेर ]

माता-माता, प्यारी माता !
बच्चे तुझपर वारी माता !
ओ माता ! ओ भारत माता !!
तुझ पै ख़ुदाकी रहमत[1] माता !
सुन्दरी तू , हरियाली तू है
धानी आँचलवाली तू है
फूल खिलाएँ तेरी हवाएँ
हुन बरसाएँ तेरी घटाएँ
शहदकी नहरें,दूधकी धार,
गोदीमें जन्नतकी बहारें
मीठे-मीठे फल देती है
अन देती है, जल देती है
चाँदनी रातोंके जल्वे में
बिन्दराबनके[2] सन्नाटे में
जब तारोंकी सभा सजती है
हिरदेकी बंसी बजती है

---

१. दया, कृपा, २. वृन्दावनके ।

आधी रातको काली कोयल
मौसमकी मतवाली कोयल
फैलती है, जब आमकी ख़ुशबू
गीत तेरा गाती है, कू-कू
जग देता है, तुझको दुआएँ
हम तेरा गुन किस तरह न गाएँ
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
तेरी गोदमें भाई-भाई
छींटोंमें तेरे बादलके
सायेमें तेरे आँचलके
गंगा और जमुनाकी रवानी
कहती है माता तेरी कहानी

आगे माताके वन्दिनी होनेका उल्लेख करते हैं, किन्तु इतने संयत और नम्र शब्दोंमें कि माँके प्रति बेअदबीका आभास तक नहीं मिलता—

आँचलमें तेरे हुन बरसें
और तिरे बच्चे अनको तरसें
मनके रोगी पेटके मारे
जीते हैं, ग़ैरोंके सहारे
ज़िल्लत रुसवाई बदनामी
सौ धितकारें एक ग़ुलामी
कैसी हवा पच्छिमसे आई
जल गई तेरी खेती माई
वीरानी हर सिम्त बरसती
उजड़ी नगरी सूनी बस्ती

क्या हुई वह मामूर फ़ज़ाएँ
दौलतकी बहती गंगाएँ
नौरतनी दरबार कहाँ है
परतापी तलवार कहाँ है
मुखड़ा क्यों मैला-मैला है
काजल क्यों फैला-फैला है
आँसू क्यों हैं जारी माता !
प्यारी माता ! प्यारी माता !!

फिर पुत्रके नाते माँकी सेवामें अपनी जानें न्योच्छावर करनेकी सौगन्ध खाते हैं—

आ हम तेरे बाल सँवारे
तुझपर अपनी जानें वारें
सीस तेरे चरनों पै नवाएँ
प्रीतके मीठे मन्तर गाएँ
नाम तेरा ले-लें के पुकारें
सोती ग़ैरतको ललकारें
प्यारी माँ मन क्यों मैला कर
सर ऊँचा कर, और ऊँचा कर
देख अपने बच्चोंका लश्कर
ठाठें ले जिस तरह समन्दर
मत रो ऐ दुखियारी माता !
प्यारी माता ! प्यारी माता !!

उक्त नज़्ममें—वृन्दावन, वंसी, कोयल, आम, गुन, गंगा-जमना, आँचल, परतापी—तलवार, काजल, मुखड़ा, चरन, नवाएँ, पीतके मीठे मन्तर, दुःखमारी, प्यारी माँ आदि शब्दोंने माधुर्य्य भर दिया है और शाइरके भावोंको मर्मस्पर्शी वना दिया है।

जमीलकी राष्ट्रीय नज़्मोंसे पूर्व उनकी 'लोरी' की बानगी देनेका हम लोभ संवरण नहीं कर पा रहे हैं। वच्चोंको पालनेमें झुलाते समय भारतके घर-घरमें लोरियाँ गानेका रिवाज है। जिन्हें सुनकर सुवकते हुए वच्चे भी निद्रा-मग्न हो जाते हैं। जमीलने लोरी भी कही, तो उसमें भारतीयताका पुट दिये विना न रह सके। आपने वच्चीको 'शहज़ादी' आदि न कहकर 'राजदुलारी' एवं 'राधा-मनमोहनी' सम्वोधनसे दुलार किया। उसे 'नूरजहाँ' और 'भारतकी महारानी' शब्दों-द्वारा थपथपाया। युवा होनेपर उसकी कूखसे सोहराव-ओ-रुस्तमके वजाय 'प्रताप' और 'अक़बर' की इच्छा व्यक्त की है।

## लोरी

[ ६ वन्दमें-से ४ ]

मेरी प्यारी सो जा, सो जा
राजदुलारी, सो जा, सो जा
गोदमें मेरी सोती है तू
सीपके अन्दर मोती है तू
बेटा है तू, बेटी है तू
जो कुछ भी है मेरी है तू
मेरी प्यारी सो जा, सो जा
राजदुलारी सो जा, सो जा

सॉंवली सूरत रूप सलोना
निर्मल चाँदी निर्मल सोना
चाँद-सा मुखड़ा कामिनी रंगत
राधाकी मनमोहनी मूरत
मेरी प्यारी सो जा, सो जा
राजदुलारी सो जा, सो जा

आँचलमें फूलें जो कलियाँ
उनसे महकें देशकी गलियाँ
सरपर हो इस्मतकी चादर
गोदीमें परताप और अकबर
मेरी प्यारी सो जा, सो जा
राजदुलारी सो जा, सो जा

घरकी लक्ष्मी बनकर रहना
सासकी बेटी बनकर रहना
नूरजहाँकी सानी होना
भारतकी महारानी होना
मेरी प्यारी सो जा, सो जा
राजदुलारी सो जा, सो जा

जमीलके जीवन-उद्देश्य और हृदयस्थ भावनाओंका कुछ स्पष्टीकरण इस नज़्मसे हो जाता है—

## शाइरकी तमन्ना

[ १४ में-से ४ शेर ]

अगर इस गुलशने-हस्तीमें होना ही मुक़द्दर था
तो मैं ग़ुञ्चोंकी मुट्ठी में दिले-बुलबुल हुआ होता
किसी भटके हुए राहीको देता दावते-मंज़िल[1]
बयाबाँकी अँधेरी शबमें[2] जोगीका दिया होता,
किसीके कुल्लिए अह्ज़ाँ में[3] शमए-मुज़्महिल[4] बनकर
किसी बीमार मुफ़्लिसके सिरहाने रो रहा होता
शरर[5] बनकर किसी नादार[6] घरके सर्द चूल्हेमें
बसद उम्मीद फ़र्दा[7] ज़ेर ख़ाकिस्तर[8] दबा होता

आगेके पृष्ठोंमें प्रेरणाप्रद, स्फूर्तिदायक आदि भिन्न-भिन्न विषयोंकी चन्द नज़्मोंके अंश दिये जा रहे हैं—

---

१. यात्राका निमंत्रण, २. सुनसान रास्तोंकी अँधेरी रातमें, ३. विपदाओंकी तीव्रतामें, अधिकतामें, ४. शिथिल दीपक, ५. आगकी चिन्गारी, ६. दरिद्र, ७. भविष्यकी आशापर, ८. उपलेकी आगकी तरह राखके अन्दर सुलगता रहता।

## नवाए-जरस[१]

[ १७ में-से ६ वन्द ]

बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने नौजवाँ, ग़रूरे-कारवाँ हो तुम
जहाने-पीरके[२] लिए शबाबे-जाविदाँ[३] हो तुम
तुम्हारे हौसले जवाँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने नौजवाँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो

. . . . . . . . .

उठाये सर बढ़े चलो, तने हुए ग़रूरसे
तुम्हारे क़ाफ़िलेकी शान, देखती हैं दूरसे
हिमालयाकी चोटियाँ बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने-नौजवाँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो

. . . . . . . . .

बढ़े हुए हों हौसले, चढ़ी हुई हो आस्तीं,
बदल दो सूरते-जहाँ, उलट दो सुफ़हए-ज़मीं[४]
पलट दो दौरे-आसमाँ बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने-नौजवाँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो

---

१. यात्रीदलके घण्टेकी पुकार, २. बूढ़े संसारके, ३. अमर यौवन, ४. पृथ्वीके पृष्ठ ।

बुझे न शमए-दिल कहीं, हवा है तेज़ बाग़की
अगर अँधेरी रात है, बढ़ा दो लौ चिराग़की
गरज रही हैं आँधियाँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने नौजवाँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो

रुके न पाए-जुस्तजू[1], बिछे हैं ख़ार[2] राहमें,
बुझे न परचमे इल्म[3] खड़े हैं, दार[4] राहमें
मिसाले-गर्दे-कारवाँ[5] बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने-नौजवाँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो

जो अक़्ल राह रोक दे, तो उसका साथ छोड़ दो
जो मज़हब आके टोक दे, तो उसकी क़ैद तोड़ दो
हवाकी तरह सरगिराँ[6] बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने-नौजवाँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो

ग़रीब लाल क़ौमके बिलक रहे हैं, भूकसे
ख़ुदाका अर्श[7] हिल रहा है, मामताकी हूकसे
गिरे न सर पै आसमाँ बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने-नौजवाँ, बढ़े चलो बढ़े चलो

---

१. खोज करनेके लिए उठे हुए क़दम, २. काँटे, ३. ज्ञान-पताका, ४, सूली-घर, ५. यात्री-दलको धूलके समान, ६. मस्त होकर, ७. सिंहासन।

सरोंसे बाँधकर कफ़न, बढ़े चलो, बढ़े चलो
उमीदे-मादरे-वतन बढ़े चलो, बढ़े चलो
दुआएँ दे रही हैं माँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने-नौजवाँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो

जो राहबर[1] ठहर गये, नहीं मुक़ाम पेश-पसँ[2]
जो हम-सफ़र[3] बिछड़ गये तो छेड़ो नालए-जरसँ[4]
सुनो 'जमील' की फ़ुग़ाँ[5] बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने-नौजवाँ, बढ़े चलो, बढ़े चलो

बादुलमश्रिक़ैन
[ पूर्व और पश्चिममें अन्तर ]
[ १३ में-से ७ शेर ]

वोह एक वे हैं कि खींचे हुए हैं वक़्त की बाग
वोह एक तुम हो कि अपनी भी छोड़ दी है लगाम

---

१. पथ-प्रदर्शक, २. सोच-विचारका, ३. सहयात्री, ४. घण्टी बजाओ, ५. करुणपुकार।

वोह एक वे हैं कि फ़ितरतसे[1] भी नहीं मरऊब[2]
वोह एक तुम कि ख़ुद अपनी तबीअतोंके ग़ुलाम

वोह एक वे कि हवाओंसे ले रहे हैं ख़िराज[3]
वोह एक तुम कि मज़ारों पै कर रहे हो सलाम

वोह एक वे कि "इमामे-उमम[4], इमामे-मिलल[5]"
वोह एक तुम कि फ़क़त मस्जिदोंमें अपनी इमाम

वोह एक तुम हो कि मौजोंका डर है साहिल[6] पर
वोह एक वे हैं कि तूफ़ाँसे खेलते हैं मुदाम[7]

वोह एक तुम कि सदाए-ज़मीरसे[8] ग़ाफ़िल[9]
वोह एक वे कि सितारोंसे कर रहे हैं कलाम[10]

इसीसे मशरिक़ो-मग़रिबका[11] फ़र्क़ ज़ाहिर है
कि यह गदाए-सरे-रह[12] है, वह मुसाफ़िर है

---

१. प्रकृतिसे, २. आतंकित, ३. कर, ४. विभिन्न सम्प्रदायोंके नेता, ५. अनेक मज़हबोंके नेता, ६. दरिया किनारे पर, ७. सदैव, ८. आत्माकी वाणीसे, ९. असावधान, १०. वार्तालाप, ११. पूर्व-पश्चिमका, १२. रास्तेका भिखारी।

## ताज़ियत[1]

मत पूछो हर तब्दीली पर कुहराम यह कैसा होता है
इब्लीसके मुस्तक़बिलके[2] लिए, इब्लीसका कुनबा रोता है
बरहम है सियासतकी दुनिया, है मौतके बिस्तर पर लेटी
शाहंशाहीकी जिगरगोशः[3], शैतानकी इकलौती बेटी
शैतानकी वह बेटी जिसको अल्लाहकी रहमत कहते हैं
बाबूजी लक्ष्मी कहते हैं, ख़ाँ साहब दौलत कहते हैं
क़िस्मतके सुनहरे महलोंसे मातमकी सदाएँ आती हैं
शैताँकी कनीज़ें रोती हैं, सर पीटती हैं चिल्लाती हैं
तलबीस[4], हसद[5], कीनः[6], ग़ीबत[7], चोरी, ऐय्याशी[8], ग़द्दारी[9]
कुल बेटियाँ मरनेवालेकी, करती हैं खड़ी आहो-ज़ारी[10]
उतरे हैं गुनाहोंके[11] चहरे माँकी मुहलक[12] बीमारीसे
इक-एकका मुँह तकता है खड़ा किस हसरत किस लाचारीसे
किस तरह न रोयें, मरती है नाज़ उनके उठानेवाली माँ
सायेमें अपने आँचलके परवान चढ़ानेवाली माँ
तहज़ीब गरेबाँ फाड़े है शैतान पछाड़ खाता है
'मज़हब' बालीं पै मरीज़ः[13] की बैठा तस्बीह[14] हिलाता है

---

१. किसीके मर जाने पर उसके घर शोक प्रकट करनेके लिए जाना, २. शैतानके भविष्यके लिए, ३. साम्राज्यवादके कलेजेका टुकड़ा, ४. धोका, फ़रेब, ५. ईर्ष्या, ६. द्वेष, ७. परोक्ष रूपमें बुराई करना, ८. विलासिता, ९. कृतघ्नता, १०. रुदन, ११. पापोंके, १२. असाध्य, १३. रोगीके सिराहने, १४. माला।

मूसीक़ी नौहा[1] करती है, थ्येटरके हसीं ईवानोंमें[2]
बाज़ारोंमें सन्नाटा है, ख़ाक उड़ती है, मैख़ानोंमें[3]
शाहन्शाहीके रोनेकी आवाज़ सुनाई देती है
दुखियारी सीना कूटती है, रोती है, दुहाई देती है
कहती है कि "अम्मा वारी हो, बच्चोंसे भी मुँह मोड़ चली
इस कोख जली बूढ़ी माँको ऐ बेटा किसपर छोड़ चली
नाफ़हम तबीबोंने[4] उसके, समझा ही नहीं बीमारीको
मरदुम-ख़्वारीसे[5] बाज़ रखा इक अर्से तक बेचारीको
इक अर्से तक बेचारीने ख़ूँ पीनेसे परहेज़ किया
कमज़ोर हुई, कमज़ोरीने रफ़्तारे-मरज़को तेज़ किया
हिकमतके शिफ़ाख़ानोंमें गई माजूने-सियासत[6] बनवाया
आसाबकी तक़वियतके[7] लिए क़ानूनका टानिक[8] भी खाया
मग़रिबके मसीहे-दौराँने[9] तहज़ीबका ऑक्सीजन भी दिया
महनतके ख़ूने-सालेहका[10] रग-रगमें इञ्जेक्शन भी दिया
दरगाहोंमें चिल्ले भी बँधे, देवताओंको दोने भी दिये
मुल्लाने दुआएँ भी दम कीं, पण्डितजीने मन्तर भी पढ़े
कुल तद्बीरें उल्टी निकलीं तक़दीरने अपना काम किया
कुनबेवालोंने रो-रोकर बालीं पर इक कुहराम किया

---

१. संगीत कला रुदन, २. सुन्दर महलोंमें, ३. मदिरालयोंमें, ४. मूर्ख चिकित्सकोंने, ५. मनुष्योंको खा जानेसे, ६. राजनैतिक भंगकी बर्फ़ी, ७. स्नायु-समूहकी ताक़तके लिए, ८. बलवर्द्धक दवा, ९. पश्चिमीय सभ्यताके मसीहाने, १०. परिश्रमके पवित्र रक्तका।

ऐ भाई इब्लीस[1] आओ इधर, रोना-धोना नामर्दी है
इस हादसए-जाँकाहमें[2] तुमसे शाइरको हमदर्दी है
क्या कहते हो सदियोंका मिशन मफ़्लूज[3] हुआ, बर्बाद हुआ
यज़दाँकी मशीयतें[4] जीत गईं, इन्साँका अमल आज़ाद हुआ
यह बेसब्रीकी बातें हैं, अब जीको सँभालो सब्र करो
उट्ठो और अपना काम करो बेटीको सुपुर्दे-क़ब्र करो
बेटी न सही जिन्दा लेकिन मज़हब-सा पालक बेटा है
इज़हारे-सआदत मन्दीमें[5] क्या यह उससे कुछ हेटा है ?
गो दुश्मनकी औलाद सही फिर भी गोदीका खिलाया है
बिन बापके बेकस बच्चेपर दामनका तुम्हारे साया है
फ़ितरतको[6] बदलनेमें उसकी तुमने वर्षों मेहनत की है
अफ़कारकी[7] तरबीयतें की है, ऐमालकी[8] तरबीयत की है
तुम उसको दिलसे प्यारे हो, वह तुमको दिलसे प्यारा है
ईसाका है न मुहम्मदका, अब तो वह ख़ास तुम्हारा है,
दौलतका सुनेहरा जाल न हो, तस्बीहें[9] तो है, [10] जुन्नार तो है
अल्लाहकी वह रहमत न सही, लेकिन यह ख़ुदाकी मार तो है

---

१. शैतान, दैत्य, २. प्राणलेवा दुर्घटनामें, ३. व्यर्थ, नष्ट, ४. ईश्वरीय इच्छा, ५. आज्ञापालनमें, ६. स्वभावको, ७. चिन्ताओंके पालन-पोषणकी, ८. आचरणोंकी, ९. सुमिरन, १०. जनेऊ ।

घबराते क्यों हो ऐ भाई ! होगी हक़्क़-पोशी[1] भी होगी
इन्सान-परस्ती[2] भी होगी, ईमान-फ़रोशी[3] भी होगी
भटकेगी अगर नस्ले-आदम[4] यह सीधी राह दिखा देगा
मंज़िल पै जहन्नुमकी इक दिन कुल दुनियाको पहुँचा देगा
फूँका जो सूरे-जहाद[5] उसने, तुम मारे ख़ुशीके फूल गये
बचपन ही,से होशियार था यह-क्या जंगे-सलीबी[6] भूल गये
यह एक अकेला काफ़ी है, कुल दुनियाको बहका लेगा
तुमको घरमें बिठला देगा ख़ुद सारा काम उठा लेगा

## मजदूरकी बाँसुरीसे

### [ २३ में–से ८ शेर ]

मज़दूर हैं हम, मज़दूर हैं हम, मजबूर थे हम, मजबूर हैं हम
इन्सानियतके सीनेमें रिसता हुआ इक नासूर हैं हम
दौलतकी आँखोंका सुरमा बनता है हमारी हड्डीसे
मन्दिरके दिये भी जलते हैं मज़दूरकी पिघली चर्बीसे
हमसे बाज़ारकी रौनक़ है, हमसे चहरोंकी लाली है
जलता है हमारे दिलका दिया, दुनियाकी सभा उजियाली है
कपड़ेकी ज़रूरत ही क्या है, मज़दूरोंको, हैवानोंको
क्या बहस है सर्दी-गर्मीसे लोहेके बने इन्सानोंको
खाया मिट्टीके बरतनमें, सोये तो बिछौनेको तरसे
इक उम्र तरसते ही गुज़री बचपनमें खिलौनेको तरसे

---

१. उत्तराधिकारका उत्सव, २. मानव-पूजा, ३. ईमानकी बिक्री, ४. मानव-सन्तान ५. रणभेरी, ६. ईसाई धर्म-सम्बन्धी युद्ध ।

एहसासे-ख़ुदी मज़लूमोंका[१] अब चौंकके करवट लेता है
जो वक़्त कि आनेवाला है, दिल उसकी आहट लेता है
तूफ़ाँकी लहरें जाग उठीं, सोकर अपने गहवारेसे[२]
कुछ तिनके शोख़ी करते हैं, सैलाबके[३] सरकश धारेसे
यह अब्र[४] जो घिरकर आता है, गर आज नहीं कल बरसेगा
सब खेत हरे हो जायेंगे जब टूटके बादल बरसेगा

## जश्ने-आज़ादी[५]

[ २० मैं-से ११ ]

जिनकी ललचाई नज़र फ़ाक़ाकशीकी[६] मारी
जिनको रोटी है खिलौनेसे ज़ियादः प्यारी
हाँड़ियाँ शामसे औंधी हुई क़िस्मतकी तरह
चुप है दिल माँका चिराग़े-सरे-तुरबतकी[७] तरह
आग चूल्हेमें इक उम्मीद पै कजलाई हुई
जैसे सीनेमें तमन्ना कोई मुरझाई हुई
गर्दे-इफ़लाससे[८] धोये हुए चहरोंकी क़सम
जिनको काजल नहीं मिलता है उन आँखोंकी क़सम
क़सम उस जिस्मकी उर्यानी[९] ही चादर हो जिसे
क़सम उस माँगकी सेन्दुर न मयस्सर हो जिसे

---

१. अत्याचार पीड़ितोंकी आत्म-चेतना, २. पालनेसे, ३. बाढ़के, बहावके, ४. बादल, ५. स्वतन्त्रतादिवसका समारोह, ६. भूक, ७. क़ब्रपर जले दीपक की, ८. दरिद्रताकी धूलसे, ९. नग्नता।

रंगे-महफ़िलकी क़सम रौनके-मंज़रकी क़सम
जिसमें मिट्टीका दिया भी नहीं उस घरकी क़सम
क़सम उस शहरकी जिसमें कि दिवाली है आज
क़सम उस रातकी जो और भी काली है आज

कि यह मरघटका उजाला है, चिता है यह जश्न[1]
एक टूटे हुए ढोलककी सदा[2] है यह जश्न

ख़्वाबे-आज़ादीकी सद[3] हैफ़ यहताबीरें[4] ऐ दोस्त !
बन गई साँप यह टूटी हुई ज़ंजीर ऐ दोस्त !
टूटकर रेंगने फिरने लगी, लहराने लगी
डस गई रूहको[5] इस तरह कि नींद आने लगी

हुए आज़ाद तो क्या, गर्दिशे-दौराँ[6] है वही
हसरत ऐ सुबहे-वतन ! शामे-ग़रीबाँ[7] है वही

## नये अदबकी ज़बान

[ १५ में—से १२ ]

निगाहे-नाज़ हैराँ है, हमारे इस सलीक़ेपर
तबस्सुममें[8] भी ज़ख़्मोंको नुमायाँ[9] कर दिया हमने

---

१. उत्सव, २. आवाज़, ३. अत्यन्त दुःख, खेद, ४. स्वप्नका फल, ५. जानको, ६. दुखद युग, ७. परदेशकी शाम जो बहुत उदास होती है, ८. मुसकानमें, ९. प्रकट, ज़ाहिर ।

शबे-ग़मकी[1] सियाहीसे फ़सानः[2] लिखके हस्तीका[3]
तमन्नाए-सहरको[4] ज़ेबे-उनवाँ[5] कर दिया हमने
दिले-मज़दूरसे क़तरे निचोड़े ख़ूने-अरमाँके
और उनसे वक़्तके सीनेमें तूफ़ाँ कर दिया हमने
मुहब्बतने जो दी थी आग,उसका यूँ लिया मसरिफ़[6]
कि गर्म उससे तनूरे-क़ल्बे-दहक़ाँ[7] कर दिया हमने
हँसी अब दीदनी[8] है मुफ़लिसीके ज़ख़्मे-रुसवाकी[9]
जिसे तहज़ीबका चाकेगरेबाँ[10] कर दिया हमने
कुछ ऐसी शरह[11] की गुलगूँनए-रुख़्सारे-ताबाँकी[12]
कि इसको सुर्ख़िए-ख़ूने-शहीदाँ[13] कर दिया हमने
तबीयत शौक़की बदली, तसव्वुर अक़्लका बदला
इक ऐसा इन्क़िलाबे-फ़िक्रो-ईमाँ कर दिया हमने
हक़ाइक़के सनम[14] गिर-गिर पड़े, ताक़े तवह्हुमसे[15]
ख़िरदके[16] सारे बुतख़ानोंको वीराँ कर दिया हमने
नक़ाबें नोचकर हिर्सो-रियाके[17] ज़र्द चेहरोंसे
बिनाते-इस्मतो-तक़्वाको[18] उरियाँ[19] कर दिया हमने

---

१. दुःखरूपी रातकी, २. क़िस्सा, ३. ज़िन्दगीका, ४. प्रातःकालीन इच्छाओंको, भविष्यकी कल्पनाओंको, ५. शीर्षकोंकी शोभा, भड़कीले शीर्षक, ६. प्रयोजन, तात्पर्य, ७. किसानके हृदयरूपी तन्दूरको प्रज्वलित, ८. देखने योग्य, ९. मशहूर घावरूपी दरिद्रताकी, १०. सभ्यताका फटा हुआ गिरेबान, ११. व्याख्या, १२. पाउडर लगे हुए चमकदार मुखको, १३. शहीदोंके रक्तकी लाली, १४. यथार्थताकी मूर्तियाँ, १५. वहमके आलेसे, १६. अक़्लके, १७. लालच और पाखण्डके, १८. सतीत्व और संयमकी पुत्रियोंको, १९. नग्न ।

मुहब्बतके लहूसे भी ज़रासीमे-ख़ुदी[1] निकले
दिल उसका चीरकर दुनियाको हैराँ कर दियाहम ने
फ़ज़ाकी[2] ख़ामुशीसे ज़िन्दगीके राज़[3] उग़लवाये
ज़बाने-गुंगे-फ़ितरतको[4] ग़ज़ल-ख़्वाँ कर दिया हमने
'जमील' उस जामका सद्क़ः है, मस्ती उन दमाग़ोंकी
जिन्हें पैमानए-सहबाए-इरफ़ाँ[5] कर दिया हमने

**इश्क़िया-शाइरी**

उर्दू-शाइरीमें हुस्न-ओ-इश्क़के समुद्रमें जिस प्रवल वेगसे ज्वार-पर-ज्वार आते रहे हैं, वह कल्पनातीत है। जिस प्रकार समुद्रके जलसे प्यास नहीं वुझती, उसी प्रकार उर्दू-शाइरीके अध्ययनसे हुस्नो-इश्क़की जानकारी पूर्ण रूपेण नहीं होती, एक अतृप्ति-सी बनी रहती है। केवल अध्ययनसे हुस्नो-इश्क़की ज्ञान-पिपासा शान्त करनेकी लालसा मृगमरीचिकाके समान है। वास्तविक ज्ञानामृत तो स्वानुभव-रत्नाकरके मंथनसे प्राप्त होता है।

यह इश्क़ नहीं आसाँ इतना ही समझ लीजे
इक आगका दरिया है और डूबके जाना है
—जिगर मुरादाबादी

इस आगके दरियामें-से उर्दूके अनगिनत शाइरोंमें-से कितने डूबकर निकले हैं और जिनमें डूबकर निकलनेकी क्षमता नहीं थी, उनमें-से कितनोंने किनारेपर खड़े होकर ही सही अपनेको झुलसाया है? जब इस प्रश्न रूपी पानीके छींटे आशिक़ बने हुए शाइरोंके मुँहपर पड़ते हैं तो उनका मेकप धुल-पुँछ जाता है और वास्तविकता उजागर हो जाती है कि ये तो केवल हुस्नो-इश्क़का अभिनय करनेवाले स्वाँगी (ऐक्टर्स) थे।

---

१. अहम्के कीटाणु, २. वातावरणकी, ३. भेद, ४. प्रकृतिकी मौन वाणीको, ५. खुदाको जाननेकी शराबका पात्र।

उर्दूके प्राचीन शाइरों—मीर, दर्द, सौदा, क़ायम, तावाँ, यक़ीन, मुसहफ़ी, आतिश, नासिख, जौक़, मोमिन, ग़ालिब, दाग़, तस्लीम, जलाल, अमीर मीनाई, शेफ़्ता आदिका तो अपने दरियाए-कलामसे हुस्नो-इश्क़के समुद्रको परिपूर्ण करना ही था। क्योंकि यही उर्दू-शाइरीके प्राण थे। ये न होते तो उर्दू-शाइरीका समुद्र रेगिस्तान हो गया होता। लेकिन आश्चर्य्य तो उन ऐरे-ग़ैरे-नत्थू खैरोंका कलाम देखकर होता है, जिन्होंने ज़िन्दगीमें और कोई करने योग्य कार्य भले ही न किया, परन्तु तफ़रीहन हुस्नो-इश्क़के नाले ज़रूर वहाये। वे अबोध सुकुमार भी जो नहीं जानते थे कि हुस्नो-इश्क़ किस बलाका नाम है। उर्दू पढ़ते हुए शाइरीका ज्ञान प्राप्त करते हुए परम्परानुसार किसीके तीरे-नज़रसे घायल होने, कूचए-इश्क़में आवारा-गर्दी करने, हिज्रे-यारमें आहें भरने, टसुवे बहाने और वस्ले-यारकी दिन-रात तमन्ना रखने आदिके मज़मून बाँधनेको मजबूर होते थे। यह सब अस्वाभाविकता एवं कृत्रिमता उर्दूमें फ़ारसी-शाइरीके अनुकरणसे आई।

इसी नक़लची और बनावटपनसे ऊबकर हाली-ओ-आज़ादको ग़ज़लके विरोधमें आन्दोलन चलाना पड़ा। परिणाम-स्वरूप शाइरीमें उत्तरोत्तर स्वाभाविकता एवं पवित्रता आती जा रही है। प्राचीन ग़ज़लके माशूक़—ज़ालिम, बेवफ़ा, बदज़बान, संगदिल, हरजाईके एवज़ दयावती, सदाचारिणी, मिष्ट-भाषी, कोमलहृदया और सुशीला प्रेयसीका उल्लेख होने लगा है। बाज़ारी माशूक़को विस्मरण करके 'हसरत' मोहानीने सुशीला कुमारी युवतीको अपनी गज़लकी महबूबा ( प्रेयसी ) चुना। शाद अज़ीमाबादी, यगाना चंगेज़ी, असग़र गोण्डवी, सीमाब अकबराबादी, जिगर मुरादाबादी, असर लखनवी, रविश सिद्दीक़ी आदिने भी पुरानी डगर छोड़कर पवित्र प्रेम-मार्गपर चलनेका प्रयास किया है। उनके यहाँ पाक इश्क़के काफ़ी नमूने मिलते हैं, साथ ही पुरानी रिवायती शाइरी भी यत्र-तत्र झाँकती दिखाई देती है।

सबसे प्रथम प्रेयसीका स्पष्ट और पवित्र उल्लेख करनेमें 'साग़र' निज़ामी और 'अख़्तर' शीरानी अग्रगण्य हैं। इनके यहाँ किसी बाज़ारी, आस्मानी और कल्पित माशूक़का गुज़र नहीं। इनकी प्रिया सरोहन नारी है। जिस कुमारी युवतीसे प्रेम किया, उसके निश्छल प्रेम, शील-स्वभाव आदिका स्वानुभूत चित्रण अत्यन्त सुरुचिपूर्ण एवं स्वाभाविक किया है।

साग़र और अख़्तरके बनाये प्रेम-उद्यानमें जमीलने अपनी सुरुचिपूर्ण कौशलतासे नये-नये गुल-बूटे खिलाये हैं। प्रारम्भमें मासूम बच्चे-बच्चियाँ एक साथ खेलते हैं, लड़ते हैं, झगड़ते है, हँसते हैं, रूठते हैं, चिड़ाते हैं, मनाते हैं। अनवर कहता है—"सफ़िया! तू मुझे अपनी गुड़िया दिखा दे वर्ना....।"

"वर्ना क्या? सफ़िया बात काटती हुई जवाब देती है—"मेरी गुड़िया पर्दा करती है, वह किसी मर्दुवेके सामने नहीं होती।"

"मैं अभी मर्दुवा कहाँ, अभी तो बच्चा हूँ। बच्चोंसे पर्दा थोड़े ही किया जाता है।"

"ऐ वाह! बड़ा आया बच्चा बनकर। ऊँट-का-ऊँट नज़र आता है, और कहता है मैं तो अभी बच्चा हूँ" (नक़ल उतारती है)।

"अच्छा जी, ९–१० बरसका लड़का ऊँट होता है तो तू भी ऊँटनी हुई।"

"खबरदार जो मुझे ऊँटनी कहा! ऊँटनी होंगी तेरी होती-सोती।"

"ऊँटनी तू-तू-तू।"

"ऊँट तू-तू-तू।"

### फिर दूसरे रोज़

"सफ़िया! देख मैं तेरे लिए क्या लाया हूँ।"

"जाओ जी हम नहीं देखते, हमारी तेरी कुट्टी।"

"किस बात पर"

"तूने मेरी गुड़ियाका मुँह जबरन क्यों देखा?"

"तूने मेरे होते-सोतोंको ऊँटनी क्यों कहा?"

"अच्छा अब नहीं कहूँगा।"

"मैं भी अब तेरी गुड़ियाका मुँह जबरन नहीं देखूँगा। ले अब तो खा"

"नहीं मैं तेरी रेवड़ी नहीं खाऊँगी ?"

"क्यों नहीं खायगी।"

"तूने उस दिन अमरूद क्यों नहीं खाया ?"

"वह तो कुतरा हुआ था।"

"मेरा ही तो कुतरा हुआ था।"

"तूने यह कब क़हा था ?"

कुछ दिन बाद

"सफ़िया ! अब तुझे क्या हो गया है, बहुत कम घरसे निकलती है। तेरी बाट देखते-देखते इतना ग़ुस्सा आता है कि क्या कहूँ ?"

"और तू ही कब दिखाई देता है।"

"मैं कैसे दिखाई दूँ ? मोतीहारी स्कूलमें दाखिला करा दिया है। इतवारको छुट्टी होती है तो तेरे यहाँ आता हूँ। घण्टों चक्कर मारता हूँ, मगर तू दिखाई ही नहीं देती।"

"कैसे दिखाई दूँ ? अम्मी कहती है, तू सयानी हो गई हैं, लड़कोंके साथ न खेला कर, न बात किया कर।"

"खेलनेकी तो अब मुझे भी फ़ुर्सत नहीं, मगर अमरूदके बाग़ीचेमें बातें करनेमें क्या बिगड़ता है ?"

"नहीं जी, अब हमें तुमसे शर्म आती है, आँख नहीं मिलाई जाती। अपने झरोखेसे तुझे पतंग उड़ाते देखती रहती हूँ, सामने आना चाहने पर पसीने-पसीने हो जाती हूँ।"

"यही हाल मेरा हो गया है सफ़िया ! अब मैं माँसे पहलेकी तरह नहीं कह पाता कि सफ़ियाके यहाँ खेलने जा रहा हूँ। अब तो दूसरे-दूसरे बहाने बनाकर घरसे निकलता हूँ और तेरी गलीके चक्कर काटता रहता हूँ। अच्छा तू मेरा एक क़हा मानेगी ?"

'क्या ?'

'तूने अपनी गुड़ियाकी शादी मेरी बहनके गुड्डेसे की थी याद है न ?'

'हाँ याद है ।'

'तू मुझसे शादी कर ले'

'चल बेशरम कहींका'

और सफ़िया पलक मारते ही घरमें भाग जाती है ।

बिना किसी इच्छा या प्रयासके अनजानेमें प्रेमका अंकुर फूट निकलता है, दिलमें कुछ चपचपाहट-सी और टीस-सी मालूम देने लगती है, परन्तु वास्तविक रोगका ज्ञान न होनेसे जो उस समय मनोदशा होती है, उसका उल्लेख जमीलने यूँ किया है—

## कहते हैं इसीको क्या मुहब्बत ?

[ १५ में-से ८ बन्द ]

आइनेमें देखो अपनी सूरत
नज़रोंमें झिझक, ज़बाँमें लुकनत[1]
पिन्दारमें बेख़ुदीकी[2] हालत
कहते हैं इसीको क्या मुहब्बत ?

चितवनके झुकावमें इशारा
आँखोंमें है आज दिल तुम्हारा
ख़ामोशीमें गुफ़्तगूकी शिद्दत[3]
कहते हैं इसीको क्या मुहब्बत ?

---

१. तुतलाहट, २. ध्यानमें आत्मलीनताकी स्थिति, ३. वार्त्तालापकी इच्छा ।

रूठी - रूठी अदामें शोख़ी
शोख़ीमें हया, हयामें शोख़ी
मासूम नज़रमें[1] इक शरारत
कहते हैं इसीको क्या मुहब्बत ?

फ़ित्ने चश्मे[2]-फ़सूँ असरमें[3]
झेंपी—झेंपी हुई नज़रोंमें
सहमी-सहमी-सी इक जसारत[4]
कहते हैं इसीको क्या मुहब्बत ?

हम पूछ रहे हैं, तुमसे क्यों जी !
शर्माई हुई-सी एक शोख़ी
घबराई हुई-सी इक मतानत[5]
कहते हैं इसीको क्या मुहब्बत ?

मतवाली, नशीली, अँखड़ियोंसे
आँखोंकी हसीन खिड़कियोंसे
फिर झाँक रही है इक हक़ीक़त[6]
कहते हैं इसीको क्या मुहब्बत ?

---

१. निष्पाप चितवनमें, २. नटखटपन, शरारत, ३. जादूभरी आँखोंके प्रभावमें, ४. हिम्मत, ५. संजीदगी, ६. वास्तविकता ।

सीनेमें इक आग-सी लगी है
इक हूक-सी दिलमें उठ रही है
इक दर्द है और उसमें लज़्ज़त
कहते हैं इसीको क्या मुहब्बत ?

होंटों पै घुटी-घुटी-सी आहें
बहकी-बहकी हुई निगाहें
खोई-खोई हुई तबीअ़त
कहते हैं इसीको क्या मुहब्बत ?

यही सीनेकी आग और ओठोंकी घुटी-घुटी-सी आहें बढ़ती हैं तो 'जमील' उसे यूँ व्यक्त करते हैं—

## कहानी

[ २६ में-से १७ ]

है अभी चश्मे-तसव्वुरमें[1] वह घरका आँगन
और उस आँगनका वह इक छोटी-सी दुनिया होना
वह लड़कपनके घरौंदेमें जवानीका खेल
और उस खेलका इक फ़ित्नए-फ़र्दा[2] होना
इश्क़े-मासूमके[3] वह ग़ैरशऊरी[4] इक़दाम[5]
यानी रुख़सारों पै रुख़सारोंका[6] रक्खा होना
चाँदनी रातमें देखा है, इन्हीं तारोंने
मेरे शाने पै[7] तेरी ज़ुल्फ़का बिखरा होना

---

१. चिन्तन दृष्टिमें, २. भविष्यके लिए परेशानीका कारण, ३. भोलेपनके प्रेमके, ४. अनजाने, ५. काम, ६. कपोलोंका, ७. कन्धेपर।

वह तेरे हुस्नकी बे-मायगिए-नाज़ो-अदा[1]
वह मेरे इश्क़का नादान तमन्ना होना
इश्क़को मेरे न आये थे जुनूँके अन्दाज़[2]
हुस्नने तेरे न सीखा था ख़ुद-आरा[3] होना
दफ़अ़तन कुलज़मे-जज़्बातमें तूफ़ाने-शबाब[4]
दफ़अ़तन किश्तिए-दिलका तहो-बाला[5] होना
वह तेरे गुलशने-तिफ़्लीमें[6] जवानीकी नसीम[7]
मेरी आँखोंका वह गुलचीने-तमन्ना[8] होना
वह मुझे पहले-पहल दर्दे-जिगरका एहसास[9]
और तिरा अपनी हक़ीक़तसे शनासा[10] होना
तेरे हर नाज़का पर्देमें हयाके छुपना
मेरे हर शौक़का गुस्ताख़ तक़ाज़ा होना
वह मेरे इश्क़के चर्चे, वह बुज़ुर्गोंका अताब[11]
वह तेरा पर्देमें छुपना, मुझे सौदा[12] होना
वह तेरा ग़ैरकी आग़ोशमें[13] फेंका जाना
मेरी उम्मीदोंकी दुनियामें अँधेरा होना

---

१. अकृत्रिम हाव-भाव, अनजानी अदाएँ, २. प्रेमोन्मादके ढंग, ३. बनना-सँवरना, ४. यौवनका तूफ़ान भावोंके समुद्रमें अचानक आया, ५. हृदयनौकाका उबरना-डूबना प्रारम्भ हो गया, ६. बाल उद्यानमें, ७. यौवनकी वायु, ८. अभिलाषाओंका गुलचीं, ९. ज्ञान, भान, १०. वास्तविकतासे परिचित, ११. क्रोध, नाराज़गी, १२. उन्माद, १३. दूसरेकी गोदमें, अन्यसे शादी कर दिया जाना।

वह मिरे शौक़की मैयात पै वफ़ाका मातम
वह मुहब्बतका अज़ादारे-तमन्ना[1] होना
उफ़! तिरा फूलोंमें तुलना वह सुहागिन बनकर
मेरे गुलज़ारे-तख़य्युलका वह सेहरा[2] होना
मेरा हालातकी मौजों पै वह बहते जाना
तेरा वह फ़र्ज़की ज़ंजीरोंमें जकड़ा होना
उस तरफ़ हुस्ने-जहाँ-ताबकी[3] ढलती हुई धूप
इस तरफ़ शामे-जवानीका धुँदलका होना

हो चली सुब्ह फ़साना है क़रीबे-तक्मील
घुल चली शमअ़ बस अब है उसे ठंडा होना

फिर यही इश्क़ शनैः-शनैः रगो-पैमें प्रवाहित होने लगता है। दिनकी भूख और रातोंकी नींद उड़ा देता है। श्वास-श्वासमें बेकली-सी मालूम होने लगती है। रोम-रोममें आग-सी सुलगने लगती है। बक़ौले-मीर—

कुछ नहीं सूझता हमें उस बिन
शौक़ने हमको बद्‌हवास किया

प्रत्येक क्षण उसी प्रेयसीका ध्यान बना रहता है। दिल यही चाहता रहता है—

बैठे रहें तसव्वुरे-जानाँ किये हुए

जितनी-जितनी मिलनकी चाहत बढ़ती जाती है, उतनी-उतनी प्रेयसीके मिलनकी सम्भावनाएँ कम होती चली जाती हैं। आयु-वृद्धिके साथ-साथ

---

१. अभिलाषाओंका शोकाकुल, २. विचाररूपी उद्यानसे बनाया गया फूलोंका सेहरा, ३. यौवनकी।

पारिवारिक मर्यादाओंके और सामाजिक रीति-रिवाजोंके बन्धन उत्तरोत्तर सख्त होते चले जाते हैं। किशोर होनेपर बाल्यावस्थाके वे उन्मुक्त खेल-कूद बन्द हो जाते हैं। वे गुड्डा-गुड़ियोंके विवाह, वे बालू रेतके घर, वह ईंटोंकी रेल, वे आँख-मिचौनीके खेल, न जाने कहाँ तिरोहित हो जाते हैं। युवा होनेपर किशोरावस्थाकी—अपनी-अपनी छतोंसे पतंगके पेच लड़ाना, पनघटपर किसीका पानी भरना और किसीका दाँतुन करना, तालावके किनारे कदमके पेड़पर किसीका बाँसरी बजाना और किसीका गाय-बैलोंको पानी पिलानेके बहाने आना। किसीका आमोंकी बगियामें सहेलियोंके साथ झूलना और किसीका झाड़ियोंमें छिपे-छिपे देखना, राहमें आते-जाते किसीका मुसकराना, किसीका शर्मसे आँखें झुकाये निकल जाना—

मुझे जिनके दीदकी आस थी, वे मिले तो राह में यूँ मिले
मैं नज़र उठाके तड़प गया, वे नज़र झुकाके निकल गये

—अयाज़ बँगलौरी

रास्ता रोककर किसीका बात करनेको दिल चाहना और किसीका 'हटो भी बेशरम कहीं के' कहकर हिरनीकी तरह ग़ायब हो जाना—समस्त रंगीनियाँ स्वप्नवत् प्रतीत होने लगती हैं। प्रेयसी पारिवारिक प्रथाके अनुसार पर्दा करनेको बाध्य होती है। न वह अपने प्रेमीके पास आ सकती है और न उसकी चाहतका जवाब दे सकती है। उसकी इस असहाय स्थितिको समझते हुए 'जमील' कहते हैं—

बचपनके घरोन्देमें बरसों दोनोंकी तमन्ना खेली हैं
हम-तुम राधा! वे लकड़ी हैं जो धीरे-धीरे सुलगी हैं

'जमील' प्रेयसीकी इन मजबूरियोंके कारण पुराने शाइरोंकी तरह उसे बेवफ़ा, जफ़ाजू, ज़ालिम, बदगुमान, खाना-खराब, रहज़ने-ईमान, बदख्वाह, बेनियाज़, वादा-फ़रामोश और हरजाई नहीं समझते—

क़ायम—— क्यों न रोऊँ मैं देख ख़न्दए-गुल[1]
कि हँसे था वह बेवफ़ा भी युँ ही

दर्द— तुझमें कुछ देखा न हमने जुज़ जफ़ा[2]
पर वह क्या कुछ है कि जी को भा गया

ताबाँ— रखता था एक जी सो तेरे ग़ममें जा चुका
आख़िर तू मुझको ख़ाकमें ज़ालिम ! मिला चुका

हसरत लखनवी—किस-किस तरहसे हमने किया अपना जी निसार[3]
लेकिन गईं न दिलसे तेरे बदगुमानियाँ

मुसहफ़ी— मैं तेरे वास्ते सर पटकूँ हूँ दीवारोंसे
चैन क़िस तरह तुझे ख़ाना-ख़राब आता है

ज़ौक़— झूठ ही जानो कलाम उस रहज़ने-ईमानका[4]
पहनकर जामा भी वह आये अगर क़ुरआनका

मोमिन—सुनके मेरी मर्ग[5] बोले—"मर गया अच्छा हुआ
क्या बुरा लगता था, जिस दम सामने आजाय था"

ग़ालिब—— हम भी तस्लीमकी[6] ख़ू[7] डालेंगे
बे-नियाज़ी[8] तेरी आदत ही सही

---

१. फूलकी मुसकान, २. अत्याचारके अतिरिक्त, जफ़ाके सिवा, ३. न्योच्छावर, क़ुर्बान, ४. ईमान लूटनेवालेका, ५. मृत्युकी खबर, ६. सब्रकी, ७. आदत, ८. उपेक्षाभाव।

दाग़— वफ़ा करेंगे, निबाहेंगे, बातें मानेंगे
तुम्हें भी याद है कुछ यह कलाम किसका था ?

अमीर— नामे[1] वह बारी-बारी उश्शाक़के[2] पढ़ेंगे
उजलतमें[3] कुछ न होगा, नम्बर लगे हुए हैं

और न 'ज़मील' प्रेम-अग्निके उत्तापसे घबराकर प्रियाके प्रथम दर्शन पर ही 'सोज़' की तरह पछताते हैं—

मैं काश उस वक़्त आँखें मूँद लेता
यह मेरा देखना मुझको बला था

अपितु जमील तो प्रेमको वरदान समझते हैं और इस देनके लिए अपनी प्रियाका मुक्त कण्ठसे आभार मानते हैं—

पड़ा था सूना सितार दिलका, हुई अचानक यह जाग तुमसे
जो ज़िन्दगी रोग बन चुकी थी, वह बन गई आज राग तुमसे
यह मेरे जीवनकी रागनी क्या, प्रेमकी यह मीठी बाँसुरी क्या
यह दान तुमने दिया है सजनी! मिला है मनको यह राग तुमसे

'जमील' का विश्वास है कि प्रेम दिलोंकी बस्ती उजाड़ता नहीं, गुलो-गुलज़ार करता है। वह नरक-तुल्य जीवनको स्वर्ग-सम बनाता है। कामुकतामें पवित्रता लाता है। हानि-लाभके झमेलोंसे निकालकर निस्पृही बनाता है। अपनी प्रियासे जमील कहते हैं—

---

१. पत्र, २. आशिक़ोंके, ३. जल्दीमें।

## ऐतिराफ़[1]
### [ १५ मैं-से ८ शेर ]

बिहिश्ते-रंगो-बू को दिलमें मेहमाँ कर दिया तुमने
ग़मे-इम्रोज़को[2] ख़्वाबे-परीशाँ[3] कर दिया तुमने
जहाने-कैफ़ो-कमके मरहलोंमें[4] इक तबस्सुमसे[5]
ख़िरदको[6] बे-नियाज़े-सूदो-नुक़्साँ[7] कर दिया तुमने
मुहब्बतकी निगाहोंने उगाया रेतमें सब्ज़ः[8]
हमारा दिल बयाबाँ था, ख़यावाँ[9] कर दिया तुमने
किनारे-आज़ूमें[10] फूल बरसाकर तबस्सुमके
मेरे ज़ौक़े-सुख़नको गुल-बदामाँ कर दिया तुमने
नशीली मदभरी आँखोंकी वह छलकी हुई बूँदें
मिज़ाजे-आबो-गिलमें[11] जिन्से-[12]तूफ़ाँ कर दिया तुमने
जवानीकी हविसको[13] बेकली बख़्शी मुहब्बतकी
मुहब्बतको तरक़्क़ी देके ईमाँ कर दिया तुमने
अदा हो शुक्रिया क्या इस नज़रकी दिलनवाज़ीका[14]
कि जिसको मज़हरीके दिलमें पैकाँ[15] कर दिया तुमने
रबाबे-दिलमें[16] मेरे, फ़ाक़ाकश दुनियाके शेवनके[17]
उसे अपनी मुहब्बतमें ग़ज़लख़्वाँ कर दिया तुमने

---

१. स्वीकृति, २. वर्तमान दुःखोंको, ३. ऐसा स्वप्न जिसका स्वप्न-फल न जाना जा सके, ४. संसारकी कैसी और कितनी जैसी समस्याओंको, ५. मुसकानसे, ६. अक़्लको, ७. लाभ-हानिसे उपेक्षित, ८. हरियाली, ९. उद्यानका मुख्य भाग, १०. अभिलाषारूपी नदीके किनारे, ११. जल-मिट्टीके मिज़ाजमें, १२. कामवासनाका तूफ़ान, १३. तृष्णाको, १४. दिलमोह लेनेका, सहृदयताका, १५. तीरकी नोंक, १६. हृदय-वीणामें, १७. नाले।

जहाँ प्यार होगा, वहाँ मन-मुटाव भी होगा। रूठना, मचलना, मनाना भी प्यारके आवश्यक अंग हैं। अपनोंसे रूठा जाता है, अपने ही मनाते हैं। न कभी कोई परायोंसे रूठता है, न कभी पराये मनाते हैं। इस मान-मनौवलमें अकथनीय खटास-मिठास होती है। मानिनी प्रियाके मुखपर जो जलाल और उसके अंग-अंगमें जो बाँकपन आता है, उसे देखनेको प्रेमी कभी-कभी तो इतना उत्सुक हो उठता है कि उसके रूठने और क्रुद्ध करनेके लिए स्वयं कोई-न-कोई हरकत कर बैठता है—

सुनते हैं उसको छेड़-छेड़के हम
किस मज़ेसे अताबकी बातें

—ज़ौक़

उनको आता है प्यार पै ग़ुस्सा
हमको ग़ुस्से पै प्यार आता है,

—ग़ालिब

ऐ जान! फिर कहो इस अदासे
"मैं आज निज़ामसे ख़फ़ा हूँ"

ख़ता साबित करेंगे और उनको ख़ूब छेड़ेंगे
सुना है उनको ग़ुस्सेमें लिपट जानेकी आदत है

—अज्ञात

और 'असर' लखनवी तो स्वयं अपनी रूठी हुई प्रियासे ही मनानेका उपाय पूछ रहे हैं—

इक बात भला पूछूँ तुम कैसे मनाओगे?
जैसे कोई रूठा हो और तुमको मनाना हो

मान-मनौवलमें क्या आनन्द है, हिन्दी कवि बिहारीसे सुनिए—

मनु न मनावन कौं करै, देतु रुठाइ-रुठाइ ।
कौतुक लाग्यौ प्यौ प्रिया खिझहूँ रिझवति जाइ[1] ॥४५४॥

मार्‌यौ मनुहारिनु भरी, गार्‌यौ खरी मिठाहिं
वाकौ अति अनखाहटौ, मुसकाहट-बिनु नाहिं[2] ॥४६८॥

मतिरामकी नायिकाकी तो मनाने या रूठनेकी साध पूरी ही नहीं होती—

सपने हूँ मन भाँवतो करत नहीं अपराध ।
मेरे मनमें हू सखी, रही मानकी साध ॥

'जमील' अपनी प्रियाको छेड़कर उसे क्रुद्ध नहीं करते और न उसे रूठी देखकर आनन्दित होते हैं। वे तो किसी तरह अवसर पाकर उसके पास पहुँचते हैं और कलेजेको थामकर बहुत शिष्टता पूर्वक पूछते हैं—

---

१. रूठी हुई प्रेयसीको वास्तवमें प्रेमी मनाना नहीं चाहता। वह मननेपर आती भी है तो फिर किसी हरकत या बातसे रुठा-रुठा देता है। क्योंकि प्रेमीको प्रेयसीके रूठने और खीझनेकी अदाओंमें जो आनन्द आ रहा है, इसी मनोविनोदके लिए उसे छेड़-छेड़कर गुस्सा दिला रहा है।

२. प्रियतमाकी मार भी मन-हरण करनेवाली है, और उसकी खरी बातें, या गालियाँ भी बहुत मीठी मालूम होती हैं। उसका रोष-पूर्ण बोलना भी मुसकान-रहित नहीं होता।

## यह क्या हुआ तुमको
## [ १२ में-से ७ बन्द ]

यह क्या हुआ 'उज़रा' मिरी—यह क्या हुआ तुमको ?
नज़र उठाओ ख़ुदारा[1]—यह क्या हुआ तुमको ?
यह क्यों बदल गई दुनिया—यह क्या हुआ तुमको ?
मेरी नज़रसे अब आने लगी हया तुमको
यह क्या हुआ तुमको ?

तुम्हारी आँखसे बेगानगी[2] टपकती है,
नियाज़ो-नाज़से[3] इक बेदिली टपकती है,
रुख़[4] इस तरफ़ है मगर बेरुख़ी[5] टपकती है,
वह क्या करे कि जो पाकर न पा सका तुमको
यह क्या हुआ तुमको ?

वफ़ाके रंगे-तबीअ़तसे क्या गिला[6] है तुम्हें ?
अदाए-रस्मे-मुहब्बतसे क्या गिला है तुम्हें ?
नियाज़े-इश्क़की जुरअतसे क्या गिला है तुम्हें ?
निगाहे-शौक़ने[7] क्या कर दिया ख़फ़ा तुमको ?
यह क्या हुआ तुमको ?

---

१. ख़ुदाके लिए, २. परायापन, ३. परिचयमें, व्यवहारमें, ४. मुँह, ५. उपेक्षा, नाराज़गी, ६. शिकायत, ७. चाहतकी नज़रने।

यह सच है बढ़ गई हदसे हमारी बेताबी
बिखेरे जाती है, सज्दे हमारी बेताबी
तुम्हारे ज़ब्त पै सद्क़े हमारी बेताबी
इसीने कर दिया बेगानए-अदा तुमको
यह क्या हुआ तुमको ?

ज़बाने-शौक़ो-लबे-मुद्दआसे बरहम[१] हो,
मेरी निगाहसे अपनी अदासे बरहम हो,
सरक गया है, जो आँचल हवासे बरहम हो,
किसीने यूँ नहीं देखा कभी ख़फ़ा तुमको
यह क्या हुआ तुमको ?

यह क्या अ़ताब[२] है शुक्रे-जफ़ा तो करने दो,
ख़लूसे-इश्क़के सज्दे अदा तो करने दो,
गुनाहगारे-वफ़ाको वफ़ा तो करने दो,
पराये दर्दका एहसास दे ख़ुदा तुमको
यह क्या हुआ तुमको ?

लबों पै मुहर सही, अब्रुओंसे[३] काम तो लो,
मैं जा रहा हूँ मेरा आख़िरी सलाम तो लो,
इन आँसुओंमें जो ग़लैताँ[४] है वह पयाम[५] तो लो,
मुसाफ़िरोंसे कुदूरत[६] नहीं रवा[७] तुमको
यह क्या हुआ तुमको ?

---

१. अभिप्राय कहनेसे रुष्ट, २. क्रोध, ३. भवोंसे, ४. मिला हुआ, घुला हुआ, ५. सन्देश, ६. मनमें मैल ७. उचित।

जमील स्वयं साधारण स्थितिके परिवारमें जन्में हैं। उन्होंने अपनी प्रिया भी ऐसे ही परिवारकी चुनी है। उसे गाँवके रँगरेज़-द्वारा रँगी हुई धानी साड़ी पहने हुए देखकर वे खिल उठते हैं—

नहा-निखरकर हमारी राधाने आज पहनी है धानी सारी

इससे अधिक साज-शृङ्गारकी वे कल्पना भी नहीं करते, परन्तु प्रेम-सम्बन्ध-विच्छेदकी सम्भावनासे जब उनकी प्रिया न कपड़े बदलती है, न बाल सँवारती है, जोगन-सी दिखाई देती है, तो उनका प्रेमी हृदय रो उठता है—

मैं तेरी मज़लूमियोंके[1] क़ुर्बां[2], यह बाल उलझे यह मैली सारी
बुरा हो कम्बख़्त जज़्बाते-दिलका[3] कि तुमको जोगन बना दिया है

प्रेम-विच्छेद-सम्भावनाकी उड़ती हुई खबरसे न तो जमील बदहवास होते हैं, न आपा खोते हैं, न आत्म-हत्या करनेपर उतारू होते हैं और न अपनी प्रियाका गिला-शिकवा करते हैं, न उसकी नीयतपर हमला करते हुए उसे बेवफ़ा कहते हैं; अपितु उसके पास जाकर उसे सान्त्वना देते हैं, उसके ज़ख्मी दिलपर समवेदनाके मरहमका फ़ाहा लगाते हैं और उसे धैर्य्यसे काम लेनेकी सलाह देते हैं—

तुम्हें क़सम है मेरी मुहब्बतकी, फूटकर इस तरह न रोओ
मैं[4] सद्क़े तुम अपने आँसुओंको समझलो क़तरा मेरे लहूका
बनाये थे शौक़के घरोन्दे, तिलिस्म बाँधा था रंगो-बूका
लगाई दुनियाने ऐसी ठोकर उचट गया ख़्वाब आर्ज़ूका[5]

---

१. अत्याचार सहनेपर, २. न्योच्छावर, ३. दिलकी भावनाओंका, ४. न्योच्छावर, ५. इच्छा-स्वप्न।

न तेरे आँचलमें दाग़ कोई न इस गरेबाँमें चाक[1] कोई
ख़िरदके[2] मारे हुए हैं दोनों, न तू दिवानी न, मैं दिवाना
अभी तो शोले[3] उठे नहीं हैं, अभी तो है आँच धीमी-धीमी
अभीसे दामन समेटती हो तो लोगी क्या सोज़े-आशिक़ाना[4]

पुरातन शाइरोंके माशूक़ अपने आशिक़ोंको रोते देखकर आनन्दित होते थे। बक़ौले-साइल देहलवी—

सितमगारीकी तालीमें उन्हें दी हैं यह कह-कहकर—
"कि रोते जिस किसीको देख लेना, मुसकरा देना"

लेकिन जमीलकी प्रिया उनके दुःखमें समभागिनी है। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी झड़ी लग जाती है। जमील फ़र्माते हैं—

ऐ ज़िन्दगी! अदाकर क़ीमत उन आँसुओंकी
जो डबडबा रहे हैं, उस चश्मे-नर्गिसीमें

भूला है न भूलेगा तेरा पनघट पै पहुँचकर यह कहना—
"क्या प्यास लगेगी उसको सजन! जो आँसू पीकर जीती है"

जमीलकी प्रिया आखिर खान्दानी इज़्ज़तके नामपर, माँ-बापकी ज़िदपर और सामाजिक प्रथाकी बेदीपर बलि दे दी जाती है—

ईदगाहे-रस्मे-दैरीनापै क़ुर्बानी है आज
और कटानेको गला हम बेज़बाँ तैयार हैं

—अज्ञात

---

१. गरेबानमें कोई फटा हुआ स्थान, २. अक़्लके (सामाजिक बन्धनों और उन समाजके ठेकेदारोंसे आशय है, जो व्यर्थमें अडंगा लगाते हैं), ३. अग्नि-ज्वाला, ४. प्रेमका-उत्ताप।

वारात क्या थी, जमीलकी उजड़ी जवानीका जनाज़ा थी। वक़ौले शख़्से—

उसे बरात भी कहते थे, आमलोग मगर—
हमारी उजड़ी जवानीका वह जनाज़ा था

जमीलकी प्रिया डोलेमें बैठकर ससुराल चली तो जमीलने न कोई वावेला किया, न आँसू बहाये, न आहो-फ़ुग़ाँ की। केवल अपनी प्रियासे मौक़ा निकालकर इतना कहा—

चली हो, लेकिन यह याद रक्खो कि इसमें कोई कमी न करना
हमारा ख़ूने-जिगर भी माँगे अगर तुम्हारा सुहाग तुमसे
तुम्हारे बसके नहीं है राधा! जमीलकी रूहके यह शोले
फ़िज़ूल आँसू बहा रही हो, न बुझ सकेगी यह आग तुमसे

प्रियाके ससुराल चले जानेपर 'जमील'ने अपने मनको इस तरह समझानेका प्रयास किया—

'इसे भूल जा, भुला दे'
[ १ में-से २ ]

यह समझ ले ख़्वाब[१] देखा था निशाते ज़िन्दगीका[२]
यह समझ ले वह मुहब्बत नहीं, खेल था किसीका
कि भरा था इक खिलाड़ीने स्वाँग आशिक़ीका
हुआ ख़त्म जब तमाशा, तो न पर्दा क्यों गिरा दे
इसे भूल जा, भुला दे

---

१. स्वप्न, २. सुखी जीवनका।

जो चुभे हैं, दिलमें काँटे तो खटकके क्या करेंगे
जो टपक रहे हैं आँसू तो टपकके क्या करेंगे
जो लपक रहे हैं शोले[1], तो लपकके क्या करेंगे
हो ख़ुदी[2] ज़रा भी तुझमें तो उस आगको बुझा दे
उसे भूल जा, भुला दे।

जमीलने हरचन्द कहा कि सबक़े-इश्क़को यहीं खत्म कर दिया जाये और फ़सानए-जवानीका एक वरक़ भी सावुतो-सालिम न छोड़ा जाए। मगर बक़ौले-शख़्से—

मक्तवे-इश्क़का[3] दुनियामें निराला है उसूल[4]
उसको छुट्टी न मिली, जिसको सबक़ याद हुआ।

जमील कलकत्ते चले गये। आजीविका-उपार्जनमें व्यस्त हो गये, फिर भी प्रियाकी याद आती रही। फ़र्माया है—

दुनियाकी मआशी[5] फ़िक्रोंमें याद उस दीवानी उज़राकी
इक बिजली थी जो रह-रहकर तारीक घटामें चमका की

किसीकी याद इस तरहसे आई है, आज मेरे अँधेरे दिलमें
कि जैसे उजड़ी सरामें आकर दिया मुसाफ़िर जला रहा हो

मैं क्या कहूँ कि क्या थी उज़रा तेरी मुहब्बत
इक नख़्ल[6] मिल गया था सहराएँ-ज़िन्दगीमें[7]
कूकी न एक कोयल, बोला न इक पपीहा
कोई हुआ न साथी राधाका बेकसीमें

---

१. अंगारे, २. अहम्‌का ज्ञान, ३. प्रेम-पाठशालाका, ४. नियम, ५. आजीविकाकी, ६. छायादार वृक्ष, ७. जीवनके रेगिस्तानमें।

कुछ ढेर राखके हैं, कुछ अधजली-सी लकड़ी
आया था इक मुसाफ़िर सहराए-ज़िन्दगीमें

तकल्लुफ़ बर तरफ़ दिलकी कली उस वक़्त खुलती है
मुहब्बत आँसुओंके साथ जब काजलमें घुलती है
मिरे आँसू मिरी नज़रोंको ही धोते नहीं 'उज़रा'!
कभी उनसे तिरी दिलकी कुदूरत भी तो धुलती है

तिरी आँखोंको ऐ दीवानी राधा! कौन समझाये
झड़ी बाँधे न सावनकी कि फागनका महीना है
जो कोयल कूक उठती है तो दिलमें हूक उठती है
धुआँ होने नहीं पाता, कोई यूँ भी सुलगता है

कलकत्तेमें जमीलने अपने प्रियाके अभिवादन स्वरूप यह नज्म कही—

## सलामे-माज़ी[1]

[ ११ मैं-से ७ बन्द ]

सलाम लो कि इक उजड़े मकाँकी वीरानी
ज़बाने-हालसे[2] तुमको सलाम कहती है
सलाम लो कि यह शामो-सहरकी[3] बे-कैफ़ी[4]
'लबे-सवाल' से तुमको सलाम कहती है,

---

१. भूतकालका सलाम, २. वर्तमानकालीन वाणीसे, ३. सन्ध्या और प्रातः कालकी, ४. उदासी।

तुम्हारी ज़ुल्फ़की ख़ुशबू जिन्हें नहीं मिलती
वह बादे-सुबहके झोंके सलाम कहते हैं
तुम्हारी शोख़ अदाओंसे जिनमें जुम्बिश[१] थी
झुकाये सरको वह परदे सलाम कहते हैं

किसी चमनकी फ़ज़ाएँ[२] सलाम कहती हैं
किसी नदीके किनारे सलाम कहते हैं
जिन्होंने तुमको वहाँ मेरे साथ देखा था
वह पिछली रातके तारे सलाम कहते हैं

इक उजड़ी सेज पै चादरकी सोगवार[३] शिकनें[४]
और उस शिकनकी हिकायत[५] सलाम कहती है
इक आस्तींपै वह काजलके जा-बे[६]-जा धब्बे
वह आँसुओंकी अमानत[७] सलाम कहती है

किसी क़मीज़के उधड़े हुए गरेबाँपर
तुम्हारे हाथके टाँके सलाम कहते हैं
उभर गये थे जो तकियों पै बनके नक़्शो-निगार[८]
तुम्हारे दिलके वह जज़्बे[९] सलाम कहते हैं

---

१. हलन-चलन, २. बहारें, ३. शोकाकुल, ४. बिछावनकी सिकुड़न, ५. वास्तविकता, ६. जगह-जगहपर, ७. धरोहर, ८. बेल-बूटे, ९. भावनाएँ ।

जिसे तुम ओढ़के सोई थीं उस दुशालेमें
तुम्हारे जिस्मकी ख़ुशबू सलाम कहती है
कई महीनेके मुर्झाये बासी हारोंमें
हदीसे-तुर्रए-गेसू[1] सलाम कहती है,

सलाम तुम पै हो उज़रा! तुम्हारे माज़ीका[2]
जो दूर होती हो, मुझसे तो दूर होती जाओ
मगर हयाते-गुज़िश्तःके[3] इन मज़ारोंपर[4]
जलाके दिलका दिया थोड़ी देर रोती जाओ

उज़राके अन्यत्र विवाह हो जानेके आघातसे जमील अभी सँभलने भी न पाये थे कि भरी जवानीमें आपकी बहन विधवा हो गई। उसका वैधव्य और उसके दो मासूम बच्चोंके कुम्हलाये हुए मुँह देखकर कलेजा मुँहको आने लगा। उज़राके प्रेममें जो आग सुलगी थी, वह विधवा बहनके आँसुओंने बुझाकर रख दी। उस समय जमीलकी स्थिति इस दोहेकी दुखिया जैसी थी—

लकड़ी जल कोयला भई कोयला जल भयो राख।
मैं दुखिया ऐसी जली कोयला भयो न राख॥

बहनका ग़म ग़लत करनेके लिए, उसे प्रसन्न चित्त रखनेके लिए जमीलने अपने आँसू पोंछ डाले। उसे क्षण भरको भी मायकेमें कोई अभाव न मालूम दे, वह जीवनपर्यन्त निराकुल जीवन व्यतीत करे, उसके बच्चे मामाके यहाँ भी उसी शानसे परवान चढ़ें, जैसे कि अपने पिताकी देख-रेखमें चढ़ते। वे इसी घरके लाड़ले लाल कहलायें, उनकी मुनासिब ज़िदें पूरी की जायें।

---

१. ज़ुल्फ़ोंका अनोखापन, २. भूतकालका, ३. बीती हुई ज़िन्दगीके, ४. क़ब्रोंपर।

उक्त विचारोंको अमली जामा पहनानेके लिए जमीलने जीवन-पर्यन्त विवाह न करनेका निश्चय किया। उज़राके विछोहसे आपके जीवन-उद्यानमें पहले ही तुषार-पात हो चुका था। बहनके वैधव्यने रहे-सहे पारिवारिक सुख-चैनके खलिहानपर बिजली गिरा दी। अतः आपने जवानीकी ४५ वसन्तोंकी बहार उजाड़में रहकर गुज़ार दीं।

जमीलने शादी किस वजहसे नहीं की। इससे दुनियाको क्या सरोकार। वह तो इसका ज़िम्मेवार उज़राको ही समझती रही। अपने व्यंग्य-बाणोंसे उस दुखियाको ज़ख़्मी करती रही। अपने-पराये सभी उसे छेदते-भेदते रहे। कुछ उसे बेवफ़ा कहनेसे बाज़ न आये। और कुछ छिप-छिपकर मिलनेका आरोप लगानेसे न चूके। वह दुखिया खुद भी ज़िन्दा दरगोर थी। पतिको पूर्ण रूपेण आत्म-समर्पित कर देनेपर भी अपने हृदयमें जमीलके लिए एक टीस-सी महसूस करती थी। जमीलके कुँआरे रहनेका कारण वह अपनेको समझती थी। जमील विवाह कर ले तो शायद उसके दिलकी चुभन जाती रहे। दुनियाके ताने-उलाहनोंसे निजात मिल सके। जमीलकी उजाड़ जवानीमें भी बहार आये और उसका वीराना घर भी गुलो-गुलज़ार बन सके। इसी आशासे अवसर निकालकर उज़रा जमीलके पास आई। वह जानती थी कि जमीलसे विवाहका ज़िक्र करना ऊसरमें हल चलाना है। अतः उसने जो कहा, वह जमीलके ही शब्दोंमें पढ़िए—

### डरो ख़ुदासे डरो

हवसकी[1] आग बुझाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो।
सुनो 'जमील' सुनो, तुमसे यह गुज़ारिश[2] है,
यह आर्ज़ू नहीं दिलसे, नज़रकी साज़िश है,
समझलो यह कि मुहब्बत भी एक ख़्वाहिश है,
उसे जुनूँ[3] न बनाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो।

---

१. लालसाकी, २. प्रार्थना, ३. उन्माद।

यह तुम जो मुझको तसव्वुरमें[1] प्यार करते हो,
जो नाम लेके मेरा आह सर्द भरते हो,
तुम्हें ख़बर भी है, क्या मुझ पै कर गुज़रते हो,
न जज़्बे-दिलको[2] बढ़ाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो।

यह क्या कि दिलमें किसीके समाये जाते हो,
रगोंमें ख़ूँका तमव्वुज[3] बढ़ाये जाते हो,
हर-एक बूँदको आँसू बनाये जाते हो,
किसीको यूँ न घुलाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो।

झुकाये सरको जो बैठूँ तो तुम नज़र आओ,
कभी किताब जो खोलूँ तो तुम नज़र आओ,
उठाके आईना देखूँ तो तुम नज़र आओ,
न यूँ नज़रमें समाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो।

किसी दिन आइनाख़ानेमें[4] जब सँवरती हूँ,
तुम्हारे शौक़े-तमाशाको[5] याद करती हूँ,
तुम्हारी आँखसे क्या अपने दिलसे डरती हूँ,
न बे-हिजाब[6] बनाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो।

इधर-उधर नज़र उट्ठे तो सामने तुम हो,
हिले हवासे जो पर्दे तो सामने तुम हो,
करूँ ख़ुदाको जो सजदे तो सामने तुम हो,
नमाज़में न सताओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो।

---

१. ध्यानमें, चिन्तनमें, २. हृदयगत भावनाओंको, ३. रक्तकी लहरें, ४. शृंगार-कक्षमें, ५. प्रेमाभिलाषाको, ६. लाजरहित।

जो पास चूल्हेके अम्माके डरसे जाती हूँ
तो ख़ुद भी जलती हूँ सालनको[1] भी जलाती हूँ
नमक समझके शकर दालमें मिलाती हूँ
न यूँ दिवाना बनाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो ।

न इस तरह मुझे रुसवा[2] करो ख़ुदाके लिए
लगाई आगको ठण्डा करो ख़ुदाके लिए
रियायते-दिले-'उज़रा'[3] करो ख़ुदाके लिए
वफ़ाको आग लगाओ, डरो ख़ुदाके लिए, मुझे न याद करो ।

झिंझोड़कर न जगाओ कि सो गया है यह दिल
कई बरससे अज़ा ख़ानए-वफ़ा[4] है यह दिल
ख़ुदा गवाह किसीकी महल-सरा[5] है यह दिल
पराये घरमें न आओ, डरो ख़ुदाके लिए, मुझे न याद करो ।

जो बुझ रहा हो सरे-शाम वह दिया हूँ मैं,
तबस्सुमे-लबे-मायूसे-मुद्दआ[6] हूँ मैं
हयाके दोष पै इक मैय्यते-वफ़ा हूँ मैं
मेरे क़रीब न आओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो ।

---

१. साग-सब्ज़ीको, २. बदनाम, ३. उज़राके दिलपर रहम खाओ, ४. वफ़ापूर्ण हृदय शोकाकुल है, ५. दूसरेका महल, ६. अभिलाषाके निराश ओठोंकी मुसकान ।

है फ़र्ज़का यह तक़ाज़ा जला करूँ ता-उम्र
हयाते-रफ़्ताका[1] मातम[2] किया करूँ ता-उम्र
किसीके नामका कलमा पढ़ा करूँ ता-उम्र
नया सबक़ न पढ़ाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो

जो घुटके साज़में रह जाये वह सदा[3] हूँ मैं
न दर्दसे, न मुहब्बतसे आश्ना[4] हूँ मैं
यही समझ लो कि कम्बख़्त बेवफ़ा[5] हूँ मैं
मुझे वफ़ा न सिखाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो

कहाँ रखूँ दिले-ख़ाना ख़राबकी मैय्यत[6]
कुँआरेपनके पुर-अरमान[7] ख़्वाबकी मैय्यत
मैं ख़ुद उठाऊँगी अपने शबाबकी[8] मैय्यत
न हाथ अपने लगाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो

मैं दिलमें बीज मुहब्बतका बो नहीं सकती
हयाका नाम डुबो दूँ, डुबो नहीं सकती
किसी तरह भी तुम्हारी मैं हो नहीं सकती
मैं सदक़े[9], जी न कुढ़ाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो

---

१. व्यतीत जीवनका, २. शोक, ३. आवाज़, ४. परिचित, ५. कृतघ्न, ६. मिटे हुए दिलकी अर्थी, ७. अभिलाषापूर्ण, ८. यौवनकी, जवानीकी, ९. न्योछावर।

हमारे दिलमें अब अरमान पल नहीं सकते
अगर पलें भी तो करवट बदल नहीं सकते
शिकस्तः साज़से[1] नग़मे[2] निकल नहीं सकते
अब इसको फिर न बजाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो।

मैं हाथ जोड़ रही हूँ तुम्हें ख़ुदाकी क़सम
शिकस्तः - हालिए उज़राए-बेवफ़ाकी क़सम
जो जल रही हो, बतदूरीज[3] उस चिताकी क़सम
हविसकी[4] आग बुझाओ, डरो ख़ुदासे डरो, मुझे न याद करो।

जमील शादी न करनेके निश्चयपर ४४ वर्षकी उम्रतक अडिग रहे, लेकिन बूढ़ी माँके सैले-अश्क ( आसुओंकी बाढ़ ) में वे अधिक पाँव जमाये न रह सके। बहनके वैधव्यके १३ वर्षतक तो किसी तरह टालते रहे। आख़िर जब माँकी ममतासे मजबूर हुए तो आप शादी करनेको प्रस्तुत इस शर्तपर हुए कि बड़ी उम्रकी निःसन्तान विधवासे निकाहे-सानी ( पुनर्विवाह ) करेंगे। आख़िर आपकी शर्तके अनुसार ४५ वर्षकी उम्रमें शादी हुई।

जमीलकी नज़्मों और ग़ज़लोंके दो संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। आप रुबाइयाँ, क़सीदे, मर्सिये, मसनवी कहनेमें भी महारत रखते हैं। मज़ाहियारंग ( हास्यरस ) में भी खूब कहते हैं। 'आल तवाइफ़ कान्फ्रेंस' और 'राउण्डटेबिल कान्फ्रेंस' की असफलता पर 'फिरी बारात और खाली

---

१. टूटे हुए वाद्य यंत्रसे, २. संगीत, ३. शनैः शनैः, धीरे-धीरे, ४. लालसाकी।

डोला' शीर्षक मज़ाहिया नज़्में काफ़ी मशहूर हुईं। मुँहका ज़ायका बदलनेको कभी-कभी इष्ट-मित्रोंके आग्रहपर 'हिजो' भी कह देते हैं। हिजोके ख्यातिप्राप्त शाइर 'सौदा' और 'जमील' की हिजोगोईमें बहुत बड़ा अन्तर ये है कि 'सौदा'की हिजोसे लोग बदनाम होते थे और आप जिसकी हिजो कहते हैं, वह स्वयं मज़े लेकर अपनी हिजो दूसरोंको सुनाता है। यही कारण है कि आपसे इष्ट-मित्र आग्रह करके अपनी हिजो कहलवाते हैं।

यहाँ हम केवल उनकी ग़ज़लोंसे शेर चुनकर दे रहे हैं। इरादा था कि उनकी ग़ज़लोंके चन्द अशआ़रपर कुछ रौशनी डालें, परन्तु स्थानाभावके कारण मन मसोसकर रह जाना पड़ रहा है। क्या-क्या लिखा जाये

उम्र थोड़ी है और स्वाँग बहुत

## ग़ज़लोंके चुने हुए शेर

[१९४१ से १९५८ ई० तक कही गई ६६ ग़ज़लोंसे चुने हुए शेर]

इसी लिए तो दिया है यह ख्वाहिशात[1]का रोग
कि एतिदालकी[2] हदमें रहे ग़रूर[3] मेरा
किया न उसने ख़राबातियोंमें[4] मेरा शुमार
मगर ग़रूरसे आलूदः[5] था सुरूर[6] मेरा

---

१. इच्छाओंका, तृष्णाका, २. सीमित क्षेत्रमें, ३. अभिमान, ४. सुरासेवियोंमें, ५. भीगा हुआ, लिप्त, ६. हल्का नशा।

है ख़ौफ़ यह कि कहीं, इस बिहिश्ते-अर्ज़ीमें
पकड़ ले दामने-इस्मत न कोई हूर मेरा
मैं सुन रहा हूँ तेरे दिलकी धड़कनें पैहम[1]
है तेरा दिल मुतजस्सिस[2] कहीं ज़रूर मेरा
मददका वक्त है आ, बनके आ, निजात[3] मेरी
तुझे वफ़ाकी क़सम बख़्श[4] दे क़ुसूर मेरा

यह और बात कि दामनको फूल दे न सकी
मगर बहारने तलवोंको ख़ार[5] दे तो दिया

सिफ़ात[6] बख़्शे, मकान बख़्शा[7], जगह-जगह इक हरम[8] बनाया
हमारी सूरतगरीने[9] आख़िर ख़ुदाको भी इक सनम[10] बनाया
हरमको भी बुतकदः[11] समझना, है दूसरी मंज़िल इरतिक़ाकी[12]
वह पहला ज़ीना शऊरका था कि बुतकदेको हरम बनाया

मुसाफ़िरोंमें[13] हो तज़किरा[14] क्या 'जमील' अपनी सुबुकरवीका[15]
न हमने रस्तेमें गर्द उड़ाई, न कोई नक़्शे-क़दम[16] बनाया

मेरी हालतसे पशेमाँ[17] न हो तू ऐ ग़मे-दोस्त[18] !
मुझको यह ग़म है कि मैंने तुझे बर्बाद किया

---

१. लगातार, २. तलाश करनेवाला, खोजी, ३. मोक्ष, ४. क्षमा कर दे, ५. काँटा, ६. गुण, धर्म, ७. प्रदान किया, ८. मस्जिद, ९. सूरत बनानेके शौक़ने, चित्रकारीकी रुचिने, १०. मूर्त्ति, माशूक़, ११. मन्दिर, १२. प्रगतिकी, उन्नतिकी, १३. जनतामें, १४. चर्चा, ज़िक्र, १५. तेज़रफ्तारीका, शीघ्रगामीका, १६. पाँवोंका निशान, १७. लज्जित, चिन्तित, १८. मित्र द्वारा पहुँचाया गया रंज,

हमने इक नाव जो छोड़ी भी तो डरते-डरते
इस पै भी चीं-ब-जबीं[1] हो गया दरिया तेरा

खुदाकी रहमत पै[2] भूल बैठूँ, यही न मानी है इसके वाइज़ !
वह अब्रका[3] मुन्तज़िर[4] खड़ा हो, मकान जलता हो जब किसीका
वह लाख झुकवा ले सरको मेरे, मगर यह दिल अब नहीं झुकेगा
कि किब्रयाईसे[5] भी ज़ियादा मिज़ाज नाज़ुक है बन्दगीका

न वह एहतरामे-ख़िरद[6] रहा, न वह एतबारे-दुआ[7] रहा
जो उम्मीद दिलसे चली गई तो ख़ुदी[8] रही न ख़ुदा रहा
उसे आर्ज़ूए-सकूँ[9] अबस[10] जो फ़रेबे-शौक़ न खा सके
मेरी हसरतोंकी यह हद हुई कि गुनाहमें न मज़ा रहा

चलीं इस चमनमें वह आँधियाँ कि ज़मीन ताबःफ़लक[11] गई
मैं वह बदनसीब ग़ुबार[12] हूँ, जो इक आस्ताँमें[13] छुपा रहा
किरन आफ़ताबकी[14] दश्ते-दर पै तपिश[15] छिड़कके चली गई
मगर एक ज़र्रऐ-मनफ़इल[16] जो बुझा रहा सो बुझा रहा

---

१. नाराज, त्योरी चढ़ाना, २. दया पै, ३. वर्षाका, ४. प्रतीक्षामें, ५. ईश्वरत्वसे, ६. अक़्लका आदर, ७. प्रार्थनाओंपर विश्वास, ८. अहमन्यता, ९. सुखचैनकी इच्छा, १०. व्यर्थ, ११. पृथ्वीसे आकाशतक, १२. धूल, १३. ड्योढ़ीमें, खानक़ाहमें, १४. सूरजकी, १५. गर्मी, १६. संकोची कण, तुच्छ अणु।

न फ़ंसूँ[1] रहा न कशिशें[2] रही, न जुनूँ[3] रहा न तपिशें[4] रही
फ़क़त एक ज़ोमे-वफ़ा[5] रहा, जो मेरी ख़ुदीकी ग़िज़ा[6] रहा
मेरी रंगतें न निखर सकीं, मेरी निकहतें[7] न बिखर सकीं
मैं वह फूल हूँ कि जो इस चमनमें गिलःगुज़ारे-सबा[8] रहा

मेरी अक़्ल राहमें 'मज़हरी' कभी देखती है इधर-उधर
कि जुनूँने[9] तर्के-सफ़र[10] किया तो न कोई राहनुमा[11] मिला

सद चाक[12] हुआ गो जामए-तन[13] मजबूरी थी सीना ही पड़ा
मरनेका वक़्त मुक़र्रर था, मरनेके लिए जीना ही पड़ा
मै[14] उसकी नशीली आँखोंकी तल्ख़ाब[15] सही ज़हराब[16] सही
लेकिन फ़ितरत[17] कुछ चाहती थी, दिल प्यासा था पीना ही पड़ा
कहती थी जुनूँ[18] जिसको दुनिया, बिगड़ी हुई सूरत अक़्लकी थी
फाड़ा था गरेबाँ तेरे लिए जब तू न मिला सीना ही पड़ा
कुछ तुर्शी[19] थी, कुछ तल्ख़ी[20] थी, लेकिन जब ख़ुद ही माँगी थी
तो माँगके वापिस करनेका मौक़ा ही न था पीना ही पड़ा

---

१. जादू, मोहनी शक्ति, २. आकर्षण, ३. उत्साह, उन्माद, ४. गर्मी, ५. वफ़ाका अभिमान, ६. स्वाभिमानका अवलम्बन, ७. सुगन्ध, ८. हवाकी शिकायत करनेका अधिकारी, उपालम्भ देनेवाला, ९. उत्साहने, लगनने, १०. यात्राका स्थगन, ११. पथ-प्रदर्शक, १२. सैकड़ों स्थानोंपर फटा हुआ, १३. शरीररूपी परिधान, १४. मदिरा, १५. कड़वी, १६. विषैली, १७. प्रकृति, १८. उन्माद, पागलपन, १९. खटास, २०. कड़ुवाहट।

न घबरा जवानीकी बे-रहरवीसे[१]
यह दरिया बना लेगा ख़ुद ही किनारा
वहीं तक ख़ुदी[२] है, वहीं से ख़ुदा है
जहाँ बेकसी[३] ढूँढ़ती हो सहारा

न हम जिससे जीते, न तुम जिससे जीते
वह दिल ज़िन्दगीके तक़ाज़ोंसे हारा

वोह एहसासे-ज़िल्लतकी[४] नाज़ुक घड़ी जब
मुहब्बतने अपनी ख़ुदीको[५] पुकारा
मुहब्बतमें आई इक ऐसी भी मंज़िल
कि ढूँढ़ा जुनूँने[६] ख़िरदका[७] सहारा

जो सज्दए-शुक्रमें[८] झुका है, हँसो न उस फ़ाक़ाकश गदापर[९]
ख़ुदा न करदः[१०] यह वक़्त आये कि बन्दगी तंज़[११] हो ख़ुदापर
न अपने दिलकी लगी बुझा यूँ, न कर जहन्नुमका[१२] तज़करः[१३] यूँ
सँभाल अपने बयाँको वाइज़ ! कि आँच आने लगी ख़ुदापर
जिन्हें थी इक जामकी[१४] ज़रूरत, ख़ुम[१५] उनके आगे धरे हैं साक़ ! 
हज़ार-हा कूज़ः हाये ख़ालीका[१६] क़र्ज़ है तेरी इस अ़तापर[१७]

---

१. अस्त-व्यस्ततासे, २. अहंमन्यता, स्वका गर्व, ३. मजबूरी, असहायस्थिति, ४. अपमानका ज्ञान, ५. स्वाभिमानको, ६. दीवानेपनने, ७. अक़्लका, ८. कृतज्ञता स्वरूप ख़ुदाकी इबादतमें, ९. भूके भिखारीपर, १०. ख़ुदा न करे, ११. इबादत करना मज़ाक़ बन जाये, उपासनाका व्यंग्य उड़ाया जाये, १२-१३. नरकका चर्चा, १४. प्यालेकी, १५. मदिराके घड़े, १६. हज़ारों ख़ाली मिट्टीके सकोरोंका, १७. देनपर ।

यह नमाज़े-सहने-हरम[1] नहीं, यह सलाते-कूचए-इश्क़[2] है
न दुआका होश सजूदमें[3] न अदबकी शर्त नमाज़में
जो खड़े हैं आलमे-ग़ौरमें[4], वह खड़े हैं आलमे-ग़ौरमें
जो झुके हुए हैं नमाज़में, वह झुके हुए हैं नमाज़में

वह भी है दस्ते-हविस,[5] दस्ते-दुआ[6] जिसको कहें
इन्फ़िआले अपनी ख़ुदीका[7] है, ख़ुदा जिसको कहें

वे हैं अमीर, निज़ामे-जहाँ[8] बनाते हैं
मैं हूँ फ़क़ीर मिज़ाजे-जहाँ[10] बदलता हूँ
यह सर बना नहीं ऐ दोस्त! आस्ताँके[11] लिए
मैं इसके वास्ते ज़ानू[12] तलाश करता हूँ

वे-जिगरको ज़ख़्म न दे सके, मैं जबींपर[13] दाग़ न ले सका
वह निगाहे-नाज़[14] उठी नहीं, यह सरे-नियाज़[15] झुका नहीं

मेरी नज़रमें तजल्लीकी[16] क्या हक़ीक़त[17] है
तजल्लियोंकी हक़ीक़तको[18] देखता हूँ मैं

---

१. मस्जिदमें पढ़ी जानेवाली नमाज़, २. प्रेम-गलीकी उपासना, ३. ईश्वरके आगे नतमस्तक होनेमें, ४. चिन्तनस्थितिमें, ५. तृष्णाका हाथ, ६. जो हाथ खुदासे माँगनेके लिए फैला हो, ७. पश्चात्ताप, अफ़सोस, ८. अहंभावका, ९. संसारकी व्यवस्था, १०. संसारका मत परिवर्त्तन करता हूँ, ११. नमाज़ोंमें झुकनेके लिए, प्रेयसीकी चौखट चूमनेके लिए, १२. रान, जंघा, १३. मस्तकपर, १४. प्रेयसीकी आँखें, १५. नम्र मस्तक, १६. ईश्वरीय चमत्कारकी, १७. क़ीमत, १८. वास्तविकताको।

थी वह शायद अपनी ही बेचारगीकी[1] इक पुकार
जिसको अपनी साद:-लौहीसे[2] ख़ुदा समझा था मैं

यही तो अँजामे-जुस्तजू[3] है कि ठोकरें खाके बुतकदोंकी[4]
जबीने-रुसवाको[5] रखके अपनी, हरमकी[6] चौखट पै सो गया हूँ

जो क़ाफ़िला[7] इस तरफ़से गुज़रे, वह एक ठोकर मुझे लगा दे
'जमील' मैं बीच रास्तेमें इसी भरोसे पै सो गया हूँ

सितम है ऐ रौशनी ! सितम है, कि वह भी अब धूपकी है ज़दमें[8]
ज़रा-सा साया[9] जो रह गया था घने दरख़्तोंकी तीरगीमें[10]

इधर अँधेरेकी लानतें हैं, उधर उजालेकी ज़हमतें[11] हैं
तेरे मुसाफ़िर लगायें बिस्तर, कहाँ पै सहराए-ज़िन्दगीमें[12]
वह रौशनी क्या बनेगी रहमत,[13] जो धूपको साथ ला रही हो
वह साया[14] क्या देगा ज़िन्दगीको,जनम लिया जिसने तीरगीमें[15]
'जमील'का सोज़े-नातमामी[16] लतीफ़ जज़्बोंकी[17] तिश्नः कामी[18]
यही तो वह ख़ूने-आज़ू[19] है, जो रंग भरता है शाइरीमें

---

१. असहाय स्थितिकी, मजबूरीकी, २. सरल स्वभावके कारण, ३. खोजका नतीजा, ४. मूर्तिगृहोंकी, ५. बदनाम मस्तकको, ६. मस्जिदकी, ७. यात्रीदल, ८. निशानोंमें, घेरेमें, ९. छाया, १०. अँधियारीमें, ११. परेशानियाँ, १२. जीवनरूपी रेगिस्तानमें, १३. दयापूर्ण, १४. छाया, १५. अँधेरेमें, १६. अपूर्ण उत्ताप, १७. कोमल भावोंकी, १८. प्यास, चाह, १९. अभिलाषा-रक्त ।

काविश[1] इधरसे हो तो उसे सब जुनूँ[2] कहें
कोशिश उधरसे हो तो कशिश[3] उसका नाम है

कभी राह मैंने बदली तो ज़मींका रक़्स[4] बदला
कभी साँस ली ठहरकर तो ठहर गया ज़माना

तलबके सहरामें[5] चप्पे-चप्पे पै हैं मेरे नक़्शे-पाके[6] मुहरे
अगर्चे मैं इस हविसकदेसे[7] गुज़र गया था मुसाफ़िराना

अब तो धूप आ पहुँची झाड़ियोंके अन्दर भी
अब पनाह[8] लेनेको तीरगी[9] कहाँ जाये?

झुकाया तूने, झुके हम, बराबरी न रही
यह बन्दगी हुई ऐ दोस्त! आशिक़ी न रही

किसीने फिर मेरे दिलका दिया जला तो दिया
यह और बात कि पहली-सी रौशनी न रही

दीवारसे घिरा था हरमका[10] क़ुसूर क्या
पैदा अगर हदूदमें[11] वुसअत[12] न हो सकी

---

१. प्रयत्न, २. पागलपन, ३. आकर्षण, खिंचाव, ४. घूमना, ५. इच्छारूपी रेगिस्तानमें, ६. पाँवोंके निशान, ७. तृष्णागारसे, ८. शरण, ९. अँधियारा, १०. काबेका, ११. सीमित क्षेत्रमें, १२. विशालता।

मैं ख़ुदाको पूजता हूँ, मैं ख़ुदासे रूठता हूँ
यह वह नाज़े-बन्दगी[1] है, जिसे पूछिए ख़ुदासे
कभी वह भी ज़िन्दगी थी, कि ख़ुदा ख़जिल[2] था मुझसे
कभी यह भी ज़िन्दगी है, कि ख़जिल हूँ मैं ख़ुदासे
तू वह ज़ुल्फ़ शाना-परवर,[3] जिसे ख़ौफ़ है हवाका
मैं वह काकुले-परेशाँ[4] जो सँवर गई हवासे

ख़ुशा[5] इनायते-साक़ीकी शान[6] बुलअजबी[7]
किसीको जाम[8] किसीको ग़रूरे-तिश्नालबी[9]

उस शामसे डरो जो सितारोंकी छाँवमें
आती ही इक हसीन अँधेरा लिये हुए

मेआर[10] इक गढ़ा हविसे-इख़्तियारने[11]
अल्लाह कहके उसको लगी ख़ुद पुकारने

यही दो चार नशेमन[12] थे बिनाए-तख़रीब[13]
आँधियाँ बाग़में आईं उन्हीं तिनकोंके लिए

---

१. उपासनाका गर्व, २. लज्जित ३. कंघे द्वारा संवारी गई ज़ुल्फ़, ४. माथे या कानके बिखरे हुए बाल, ५. क्या खूब, ६. साक़ीकी कृपाकी महत्ता, ७. विलक्षणता, ८. मदिरापात्र, ९. प्यासे रह जानेका गर्व, १०. आदर्श, कसौटी, नमूना, ११. अधिकार रूपी इच्छाने, १२. नीड़, घोंसले, १३. विध्वंसके कारण ।

राहत[1] न किसी सूरत ऐ बेवतनी[2] ! पाई
बिस्तर हमें याद आया जब छाँव घनी पाई

ऐ मेरे ख़ुदा ! इस ज़ुल्मतको[3] आँखोंका जो काजल बन न सकी
या दिल पै किसीके दाग़ बना, या रुख़पै[4] किसीके तिल कर दे

ऐ मेरे ख़ुदा ! जिस मिट्टीसे जब्बारोंके[5] दिल बनते हैं
उस मिट्टीमें मजबूरोंके कुछ आँसू भी शामिल कर दे
ऐ मेरे ख़ुदा ! इन तिनकोंको किश्तीकी तरह बहने जो न दे
कश्कोल[6] न भर उस दरियाका उस दरियाको साहिल[7] कर दे

नख़्ले[8] सहरामें[9] जो गिरते हैं तो गिरने दीजे
जोशे-परवाज़[10] है तिनकोंमें इसी आँधीसे

उठवाइए भी दैरो-हरमकी यह सबीलें[11]
बढ़ते नहीं आगे जो गुज़रते हैं इधरसे

ज़िन्दगी यह है कि जिस रेत पै जलते थे क़दम
अब वही बिस्तरे-आराम हुई जाती है
ज़िन्दगी यह है कि सोया था मुसाफ़िर थककर
सोके उट्ठा है तो अब शाम हुई जाती है

---

१. चैन, २. वतनकी जुदाई, ३. स्याहीको, अँधियारीको, ४. कपोलपर, ५. ज़ालिमोंके, ६. भिक्षा-पात्र ( दरियाके पाटरूपी पात्रको पानी न दे ), ७. तट, किनारा ( सुखा दे ), ८. वृक्ष, ९ जंगलमें, १०. उड़नेका जोश, ११. मन्दिर-मस्जिदरूपी पनशालाएँ ( प्याऊ ) ।

किब्रयाई[1] तेरी बदनाम हुई जाती है
बन्दगी तुझ पै एक इलज़ाम हुई जाती है
ऐ दुआ माँगनेवाले ! तेरी हर दमकी दुआ
अब ख़ुदाके लिए दुश्नाम[2] हुई जाती है
जिस पै तहज़ीबने[3] रक्खी थी हयाकी[4] तुहमत[5]
वह अदा और भी बदनाम हुई जाती है

[ १९४० से पूर्व कही गई ७० ग़ज़लोंसे चुने गये अशआर । जब कि जमील साहबने अपना कोई मखसूस रंग इख्तियार नहीं किया था । ]

'जमील' अपनी असीरी पै[6] क्यों न हों[7] मग़रूर
यह फ़ख्र[8] क्रम है कि सैय्यादने पसन्द किया

सूखे हुए कुछ दरिया होते, उजड़ा हुआ इक सहरा[9] होता
ज़ंजीर पहन लेते हम अगर, दुनियामें तुम्हारी, क्या होता ?

मोती बननेसे क्या हासिल ? जब अपनी हक़ीक़त[10] ही खो दी
क़तरेके लिए बेहतर था यही, क़ुल्ज़ुम[11] न सही दरिया होता

हमको इंसानोंमें गिनती नहीं क्यों यह दुनिया ?
हम तो हिन्दू भी नहीं, हम तो मुसलमाँ भी नहीं

---

१. खुदाई, ईश्वरत्व, २. अपशब्द, ३. सभ्यताने, ४. लाजको, ५. आरोप, लांछन, ६. बन्दी जीवनपर, ७. गर्वीले, ८. अभिमान (सौभाग्य), ९. बियाबान, १०. वास्तविकता, ( अस्तित्व ), ११. समुद्र ।

मजनूँ हैं मगर ख़्वाहिशे-लैला नहीं करते
हम इश्क़ तो करते हैं, तमन्ना नहीं करते

बहते पानीका क्या ठिकाना है
आओ दामन भिगो लिया जाये
काश इन माहवश[1] हसीनोंमें
आँख जो ढूँढ़ती है पा जाये

कारवाँ[2] लग चुका है रस्तेपर
फिर कोई रहनुमा[3] न आ जाये
बुत-ओ-बुतख़ाना[4] तोड़ने वाले!
इसी ज़दमें[5] ख़ुदा न आ जाये
देखो-देखो इन आँसुओं पै 'जमील'
तुहमते-इल्तिजा[6] न आ जाये

गुज़र गई हदसे बेक़रारी, तो एक ऐसा भी वक़्त आया।
कि आप बैठे हुए हैं बामीं पै[7] और किसीको ख़बर नहीं है

अगर नहीं है यह दस्ते-हविसकी[8] कमज़ोरी
तो फिर दराज़िए-दस्ते-दुआको[9] क्या कहिए
दुआसे कम नहीं होता है, ज़ोर तूफ़ाँका
ख़ुदाका हाल यह है, नाख़ुदाको[10] क्या कहिए

---

१. चाँद जैसे, २. यात्रीदल, ३. पथप्रदर्शक, ४. मूर्ति और मन्दिर, ५. हमलेमें, सीधमें, ६. प्रार्थनाका लाञ्छन, ७. छतपर, ८. तृष्णाके हाथोंकी, ९. नमाज़के बाद याचनाके लिए फैलाये गये हाथको, १०. मल्लाहको।

इसी मिट्टीसे फ़ितरत कितने नाज़ुक दिल बना लेती ?
जो मेरी ख़ाके-तुर्बतमें तेरे आँसू मिले होते

यह मेरी आग यूँ कजला न जाती मेरे सीनेमें
अगर इस आगको भी तापनेवाले मिले होते

[ वर्तमान तरक़्क़ी-पसन्द रंगमें कही गईं
१३ ग़ज़लोंसे चुने गये शेर ]

है ख़ैरो-शरमें[1] सुलहका[2] इमकाँ[3] अभी तलक
इबलीस[4] है मुअल्लिमे-इंनसाँ[5] अभी तलक
ज़ुल्मतसे नूर[6], नूरसे ज़ुल्मत ख़फ़ा हो क्यों
है अहरमन[7] ख़लीफ़ए-यज़्दाँ[8] अभी तलक
फ़ग़फ़ूरियतका कुफ़्र[9] तो टूटा मगर 'जमील' !
जम्हूरियत[10] है, फ़ितनए-दौराँ[11] अभी तलक

सोचता क्या है कुदाल अपनी उठा ऐ गोरकन[12] !
मैय्यते-तहज़ीब[13] बारे-दोशे-इमकाँ[14] कब तलक ?

---

१. सुलह और लड़ाईमें, शान्ति और उपद्रवोंमें, २. समझौतेका; गठबन्धनका, ३. सम्भावना, ४. शैतान, ५. मनुष्योंका शिक्षक, ६. अँधियारेसे प्रकाश, ७. बुराईका खुदा, ८. खुदाका सलाहकार, खुदाका जानशीन, ९. मूर्ति-पूजाका पाखण्ड, १०. प्रजातन्त्र, ११. दुनियाका धोका, विद्रोह, १२. क़ब्र खोदनेवाला मज़दूर, १३. सभ्यताकी अर्थी, तहज़ीबका जनाज़ा, १४. आशारूपी कन्धेका बोझ ।

ऐ मेरे वतन ! तुझमें दिल ग़रीब शाइरका
झोंपड़ीमें मुफ़लिसकी जैसे सर्द चूल्हा हो

पास आके हट जाये जो नदी 'जमील' उससे
वह सराब[1] अच्छा जो दूरसे बुलाता हो

फ़ितरतसे[2] कभी हज़्म न होगी यह घुली आग
पीते हैं, जो आँसू वही थूकेंगे शरारे[3]

ग़ुबार उठ-उठके सुस्त ज़र्रोंको उनकी मंज़िल दिखा रहा है
बहार आ-आके हर हक़ीक़तको[4] इक तबस्सुम[5] बना रही है
चला न शमओंका ज़ोर जिसपर, बनी सितारोंकी क़ब्र जिसमें
तपिश दिलोंकी उसी अँधेरेसे एक सूरज उगा रही है

यह कैसी महफ़िल है जिसमें साक़ी ! लहू पियालोंमें बट रहा है
मुझे भी थोड़ी-सी तिश्नगी[6] दे कि तोड़ दूँ यह शराबख़ाना
सियाहियाँ बुन रही हैं रातें, तजल्लियाँ गढ़ रही हैं, सूरज
ख़ुदा-ओ-इबलीसकी[7] शराकतमें[8] चल रहा है यह कारख़ाना
कुलाहदारोंसे[9] कोई कह दे, कि यह वो मंज़िल है इरतिक़ाकी[10]
जहाँ ख़ुदाके सिफ़ातपर भी नज़र है बन्दोंकी[11] नाक़िदाना[12]
कुलाहदारोंसे कोई कह दे, कि है यह तारीख़की[13] अदालत
खड़ी हुई है क़तार बाँधे यहाँ नबूवत[14] भी मुजरिमाना[15]

---

१. मृगमरीचिका, २. प्रकृतिसे, ३. चिनगारियाँ, ४. वास्तविकताको, सचाईको, ५. मुसकान, ६. प्यास, ७. शैतानकी, ८. साझेदारीमें, ९. ताजवालोंसे, राजा-महाराजाओंसे, १०. उन्नतिकी, प्रगति-युगकी, ११. ईश्वर-भक्तोंकी, १२. आलोचनात्मक, १३. इतिहासकी, १४. पैग़म्बरी, १५. अपराधीके समान।

जो राखके ढेर रह गये हैं, वह अब उठें गर्दे-राह[1] बनकर
हवाकी रफ़्तार कह रही है कि क़ाफ़िला[2] हो चुका रवाना

इन सितारोंकी उजालेमें ज़रूरत क्या है
जो अँधेरेमें चराग़े-रहे-फ़रदा[3] न बने

वहाँ तेरी शबे-ग़मकी दराज़ी[4] कौन नापेगा ?
जहाँ फ़ाक़ा-कशोंके[5] दिन बड़ी मुश्किलसे ढलते हैं
वहाँ क्या होगी हमदर्दी तेरे चाके-गरेबाँसे[6]
जहाँ इज़्ज़तके सीनोंपर फटे आँचल मचलते हैं
गये वह दिन कि जब ज़ख़्मे-तमन्ना[7] गुल खिलाता था
कि अब तो ज़िन्दगीके खेत अंगारे उगलते हैं

[ १९३० से १९३८ ई० तक कही हुई वे २६ ग़ज़लें—जिनमें हिन्दी शब्दोंको भी समोनेका नवीन प्रयास किया गया है। चन्द शेर—]

सबसे अच्छी है वह बंसी, जिसमें हो आवाज़ तेरी
सबसे मीठी है वह बोली, जिसमें हो पैग़ाम तेरा

घटा सावनकी मथराके महलपर आके कहती है—
कि आँसूके संदेशे लाये हैं, हम बिन्दरावनसे

---

१. मार्गकी धूल, २. यात्रीदल, ३. भविष्यके मार्गका दीप, ४. दुःखपूर्ण रात्रिकी लम्बाई, ५. भूकोंके, ६. फटे हुए कुरतेके गलेको देखकर, ७ अभिलाषारूपी घाव।

पलटकर 'मज़हरी'ने इक नज़र फेंकी तो मुजरिम है
तुम्हें हक़ है कि तुम झाँका करो शाइरको चिलमनसे

तुम्हारी आँखोंमें इस तरह है, यह उठती-गिरती निगाह 'उज़रा' !
शराबख़ानेमें जैसे कोई पिये हुए लड़खड़ा रहा हो
हवा भी पगली, घटा भी पगली, अभी है धूप और अभी है बदली
कि जैसे कोई नक़ाब रुख़से उठा रहा हो, गिरा रहा हो

तू और तेरी चंचल सखियाँ, जब पानी भरने जाती हैं
तब साये धानी होते हैं, तब धूप गुलाबी होती है

हमारा सूरज तुम्हीं हो 'उज़रा' ! तुम्हींसे यह सोज़े-शाइरी है
तुम्हारे शाइरकी ज़िन्दगी भी ग़रीब ज़र्रोंकी ज़िन्दगी है
निगाहका भेद पा लिया है, हसीन मुखड़ा छुपा लिया है
किसीने घूँघट बढ़ा लिया है, कि धूप सायेमें खो गई है

तुम इस तरह हो हमारे दिलमें, तुम्हारी आँखोंमें जैसे शोख़ी
कि जबसे तुम आ गई हो इसमें, नई-नई लहर उठ रही है
ख़ुद अपने जल्वोंमें छुपनेवाले ! तजल्लियोंकी[1] नक़ाब कबतक
उतार दे जिस्मे-नाज़नींसे यह चादरे-नूर[2] मलगजी[3] है
अर्क़ जबींपर[4], लटें परीशाँ, झुकी हैं नज़रें, खुला है दीवाँ[5]
वह ज़ेरे-लब[6] मुसकरा रही हैं, 'जमील' को दाद मिल रही है

---

१. आभाओंकी, २. प्रकाशवान चादर, ३. मैली-कुचैली, ४. पसीना माथेपर, ५. शाइरीका संकलन ग्रन्थ, ६. ओठों-ओठोंमें ।

उठाके शोले हमारे दिलमें, अलावसे दूर चुप खड़ी हो
न डाला जाता है तुमसे पानी, न तापी जाती है आग तुमसे

'जमील' राधाकी अँखड़ियोंने जो रस पिलाया था ज़िन्दगीको
वह क्यों न ग़ज़लोंमें मेरी छलके पियाला दिलका भरा हुआ है

## मुतफ़र्रिक़ कलाम

भूकको आपने ग़ैरत बख़्शी
प्यासको ज़ब्तकी ताक़त बख़्शी
नासबूरीको[1] क़नाअत[2] बख़्शी
और बन्दों पै अता[3] क्या होगी ?

चश्मे-वाइज़को बसीरतकी[4] नज़र
क़ल्बे-मुनअमको[5] मुहब्बतका शरर[6]
आहे-मज़लूमको[7] थोड़ा-सा असर
और शाइरकी दुआ क्या होगी ?

तुझे क्या जो आज दुनियामें हैं क़हतकी[8] बलाएँ
तुझे क्या जो सर्द आहोंसे भरी हैं यह फ़ज़ाएँ[9]
तुझे क्या अगर बरसतीं नहीं खेतपर घटाएँ
तुझे क्या अगर उड़ाती है ज़मीं ग़ुबार सोजा
दिले-बेक़रार सोजा

---

१. बेसब्रीको, २. सन्तोष, ३. कृपा, महर्बानी, ४. बुद्धिमत्ताकी दृष्टि, ५. धनिकके हृदयको, ६. प्रेमकी आग, ७. अत्याचार-पीड़ितकी आहको, ८. दुर्भिक्षकी, ९. बहारें ।

तेरे कानमें यह तेरी ही सदा झनक रही है
न कोई सिसक रहा है, न कोई बिलक रही है
यह दरख़्त बोलते हैं, यह हवा सनक रही है
अरे बावले! यह भूकोंकी नहीं पुकार सोजा
दिले-बेक़रार सोजा

## इस्तराकियत ( साझेदारी )

सदहैफ़[1] वह अहद[2] जिसमें ताक़त न बटे
इफ़लास[3] तो तक़सीम हो, दौलत न बटे
लेकिन वह भी नहीं है, जनताका राज
जिसमें रोटी बटे, हुकूमत न बटे

## शाइर और ख़ुदा

शाइर— ख़ुद अपने क़वानीनमें[4] महसूर[5] हैं, आप
या मंज़रे-बेकसीसे[6] मसरूर[7] हैं आप
सुनते नहीं अपने ख़स्ता हालोंकी पुकार
बे रहम हैं आप या कि मजबूर हैं आप

---

१. सैकड़ों अफ़सोस, २. उस युगपर, शासनपर, ३. दरिद्रता, ४. नियमोंमें, ५. ज़कड़े हुए, फँसे हुए, ६. मजबूरी रूपी दृश्यसे, ७. प्रफुल्ल।

ख़ुदा— दानाए-मआले-ज़ख़्म-ओ-नासूर[1] हैं हम
क्या दाद रसी[2] करें कि माज़ूर[3] हैं हम ?
अपनी नादानियोंसे बेताब हो तुम
अपनी नादानियोंसे मजबूर हैं हम

शाइर— अपनी मनतक़से[4] हमको मसहूर[5] न कर
जो राज़[6] है हममें, हमसे मस्तूर[7] न कर
मजबूर है तू, तो ख़ैर शिकवा[8] नहीं कुछ
मुख़्तार है तू तो हमको मजबूर न कर

ख़ुदा— यह उक़दए सरबस्तः[9] जो वाँ[10] हो जाए
इक शोलए-तूर[11] दिल तेरा हो जाए
समझेगा ख़ुदाकी मुश्किलोंको न कभी
जब तक कि आदमी न ख़ुदा हो जाए

शाइर— बतला दे यही कि हश्र[12] क्या होना है
किस तरहसे तेरा हक़ अदा होना है
चलते-चलते हविसका[13] दम फूल गया
मालूम तो हो कहाँ खड़ा होना है

---

१. ज़ख्म और नासूरोंके परिणामोंसे परिचित, २. न्याय, इंसाफ़, ३. लाचार, ४. दलीलोंसे, ५. मुग्ध, ६. भेद, ७ पोशीदा, छिपा नहीं, ८. शिकायत, ९. गुप्त बात, पेचीदा गुत्थी, १०. खुल जाये, प्रकट हो जाये, ११. तूर पर्वत पर चमकी हुई जैसी आग, १२. नतीजा, प्रलयवाले दिन, १३. तृष्णाका।

ख़ुदा— क्या तुझसे कहूँ कि तुझको क्या होना है
हर गाम पै एक मारिका[1] होना है
ऐ मेरे तुनकमिज़ाज भोले बन्दे
रफ़्ता-रफ़्ता तुझे ख़ुदा होना है

"इक़बाल"से

सूरजका जलाले[2] आबो-गुलसे[3] पूछे
ज़र्रोंके[4] मिज़ाज मुनफ़इलसे[5] पूछे
शाहीनकी[6] अज़मतसे[7] किसे है इन्कार
लेकिन कोई कुञ्जिश्कके[8] दिलसे पूछे

उन्क़ा[9] है तू शाहीनका दमसाज़[10] न बन
शहबाज़[11] न बन 'जमील' शहबाज़ न बन
तू और फ़ज़ामें[12] यह शिकारोंकी तलाश
ऐ तायरे-अर्श[13] नंगे-परवाज़[14] न बन

मोतीसे है, एक बूँद आँसू बहतर
ग़ूलाने-बयाबानसे[15] जुगनू बहतर
असफ़ूरका[16] ख़ूँ तो उसके चंगुलमें नहीं
है आपके शाहीसे[17] तो उल्लू बहतर

---

१. युद्ध २. प्रताप, तेज, ३. जल और फूलसे, ४. कणोंके, ५. शर्मिन्दासे, प्रभाव क़ुबूल करनेवालेसे, ६. बाज़ पक्षीकी, ७. महानतासे, ८. गोरैयाके ९. एक पक्षीका नाम, १०. समर्थक, ११. बाज़ पक्षी, १२. अन्तरिक्षमें, १३. नभचर, १४. पक्षियोंका कलंक, १५. जंगलमें फिरनेवाले भूत-प्रेतोंसे, १६. निर्बलका, १७. बाज़से ।

## ताज़ियाने

आक़िल[1] तुमको सलाम कहते हैं 'जमील'
इस फ़नका तुम्हें इमाम[2] कहते हैं 'जमील'
तुमने दुश्मन पै कल जो एहसान किया
हम उसको भी इन्तक़ाम[3] कहते हैं 'जमील'

गो हाथको तेरे शग़ले-ज़रपाशी[4] है
ज़ज़्बा[5] यह तेरा दलीले-ख़ुशबाशी[6] है
मग़रूर[7] न हो निशाते-ज़हनीके[8] मरीज़
ख़ैरात भी इक तरहकी ऐय्याशी है

कितनोंका कलेजा इससे बिस्मिल[9] होता
मुट्ठीमें उसीके ख़ूँ भरा दिल होता
हंगामे-दुआ[10] लरज़ रहा है जो हाथ
ताक़त होती तो दस्ते-क़ातिल[11] होता

पहले थी बुताने-माहरूकी[12] ख़्वाहिश
बाद उसके हुई नामनिकोकी[13] ख़्वाहिश
जब यह भी गई तो नफ़्से-सरकशपै[14] 'जमील'
ग़ालिब[15] हुई तर्के-आरज़ूकी[16] ख़्वाहिश

---

१. अक़्लमन्द, २. अग्रणी, ३. प्रतिशोध, बदला, ४. बहुत अधिक दानशीलता, ५. भावना, मनोवृत्ति, ६. सहृदयताका प्रमाण, ७. गर्वीला, ८. मानसिक ऐश्वर्य्यके, ९. घायल, १०. प्रार्थनाके समय, ११. वधिकका हाथ, १२. चन्द्रमुखी प्रियाओंकी, १३. अच्छा नाम करनेकी, १४. चतुर, चालाक इन्द्रियों पर, १५. विजेता, प्रभावक १६. इच्छाओंके त्यागकी ।

## सदाए-शिकिस्त

बच्चा तेरा नज़अमें[1] सिसकता होता
कुछ उसने बिलक-बिलकके माँगा होता
उस वक़्त ग़रूरे-किब्रयाई[2] तेरा
तख़लीक़की[3] लानतोंको[4] समझा होता

ज़ीना[5] न हो कोई तेरे बामे-बुलन्दका[6]
यह हौसला है हिम्मते-मुश्किल पसन्दका
अपने बन्दोंसे मुहब्बतका तक़ाज़ा न करो
तुम मेरी जान ख़ुदा हो तो तमन्ना न करो

२७ अप्रैल १९६१ ई० ]

०

१. मृत्यु-समय, २. प्रतिष्ठा, ईश्वरत्वका अभिमान, ३. सृष्टि-निर्माणकी, ४ अभिशापको, ५. सीढ़ी, ६. ऊंचे कमरेका ।

# रविश सिद्दीक़ी

**परिचय**

शाहिद अज़ीज़ 'रविश' १० जुलाई १९११ ई० में उत्तर प्रदेशीय सहारनपुर ज़िलेके ज्वालापुर क़स्बेमें उत्पन्न हुए। क़ुरआन शरीफ़ और उर्दू-फ़ार्सीका ज्ञान आपको घरमें ही प्राप्त कराया गया। आपने हिन्दी-संस्कृत और अँगरेज़ीका भी काम-चलाऊ अभ्यास किया है। गुरुकुल काँगड़ीमें भी आपने विद्याध्ययन किया है। वहाँकी वाक्वर्द्धिनी सभाओंके शास्त्रार्थों और भाषणोंमें भी सम्मिलित होते रहे हैं। 'रविश' साहब बाल्यावस्थासे ही राष्ट्रीय विचारोंके हैं। अतः आपने १० वर्षकी उम्रमें ही १९२१ के असहयोग आन्दोलनसे प्रभावित होकर स्कूल जाना बन्द कर दिया और निजी तौरपर विद्याध्ययन करते रहे।

**शाइरीकी ओर रुचि**

शाइरीकी रुचि जन्मजात है। सात वर्षकी उम्रसे शेर कहने लगे थे। शाइरीमें आप किसीके शिष्य नहीं हैं। प्रारम्भिक दिनोंमें अपने पिता मौलवी तुफ़ैल अहमद साहब 'शाहिद' से मशविरा लेते रहे। फिर अपने अध्यवसाय और लगनसे स्वतंत्र रूपसे शाइरी करने लगे और किशोरा-वस्थामें ही शाइरोंकी श्रेणीमें स्नेह और आदरपूर्वक बिठाये जाने लगे। आपकी बाल्यावस्थासे ही रुचि सुसंस्कृत रही है। अतः आपका प्रारम्भिक कलाम भी शोख़ी और निम्न भावोंसे अछूता रहा है। जो बालक सात वर्षकी अवस्थामें इस तरहके शेर कहता रहा हो, उसके मानसिक सन्तुलन और गम्भीर विचारोंका सहज ही अनुमान किया जा सकता है—

यह मेरे ज़ब्ते-मुहब्बतने[1] की है अजब तासीर[2]
कि उनको ज़ब्ते-मुहब्बतका हौसला[3] न रहा
है रोज़ मेरे गरेबाँसे[4] गुफ़्तगूए-रफ़ू[5]
बहारके लिए क्या कोई मशग़ला[6] न रहा ?

उन्हीं दिनों कही हुई एक दूसरी ग़ज़लका एक शेर यह है—

होने ही को है ऐ दिल ! तकमील मुहब्बतकी[7]
एहसासे-मुहब्बत[8] भी मिटता नज़र आता है

रविश साहब १९२४ ई० तक केवल ग़ज़लें कहते रहे। उसके बाद यानी १३ वर्षकी उम्रसे नज़्मकी तरफ़ भी रुचि हुई। आपकी ग़ज़लोंका एक संकलन 'महरावे-ग़ज़ल' और १२३ अशआरकी नज़्मका संकलन 'कारवाँ' प्रकाशित हुए हैं और नज़्मोंके छः तथा ग़ज़लोंके दो संकलन अभी अप्रकाशित हैं। हम 'रविश' साहबसे आग्रह करते हैं कि उन्हें केवल अपनी फ़ाइलोंकी ज़ीनत न बनाकर शीघ्र-से-शीघ्र प्रकाशित करायें, ताकि और लोग भी लाभान्वित हो सकें।

५ जुलाई १९४८ ई० में विवाह हुआ। पारिवारिक जीवन सुखी है। आप आल इण्डिया रेडियोमें समस्त भारतके उर्दू-कार्यक्रमोंके डायरेक्टर इंचार्ज-जैसे महत्त्वपूर्ण पदपर प्रतिष्ठित हैं और अपने मधुर स्वभाव और भद्र-व्यवहारके कारण सर्वप्रिय हैं।

---

१. गुप्त प्रेमने, प्रेम भावोंको छिपाये रखनेके प्रयासने, २. विचित्रप्रभाव डाला, ३. प्रेम-भाव छिपाना दूभर हो गया, स्वयं प्रेयसी प्रेमोद्‌गार प्रकट करने लगी, ४. कुरते-क़मीज़ या अंगरखे आदिका गला, वह स्थान जिसमें बटन लगाये जाते हैं, ५. रफ़ूकी बातचीत, ६. काम, ७. प्रेम-भावोंकी पूर्ति, ८. प्रेम-चेतना, प्रेमका ज्ञान।

'रविश' साहबको पहले-पहल देखने-सुननेका अवसर सम्भवतः १९३५ ई० के उस मुशाअ़रेमें हुआ, जो कि काँग्रेसकी स्वर्ण-जयन्तीके अवसरपर बुलबुले-हिन्द सरोजनी नायडूकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ था। खद्दरके धवल चूड़ीदार पायजामे और अचकनसे सज्जित, सरपर गान्धी टोपी लगाये—मझोले क़द, छरेरे जिस्म और किताबी चेहरेके रविश साहबने मंचसे अपने मख़सूस तरन्नुममें—

**क्रान्तिकारी शाइरी**

इन्क़िलाब ऐ साकिनाने-अर्ज़े-मशरिक़ इन्क़िलाब

नज़्म पढ़ना प्रारम्भ किया तो मुशाअ़रेमें एक 'हू' का आलम-तारी हो गया और श्रोताओंमें २३-२४ वर्षके नवयुवक 'रविश' के सम्बन्धमें जानकारी हासिल करनेकी उत्सुकता प्रकट होने लगी। "यह जोशीला नौजवान कौन है? किसका शागिर्द है? कहाँका रहनेवाला है? कलामसे मालूम होता है, कि पुराना खिलाड़ी है। यह जोश और वलवला तो ख़ैर नौजवानीके ज़ेवर हैं, मगर इस उम्रके कलाममें यह पुख़्तगी, गहराई और बाँकपन आश्चर्यजनक हैं।" सर्व-साधारण और उस्ताद शाइरोंसे ख़ूब-ख़ूब दाद पानेके बाद 'रविश' साहब नज़्म पढ़कर अपने स्थानपर बैठ गये। उस नज़्मके तीन बन्द यहाँ दिये जा रहे हैं—

ख़ूने-मज़दूरे-हज़ींसे[1] ज़िन्दगी गुलरेज़[2] है
ग़ैरते-फ़रहाद बर्क़े-ख़िरमने-परवेज़[3] है

---

१. शोकाकुल मज़दूरके रक्तसे, २. जीवनमें लालिमा है (भाव यह है कि मज़दूरके परिश्रमपर ही सबका जीवन निर्भर है, उसीके रक्त-पसीनेसे शरीरोंमें आभा आती है), ३. किसान रूपी-फ़रहादका स्वाभिमान-रूपी खलिहान बिजलियों (शोषकों)से छलनी है।

जिसका तेशा आज शोला बार-ओ-आतिश-ख़ेज़[1] है
हाँ वही है कामरानो-कामगारो-कामयाब[2]
इन्क़िलाब ऐ साकिनाने-अर्ज़े-मशरिक़[3] इन्क़िलाब

बर्क़[4] हो आँखोमें दिलमें आतिशे-परवाना[5] हो
ख़ामुशीमें जुरअते-गुफ़्तारका[6] अफ़साना हो
नौजवानो! अब तो हर इक़दाम बेबाकाना[7] हो
ज़िन्दगी कबतक असीरे-ऐतक़ाफ़ो-एहतसाब[8]
इन्क़िलाब ऐ साकिनाने-अर्ज़े-मशरिक़ इन्क़िलाब

होश्यार ऐ ग़ाफ़िलाने-हाले-बरबादे-वतन!
ढूँढ़ती फिरती है तुमको रूहे-नाशादे-वतन[9]
गर हुआ अब भी न तुमको पासे-फ़रियादे-वतन[10]
एशियाका ज़र्रा-ज़र्रा तुमसे माँगेगा जवाब
इन्क़िलाब ऐ साकिनाने-अर्ज़े-मशरिक़ इन्क़िलाब

इस नज़्ममें 'रविश' ने केवल भारतीयोंको ही नहीं, अपितु उन समस्त पूर्वीय देशोंको क्रान्तिकारी परिवर्तनके लिए आह्वान किया, जो

---

१. जिसका तेशा पानी निकालने और आग उगलनेकी क्षमता रखता है, २. सफल, भाग्यवान्, ३. पूर्वीय देशोंके वासियो, ४. बिजली, ५. परवाने जैसी आग, (मरनेकी तड़प), ६. वार्त्ता करनेका साहस, ७. निर्भय, स्वतंत्र, ८. एकान्त और जाँच-पड़तालमें बन्दी रहेगी, यूँ कबतक डर-डरके रहते रहोगे, ९. पराधीन दुःखी जन्मभूमिकी आत्मा, १०. जन्म-भूमिकी पुकारकी मर्यादाका ध्यान।

'रविश' साहबको पहले-पहल देखने-सुननेका अवसर सम्भवतः १९३५ ई० के उस मुशाअ़रेमें हुआ, जो कि कांग्रेसकी स्वर्ण-जयन्तीके अवसरपर बुलबुले-हिन्द सरोजनी नायडूकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ था। खद्दरके धवल चूड़ीदार पायजामे और अचकनसे सज्जित, सरपर गान्धी टोपी लगाये—मझोले क़द, छरेरे जिस्म और किताबी चेहरेके रविश साहबने मंचसे अपने मख़सूस तरन्नुममें—

**क्रान्तिकारी शाइरी**

इन्क़िलाब ऐ साकिनाने-अर्ज़े-मशरिक़ इन्क़िलाब

नज़्म पढ़ना प्रारम्भ किया तो मुशाअ़रेमें एक 'हू' का आलम-तारी हो गया और श्रोताओंमें २३-२४ वर्षके नवयुवक 'रविश' के सम्बन्धमें जानकारी हासिल करनेकी उत्सुकता प्रकट होने लगी। "यह जोशीला नौजवान कौन है? किसका शागिर्द है? कहाँका रहनेवाला है? कलामसे मालूम होता है, कि पुराना खिलाड़ी है। यह जोश और वलवला तो ख़ैर नौजवानीके ज़ेवर हैं, मगर इस उम्रके कलाममें यह पुख़्तगी, गहराई और बाँकपन आश्चर्यजनक है।" सर्व-साधारण और उस्ताद शाइरोंसे ख़ूब-ख़ूब दाद पानेके बाद 'रविश' साहब नज़्म पढ़कर अपने स्थानपर बैठ गये। उस नज़्मके तीन बन्द यहाँ दिये जा रहे हैं—

ख़ूने-मज़दूरे-हज़ींसे[1] ज़िन्दगी गुलरेज़[2] है
ग़ैरते-फ़रहाद बर्क़े-ख़िरमने-परवेज़[3] है

---

१. शोकाकुल मज़दूरके रक्तसे, २. जीवनमें लालिमा है (भाव यह है कि मज़दूरके परिश्रमपर ही सबका जीवन निर्भर है, उसीके रक्त-पसीनेसे शरीरोंमें आभा आती है), ३. किसान रूपी-फ़रहादका स्वाभिमान-रूपी खलिहान बिजलियों (शोषकों)से छलनी है।

जिसका तेशा आज शोला बार-ओ-आतिश-ख़ेज़[1] है
हाँ वही है कामरानो-कामगारो-कामयाब[2]
इन्क़िलाब ऐ साकिनाने-अर्ज़े-मशरिक़[3] इन्क़िलाब

वर्क़[4] हो आँखोमें दिलमें आतिशे-परवानों[5] हो
ख़ामुशीमें जुरअते-गुफ़्तारका अफ़सानों[6] हो
नौजवानो! अब तो हर इक़दाम बेबाकाना[7] हो
ज़िन्दगी कबतक असीरे-ऐतक़ाफ़ो-एहतसाब[8]
इन्क़िलाब ऐ साकिनाने-अर्ज़े-मशरिक़ इन्क़िलाब

होश्यार ऐ ग़ाफ़िलाने-हाले-बरबादे-वतन!
ढूँढ़ती फिरती है तुमको रूहे-नाशादे-वतन[9]
गर हुआ अब भी न तुमको पासे-फ़रियादे-वतन[10]
एशियाका ज़र्रा-ज़र्रा तुमसे माँगेगा जवाब
इन्क़िलाब ऐ साकिनाने-अर्ज़े-मशरिक़ इन्क़िलाब

इस नज़्ममें 'रविश' ने केवल भारतीयोंको ही नहीं, अपितु उन समस्त पूर्वीय देशोंको क्रान्तिकारी परिवर्तनके लिए आह्वान किया, जो

---

१. जिसका तेशा पानी निकालने और आग उगलनेकी क्षमता रखता है, २. सफल, भाग्यवान्, ३. पूर्वीय देशोंके वासियो, ४. बिजली, ५. परवाने जैसी आग, ( मरनेकी तड़प ), ६. वार्त्ता करनेका साहस, ७. निर्भय, स्वतंत्र, ८. एकान्त और जाँच-पड़तालमें बन्दो रहेगी, यूँ कबतक डर-डरके रहते रहोगे, ९. पराधीन दुःखी जन्मभूमिकी आत्मा, १०. जन्म-भूमिकी पुकारकी मर्यादाका ध्यान।

पश्चिमीय देशोंके अत्याचारों और साम्राज्यवादकी घातक नीतियोंके कारण पददलित हो रहे थे। पूर्वीय देशोंके उन किसान और मज़दूरोंके प्रति भी सहानुभूति एवं समवेदना व्यक्त की, जो पूँजीवादी शोषण मनोवृत्तिके दल-दलमें फँसे हुए थे।

रविश खरे देश-भक्त और राष्ट्रवादी कवि हैं। उन्हें पराधीनतासे स्वभावतः घृणा है। वे पराधीन देशोंको ग़ुलामीकी ज़ंजीर काटनेकी प्रेरणा देते हैं, किन्तु अत्यन्त संयत और नपे-तुले शब्दोंमें—

ज़ुल्मो-बेदादकी बुनियादको[1] ढानेके लिए
बिजलियाँ क़स्ने-ग़ुलामी पै[2] गिरानेके लिए
नक़्शे-तज़वीरे-तमद्दुनको[3] मिटानेके लिए
आतिशे-फ़ित्नए-मग़रिबको[4] बुझानेके लिए
शमए-बेदारिए-मशरिक़को फ़रोज़ाँ[5] कर दें

१९२८ ई० में बारडोलीके किसानोंने सरदार पटेलके नेतृत्वमें सत्याग्रह करके अंग्रेज़ी सरकारसे विजय प्राप्त की, तो उनके अभिनन्दनमें 'रविश' ने जो नज़्म कही, उसके दो बन्द ये हैं—

सर-फ़रोशोंको[6] शुजाअ़तका[7] धनी देख लिया
जोशपर वलवलए-कोहकनी[8] देख लिया
मरहबा जज़्बए-हुब्बुलवतनी[9] देख लिया
नातवाँ[10] क़ूवते-अग़ियारसे[11] टकराये हैं
तेरे बच्चे रसन-ओ-दारसे[12] टकराये हैं

---

१. अत्याचार और निरंकुशताकी नींवको, २. पराधीनताके गढ़पर, ३. सभ्यताके धोकेको, ४. पाश्चात्य देशोंके षड्यंत्रकी आगको, ५. पूर्वीय देशोंकी जागरणरूपी मशालको जला दें, ६. सर देने वालोंको, ७. वीरताका, ८. फ़रहाद जैसा मज़दूर–किसानका जोश और उत्साह, ९. देश-भक्तिकी भावनाओंका अभिनन्दन, १०. कमज़ोर, निर्बल, ११. शत्रुकी ताक़तसे, १२ सूली और फाँसीसे।

यह बहादुर, यह फ़िदाई[1], यह रज़ाकार[2] किसान
यह उलुल-अज़्म, यह जाँबाज़[3], यह ख़ुद्दार[4] किसान
तेरी ग़ैरतके निगहबानो-निगहदार[5] किसान
मर्दे-मैदाँ हैं कि बढ़ते ही चले जाते हैं
पाँव ग़ैरोंके उखड़ते ही चले जाते हैं

भारतकी नौका जब-जब स्वराज्य-घाटके समीप पहुँचनेको हुई, तब-तब सम्प्रदायी मगरमच्छोंने उत्पात मचाकर उसे तूफ़ानों और भँवरोंमें फँसानेका उपक्रम किया। इन मज़हबी दीवानों ओर फ़िर्क़ा-परस्तोंकी करतूतोंके कारण आपदाओं और विघ्नोंके तूफ़ान आये। यह कोई ढकी-छिपी बात नहीं रही है, सभी जानते हैं। रविशने भी इनके कारनामोंसे तंग आकर 'फ़िर्क़ापरस्त' नज़्म कही थी, जिसके तीन बन्द इस प्रकार हैं—

जुर्म है तेरी शरीअ़तमें[6] शगुफ़्ते-रंगोबू[7]
लाला-ओ-गुलके तबस्सुमसे[8] ख़फ़ा होता है तू
ऐ ख़िज़ाँ-बुनियाद[9]! ऐ ग़ारतगरे-हुस्ने-चमन[10]
शर्म ऐ नंगे-वतन[11]!

---

१. प्राण न्योछावर करनेवाले, २. स्वयंसेवक, ३. ऊँचे इरादेवाले और जानकी बाज़ी लगानेवाले, ४. स्वाभिमानी, ५. लाज, शर्मके रक्षक, ६. मजहबी क़ानूनमें, फ़िर्क़ापरस्तीमें, ७. जनताको मुसकराते देखना पाप है, ८. फूलोंकी मुसकानसे, ९. पतझड़की नींव, वीरानेके निर्माता, १०. वतन रूपी उद्यानको नष्ट करनेवाले, ११. देशके कलंक।

तू चिराग़े-बज़्मे-उल्फ़तको बुझाकर शाद[1] है
दौलते-यज़दाँको[2] मिट्टीमें मिलाकर शाद है
क्या न फूटेगी तेरे दिलमें सदाक़तकी[3] किरन
शर्म ऐ नंगे-वतन !

दर्दे-दिल ही जन्नते-गुमगश्ता[4] है, पहचान ले
है मुहब्बत ही हयाते-सरमदी[5] पहचान ले
तू अगर मेरा नहीं बनता, न बन, अपना तो बन
शर्म ऐ नंगे- वतन !

रविशका यह दृढ़ विश्वास है कि विश्वमें पूँजीवादी मनोवृत्ति, ऊँच-नीचकी भावना, जात-पाँतकी कलुषित विचार-धारा और मजहबी उन्मादका जबतक अस्तित्व रहेगा, सुख-शान्ति नसीब नहीं हो सकती। फ़र्माते हैं—

यह तहज़ीबे-ज़र-अफ़्शाँ[6] दाग़दारे-ख़ूने-आदम[7] है
यह ख़ूँ-आशामिए-सरमाया[8] क़ज़्ज़ाक़ीसे[9] क्या कम है
अब इस लानतको दुनियासे मिटा देनेका वक़्त आया

---

१. मुहब्बत रूपी जलसोंके दीपक बुझाकर प्रसन्न है, २. ईश्वरीय वैभवको, ३. सचाईकी किरण, ४. छिपी हुई जन्नत, ५. अमर जीवन, ६. पूँजीवादी सभ्यता, धन-वैभवका गर्व, ७. मानव-रक्तसे रंगीन है, ८. रक्तलोलुप धन सत्तावाद, ९. लुटेरेपनेसे।

है रौशन क़स्रे-दौलतमें[1] चिराग़े-सरखु़र्शी[2] अबतक
ख़फ़ा है झोंपड़ोंसे ज़िन्दगीकी रौशनी अब तक
अँधेरेमें नई शमएँ जला देनेका वक़्त आया

तमद्दुनॅ[3] ख़ुद-फ़रेबी[4] और सियासत[5], तंग दामानी[6]
बहुत ग़मनाक है, काशानए-आदमॅकी वीरानी
अब इस उजड़े हुए घरको बसा देनेका वक़्त आया

यह तूफ़ाने-हसर्द[8], यह साज़िशे-बुग़्ज़ो-रिया[9] कबतक ?
यह नफ़रत, आह ज़ंजीरे-दरे-ख़ल्क़े-ख़ुदा[10] कबतक ?
हर-इक दर पर मुहब्बतकी सदा देनेका वक़्त आया

**इश्क़ और मुहब्बत**

मुहब्बतको 'रविश' विश्वकी सर्वश्रेष्ठ निधि मानते हैं। मुहब्बतको वे ईश्वर, धर्म, सभ्यता, संस्कृति सबसे पवित्र और आवश्यक मानते हैं। १२३ अशआ़रकी 'कारवाँ' नज़्मका इन चार शेरोंमें इस तरह सार खींचा है—

---

१. पूँजीवादके गढ़में, २. आनन्द-वैभवके दीपक प्रज्वलित हैं, ३. सभ्यता, ४. आत्म-छल, ५. राजनीति, ६. संकीर्ण मनोवृत्ति, ७. मानवताका निवासगृह शोकपूर्ण और उजाड़ है, ८. ईर्ष्याका तूफ़ान, ९. द्वेष और मायाचारी, १० ईश्वरीय सृष्टिके द्वारकी जंजीर (सांकल) कबतक लगी रहेगी।

ला-मकाने-कौकबे-तक़दीरे-आदम[१] इश्क़ है,
पासबाने-अज़मते-तामीरे-आदम[२] इश्क़ है,
ख़्वाबे-आदम[३] इश्क़ है, ताबीरे-आदम[४] इश्क़ है
इश्क़ है, हाँ इश्क़ है मेमारे-क़स्रे-दो जहाँ[५]

ज़िन्दगी ज़िंगारे-आईना[६] है, आईना है इश्क़
संग है मामूरए-कौनैन[७] और शोला[८] है इश्क़
इल्म बरबत[९] है, अमल मिज़राब[१०] है नग़्मा[११] है इश्क़
ज़र्रा-ज़र्रा[१२] कारवाँ[१३] है, इश्क़ ख़िज़्रे-कारवाँ[१४]

इश्क़ो-मुहब्बत संबन्धी 'रविश' की ग़ज़लोंके चन्द शेर यहाँ और दिये जा रहे हैं—

---

१. मनुष्यके भाग्यरूपी नक्षत्रको चमकाने वाला प्रेम ही ईश्वर है, २. मानव-निर्माणकी प्रतिष्ठाका रक्षक प्रेम ही है, आदमीमें आदमीयत इश्क़से आती है, ३. मनुष्यका स्वप्न प्रेम है, ४. स्वप्नका फल प्रेम ही है, ५. लोक-परलोक रूपी भवनोंका निर्माता प्रेम ही है, ६. प्रेम तो स्वच्छ दर्पण है, और प्रेमके सिवा जो कुछ जीवनमें है, वह दर्पण पर मैल है, ७. सांसारिक वस्तुएँ तो पत्थर हैं, ८. प्रेम जीवनमें प्रकाश है, ९. ज्ञान वाद्य है, १० आचरण मिज़राब है, ११. संगीत प्रेम है, १२. कण-कण, १३. यात्री मुसाफ़िर, १४. प्रेम पथ-प्रदर्शक है।

उसने-मंशाए-इलाहीको[1] मुकम्मिल[2] कर दिया
अपनी आँखोंपर लिये, जिसने मुहब्बतके क़दम
इश्क़ने तोड़ा दिले-शैख़ो-बरहमनका ग़रूर[3]
इश्क़ है, ग़ारतगरे-काशानए-दैरो-हरम[4]

बग़ैर इश्क़ ख़राबाते-ज़िन्दगी[5] तारीक[6]
अगर यह शमअ़ फ़रोज़ाँ[7] नहीं तो कुछ भी नहीं

क्या मुहब्बतके सिवा है कोई मक़सूदे-हयात[8]
कौन कहता है मुहब्बतमें ज़ियाँ[9] होता है?

मैं निसारे-रहमते-इश्क़[10] हूँ कि बग़ैर इश्क़के दहरमें
न कोई निशात[11] निशात है, न कोई मलाल मलाल[12] है

दहरमें[13] नक़्शे-मुहब्बतको[14] मिटाकर इक बार
कोई सौ बार बनाये तो बनाये न बने,

---

१. ईश्वरीय इच्छाको, २. पूर्ण, ३. मुस्लिम-हिन्दू-धर्म्माचार्योंका अभिमान, ४. मन्दिर-मस्जिदके झगड़ोंको मुहब्बत नष्ट कर देती है, ५. जीवन रूपी मदिरालय, ६. प्रकाशरहित, ७. प्रकाशमान, जाज्वल्यमान, ८. जीवनका लक्ष्य, ९. नुक़सान, १०. प्रेमकी कृपाओंपर न्योछावर, ११. सुख, आनन्द, १२. दुःख, रंज, १३. संसारमें, १४. प्रेम-मार्गको, मुहब्बतके चिह्नको।

## मानवता

मानवताकी महानता और आवश्यकताको 'रविश' ने इस तरह व्यक्त किया है—

आदमीयत है फ़रिश्तोंसे बहुत दूर 'रविश' !
वाइज़े-शहरको दुशवार है इंसाँ होना

आदमीयतकी बलन्दी लेकर
बादशाहोंकी निगाहोंसे गुज़र

वह इंसाँ इन्क़िलाबे-आस्माँकी राह तकता है
कि जिसका मुन्तज़िर[1] है, इन्क़िलाबे-आस्माँ अबतक

नज़रके सामने दम तोड़ते रहें इंसाँ
यह ज़िन्दगी हो तो इस ज़िन्दगीसे क्या हासिल ?

यह है दौरे-जलाले-इब्ने-आदम[2]
न सुल्तानी न ख़ाक़ानीके[3] दिन हैं

१. प्रतीक्षा करनेवाला, २. मानवपुत्रोंके गौरवका युग, ३. बादशाहत और रईसीके ।

तक़द्दुस[1] हो फ़रिश्तोंको मुबारक
'रविश' अब ख़ल्क़े-इन्सानीके[2] दिन हैं
महो-ख़ुर्शीद-अंजुम हैं, क़दमबोस[3]
फ़रोगे-हुस्ने-इन्सानीके[4] दिन हैं

ग़मे-दौराँ[5] ग़मे-जानाँसे[6] गुज़रकर ऐ दोस्त !
आज हर ग़मको शरीके-ग़मे-इंसाँ[7] करदें

यह जुनूने-बन्दगी-ओ-ख़्वाजगी सौदाए-ख़ाम[8]
और ही कुछ है जहाँमें इब्ने-आदमका मुक़ाम[9]
दिल न हो मस्जूदे-ख़ुद्दारी[10] तो इंसाँ है ग़ुलाम
मर्द महनतकश[11] हो कोई या कोई किशवर-सताँ[12]

अज़मते-इंसाँ[13] नहीं है, नाज़े-दाराईका[14] नाम
आदमीयत है ख़ुद इंसाँकी पज़ीराईका[15] नाम
जल्द इस आईने-ज़ुल्मतको[16] मिटाया जायगा
क़ैसरो-क़स्रीको[17] अब इंसाँ बनाया जायगा

---

१. पवित्रता, श्रेष्ठता, २. जनताकी सेवाके, ३. चाँद, सूरज, नक्षत्र सभी चरण छूनेको उद्यत हैं, ४. मनुष्योंकी उन्नतिका युग है, ५. संसारकी चिन्ताओं, ६. प्रेयसीके विरह-कष्टोंको भूलकर, ७. मानव-दुःखमें सम्मिलित हो जायें, ८. नीच-ऊँच या छोटे-बड़ेका भेद-भाव व्यर्थ हैं, ९. मानवोंका वास्तविक कर्तव्य, १०. स्वाभिमानका उपासक यदि हृदय नहीं है तो वह गुलाम है, ११–१२ चाहे वह मजदूर हो या धनी, १३. मनुष्यकी प्रतिष्ठा, १४. बादशाही घमण्डका, १५. नम्रताका, १६. अन्धकारमें डालनेवाले क़ानूनको, १७. बड़े-छोटे सबको।

इस ज़मींपर इक नया आलम बसाया जायगा
जिसमें हर इंसान होगा, आप अपना पासबाँ[1]

फ़िक्रे-दरवेशी[2] नहीं, तमकीने-सुल्तानी[3] नहीं
शहरयारी किश्वरआराई, जहाँबानी[4] नहीं
कोई मंज़िल इन्तहाए-ओजे-इंसानी[5] नहीं
कोकबे-तक़दीरे-आदम है फ़रोगे-लामकाँ[6]

कौन कह सकता है ख़्वाबे-रायगाँ[7] है ज़िन्दगी
ऐ अमीने-होश[8]! कैफ़े-जाविदाँ[9] है ज़िन्दगी
जादा पैमाँ,[10] कारवाँ-दर-कारवाँ है ज़िन्दगी
ज़िन्दगी मौजे-रवाँ जूए-रवाँ, बहरे-रवाँ[11]

जल्वागाहे-दिलमें[12] है, सहराए-ग़मकी[13] क्या बिसात?
ग़म ख़ुमारे-यकनफ़स[14] है, दिल सरूरे-जाविदाँ[15]

---

१. रक्षक, २–३ जहाँ दीनता या राज्य-वैभवका भान न हो, ४. शासन और जागीरदारी न हो, ५. मानवताकी महानताकी कोई सीमा नहीं, ६. मनुष्यका भाग्य-नक्षत्र ही ईश्वरको प्रकाश देता है, ७. व्यर्थ स्वप्न, ८. होशकी धरोहरके रक्षक, ९. स्थायी आनन्द, १०. जीवन रूपी यात्री दल पगडण्डीपर बढ़ा जा रहा है, ११. जीवन बहती हुई लहर, नहर और समुद्र है, १२. हृदय-मन्दिरमें, १३. दुःखरूपी मरुभूमिकी बिसात क्या, १४. दुःखका नशा क्षणिक है, १५. हृदय ही स्थायी नशा है।

है यही ज़हराबे-ग़म[1] तज़ईने-मीनाए-हयात[2]
है लिबासे-दर्दमें पिन्हाँ[3] जमाले-क़ायनात[4]
ज़िन्दगीकी आगमें जलना है, शायाने-नजात[5]
यह ख़ुद अफ़रोज़ी[6] है, बेशक शेवए-रोशन दिलाँ[7]

जब्रको हाइल[8] समझकर लड़खड़ाना जुर्म है
अद्लको रूपोश[9] पाकर, मुँह छुपाना जुर्म है
रू-शनासे-वक्त़[10] अब दामन बचाना जुर्म है
ज़िन्दगी ख़ुद ले रही है, ज़िन्दगीका इम्तहाँ

...

यह हवादिस[11] यह ग़मे-दौराँ,[12] यह तुग़ियाने-महन[13]
फ़ित्नए - औरंगो-अफ़सर,[14] इश्वए - दारो - रसन[15]
कब उन्हें ख़ातिरमें लाता है दिले-बातिल-शिकन[16]
बादलोंसे भी कहीं रुकता है ख़ुरशीदे-रवाँ[17]

---

१–२. जीवन-मदिराका सौन्दर्य दुःख है, ३–४. विश्वासका सौन्दर्य्य दुःखमें छिपा हुआ है, ५. आत्मशुद्धिकी महत्ता, जीवनके अनुकूल, ६–७. परिष्कृत मस्तिष्क वालोंको प्रकाशमें लानेका साधन, ८. अत्याचारको बाधा समझकर, ९. न्यायका अभाव देखकर, १०. समयकी गति जाननेवाले, ११. दुर्घटनाएँ, १२. ज़मानेके रंज, १३. दुःखकी बाढ़, १४. शासकोंके षडयन्त्र, १५. सूली-फाँसीके दृश्य, १६. झूठको मिटानेवाला, १७. चलता हुआ सूर्य्य ।

## पुरुषार्थ

डूब जाये कि सलामत रहे किश्ती तेरी
न बढ़ा हाथ कभी ख़िज़्रके दामनकी तरफ़

क्यों शिकवए - आलामे-ज़माना[1] नहीं करते ?
एहबाबे-गुरेज़ाँ[2] है कि ख़ुद्दार[3] हैं हम लोग

बहुत बुलन्द है दिलका मुक़ामे-ख़ुद्दारी[4]
मगर शिकस्तका इमकाँ[5] नहीं तो कुछ भी नहीं

## धर्म-निरपेक्षता

हमें दैरो-हरमके[6] तफ़रक़ोंसे[7] काम ही क्या है
सिखाया है, किसीने अजनबी बनकर गुज़र जाना

कुछ यहाँ है, न वहाँ, जल्वए-जानाँके सिवा[8]
आख़िर इस कश-म-कशे-दहरो-हरमका बाइस[9] ?

अब इससे क्या ग़रज़ यह हरम है कि दैर है
बैठे हैं हम तो सायए-दीवार देखकर

---

१. संसारकी मुसीबतोंकी शिकायत, २. इष्ट-मित्र हमारे इस स्वभावसे चिन्तित हैं, ३. स्वाभिमानी, ४. स्वाभिमानका दर्जा, ५. असफल होनेकी सम्भावना, ६. मन्दिर-मस्जिदके, ७. झगड़ोंसे, मन-मुटावसे, ८. प्रियतमाके चमत्कारके सिवा, ९. मन्दिर-मस्जिदके झगड़ोंका कारण क्या है ?

## ज़ाहिद

ज़ाहिद हद्दे-होशो-ख़िरदमें रहा असीर[1]
नादाँने ज़िन्दगी ही को ज़िन्दाँ[2] बना दिया

हमको शिकवा तो नहीं, शैख़ो-बरहमनसे मगर—
बेग़रज़ कुफ़्र ही उनका है, न इस्लाम इनका

हरमसे[3] लाके जलाई है, शमअ़ वाइज़ने
बुझा-बुझा-सा चिराग़े-शराबख़ाना था

बात इतनी-सी है, ऐ वाइज़े-अफ़लाक नशीं![4]
क्या मिलेगा उसे यज़दाँ[5] जिसे इंसाँ न मिला

'रविश' साहब देशभक्त राष्ट्रवादी मुसलमान हैं। क्रान्तिकारी विचारोंके होते हुए भी बहुत शान्त और सौम्य हैं। आपके कलाममें इन्क़िलाबी घन-गरजकी अपेक्षा सावनी रिमझिमका समाँ है। आप तोड़-फोड़ एवं विध्वंसके विपरीत निर्माणकार्य्यमें विश्वास रखते हैं। इन्क़िलाबकी धुनमें आप शिष्टता और सभ्यताका परित्याग नहीं करते। सदाचर और भद्रताको मानव-कल्याणके लिए बहुत जरूरी समझते हैं। आपके कलाममें अत्याचारके प्रति आवेश, सामन्तवादके प्रति विद्रोह और पोंगापन्थके प्रति व्यंग्यके भाव मिलते हैं, किन्तु बहुत संयत और नपे-तुले शब्दोंमें।

---

१. अक़्ल और होशकी सीमाओंमें क़ैद, २. क़ैदख़ाना, ३. मस्जिदसे; ४. ज़मींपर रहकर हवाई बातें करनेवाले, व्याख्यानदाता जो! ५. ईश्वर।

'रविश' किसान-मज़दूरोंकी हिमायतके बहाने धनिक वर्गको न तो ऐसे कोसने देते हैं कि सुनकर भटियारियाँ भी कानों पर हाथ रख लें और न पूँजीवादियोंको कामुक कुत्ता सिद्ध करनेके लिए टखयारियोंका अश्लील और घिनौना चित्र ही खींचते हैं। वे अपने मनोभाव इस कौशल और भद्रतासे व्यक्त करते हैं, कि शील-सौजन्यकी रेखा भी अक्षुण्ण बनी रहे और कलामका प्रभाव भी देर तक रहे। द्वितीय महायुद्धकी विभीषिका स्वरूप बंगालमें पड़े अकालको लेकर बहुत-से मनचलोंने चटखारे ले-लेकर क्षुधापीड़ित नारियोंकी विवशताका काल्पनिक चित्र खींचते हुए, उनके अर्द्धनग्न शरीर और इस्मत-फ़रोशीके जहाँ घिनौने रंग भरे हैं, वहाँ रविश इससे अधिक कहनेका साहस न बटोर सके—

पी लिया फ़ाक़ोंने कितने नौजवानोंका लहू
लुट गये ग़ुरबतमें[1] कितने, कारवाने-रंगो-बू[2]
कितनी कलियाँ अब न दीखेंगी कभी ख़्वाबे-नमू
कितनी रातें हो गईं महरूमे-शमए-आबरू[3]

तू यह अफ़साना तमद्दुनके निगहबानोंसे[4] सुन
वोह अगर चुप हैं तो ख़ुद मज़लूम[5] इन्सानोंसे सुन

'कितनी रातें हो गईं महरूम-शमये-आबरू' इस एक मिसरेमें रविशने सब कुछ कह दिया। यही एक मिसरा हमारे दुर्दिनों और विवशताओंका पूरा इतिहास है। रविशके यहाँ—शोषितों-असहायों, दीन-दुखियोंके प्रति समवेदना है, व्यथा है, टीस है, तड़प है, किन्तु वे सब शिष्टताकी सीमाका

---

१. परदेशमें, २. सौन्दर्यका यात्री दल, ३. शील-प्रकाशसे रहित, ४. सभ्यताके रक्षकोंसे, ५. अत्याचार-पीड़ितोंसे।

उल्लंघन नहीं करते। 'रविश' विश्वके सभी दलित मनुष्योंका उत्थान चाहते हैं। उनके यहाँ रंग, जात-पाँत और देशका भेद-भाव नहीं। मानवताको संसारकी श्रेष्ठ वस्तु और प्रेमको बहुत पवित्र और अक्षुण्ण निधि समझते हैं।

## ग़ज़लोंसे चुने गये शेर

चाक हो सीनए-कौनैन[1] तो खुल जाये यह राज़[2]
ज़िन्दगी दर्द है, और दर्द सरापाए-ग़ज़ल[3]

तेरा ग़म, राज़ मेरा, ख़ामोशी मेरी, सुख़न[4] मेरा
यही है, रूह[5] मेरी, हुस्न मेरा, पैरहन[6] मेरा
मेरा मस्कन[7], मेरी मंज़िल, न दुनिया है न उक़्बा[8] है
तेरे दिलके किसी गोशेमें[9] था शायद वतन मेरा
बहार आते ही मुझको अपने वीरानेकी याद आई
ख़िज़ाँ[10] जब तक रही, दिल था निगहबाने-चमन[11] मेरा
बहाने और भी हैं शामे-ग़मके मुसकरानेको
'रविश'! अब तज़किरा[12] करती है क्यों सुबहे-वतन मेरा?

तेरे एहसासे-तग़ाफुलको[13] ख़बर तक भी न हो
यूँ भी इक रोज़ मेरी ख़िल्वते-ख़ामोशमें[14] आ

---

१. विश्वका सीना (अन्तरंग) उघड़ जाय, २. भेद, ३. शेरका आशय यह है कि विश्व व्यथा-वेदनासे ओत-प्रोत है और उसे व्यक्त ग़ज़ल द्वारा किया जाता है, ४. वाणी, वार्ता, ५. आत्मा, ६. परिधान, लिबास, ७. निवास, ८. परलोक, ९. कोनेमें, १०. पतझड़, ११. उद्यानका रक्षक, १२. बयान, ज़िक्र, १३. उपेक्षाकी भावनाको, १४. मौन एकान्तमें।

तुझ पै क़ुर्बां[1] मेरे दिलकी हर-इक बे-ख़बरी[2]
आ ! इसी मंज़िले-एहसासे-फ़रामोशमें[3] आ
इश्क़ वाबस्तए-ज़ंजीरे-जुँनूँ[4] कब है 'रविश' !
हुस्ने-ख़ुदबींकी[5] तमन्ना है तो ख़ुद होशमें आ

हमें रस्मे-सफ़र आई न अन्दाज़े-क़याम आया
न जाने हम कहाँ होंगे, अगर उनका पयाम[6] आया
दयारे-रंगो-निकहतमें[7] गुज़र क्या होशमन्दोंका
यह पैग़ामे-बहार[8] आया तो दीवानोंके नाम आया
वही रंगे-तग़ाफ़ुल है, वही नाज़े-तग़ाफ़ुल[9] है
न जज़्बे-शौक़[10] काम आया, न तर्के-शौक़[11] काम आया
मुहब्बतको सँभाला बार-हा[12] तेरे तसव्वुरने[13]
रहे-तर्को-तलबमें[14] जब कोई मुश्किल मुक़ाम आया
दिले-ख़िल्वत-नशीं[15] उलझा रहा अपने हिजाबोंमें[16]
हज़ारों बार छुप-छुपकर कोई बालाए-बाम[17] आया

किसी सूरत, किसी उनवाँसे तलाफ़ी[18] न हुई
किस क़दर तल्ख़ हक़ीक़त[19] है न मिलना तेरा

---

१. न्योछावर, २. हृदयको तल्लीनता, चित्तका बेसुधपन, ३. विस्मरण भावनाके मार्गसे, ४. उन्मादकी ज़ंजोरसे बँधा हुआ, ५. वास्तविक सौन्दर्य्यकी अभिलाषा, ६. सन्देश, बुलावा, ७. रंग-रूपकी दुनियामें, ८. बहारका सन्देश, ९. उपेक्षाके ढंग—हाव-भाव, १०. चाहतका भाव, ११. चाहतसे मुख मोड़ना, १२. अनेक बार, १३. चिन्तनने, ख़यालने, १४. अभिलाषा-अनभिलाषाओंके मार्गमें, १५. एकान्तप्रिय हृदय, १६. लज्जाओंमें, १७. छतपर, कमरेके ऊपर, १८. किसी भी प्रकार ; पूर्ति, १९. कटुसत्य।

ज़िन्दगीने तेरे मिलनेका बहाना समझा
वर्ना दर अस्ल क़यामत है, न मिलना तेरा

यहाँ रहज़नो[1]-रहनुमा[2] एकथे
तेरी राहमें कौन हाइल[3] न था
वह अब सोचते हैं कि हाले-'रविश'
यहाँ तक तग़ाफ़ुलके क़ाबिल[4] न था

हविसको[5] आ गया है, गुल खिलाना
ज़रा ऐ ज़िन्दगी ! दामन बचाना
हज़ार अफ़सुर्दगी[6] चीं-बर-जबीं[7] हो
न छूटेगा कलीका मुसकराना
ग़नीमत हैं मेरी बरबादियाँ भी
सिखाया है तुझे दामन बचाना

मैं बन सका न तेरा, यह बजा[8] सही लेकिन
किसीको क्यों यह गुमाँ[9] हो, नहीं है तू मेरा

---

१. लुटेरा, २. पथ-प्रदर्शक, ३. बाधक, ४. उपेक्षा योग्य, ५. कामुकताको, तृष्णाको, ६. उदासीनताएँ-मुर्झाहटें, ७. त्योरी चढ़ायें, ८. मुनासिब, ९. सन्देह।

क्या यही दरमाने-ग़म[१] था जिसने ऐ चश्मे-करम[२]!
और भी कुछ दर्दे-महरूमीको[३] रुसवा[४] कर दिया
हुस्ने-ख़ुदवींको अज़लसे थी किसीकी जुस्तजू[५]
ज़िन्दगीने क्यों मेरी जानिब[६] इशारा कर दिया ?
हुस्नके रुख़पर तो ऐ मंसूर ! पर्दा ही रहा
इश्क़की मजबूरियोंको तूने रुसवा कर दिया

उन्हें नक़ाब उठाना भी हो गया दुश्वार
कुछ इस तरहसे निगाहोंने इज़दहाम[७] किया
रहे-तलबमें कहाँ इम्तयाज़े - दैरो - हरम[८]
जहाँ किसीने सदा[९] दी, वहीं क़याम किया
दिले-'रविश'को तेरे इन्तज़ारने ऐ दोस्त !
चिराग़े-सुबह किया आफ़ताबे-[१०]शाम किया

गुमान बादए - इशरत मेरे सुबू पै[११] न कर
है इसमें ज़हर भी शामिल मेरे लहूके सिवा

---

१. दुःखोंका इलाज, २. कृपादृष्टि, ३. वंचित रहनेके क्लेशको, ४. वदनाम, ५. रूप जो अनादि कालसे अपनेको दिखानेके लिए लालायित था, ६. तरफ़, ७. भीड़, मजमा ( भाव यह है कि मुखपर उत्सुक आँखोंकी भीड़ एकत्र हो गई ), ८. चाहतके मार्गमें मन्दिर-मस्जिदका भेद-भाव, ९. आवाज़, १०. प्रातःकालीन दीपक और सन्ध्या-कालीन सूर्य्य जैसा निस्तेज, ११. मेरे मदिरा-पात्रमें आनन्दकारक सुराका भरम न कर ।

हरीसे-ऐश[1] नहीं हूँ मगर ख़ुशी यह है
तेरी निगाहसे पिन्हा[2] रहा मलाल[3] मेरा
सकूते-नाज़[4] है क्यों इज़्तराब आमादा[5]?
कुछ इस क़दर तो परेशाँ नहीं है हाल मेरा

हज़ारों इन्क़िलाब आते रहेंगे
बदल जायेंगे आदाबे-वफ़ा[6] क्या
बहुत वुसअत[7] है, दामाने-नज़रमें[8]
किसीकी कमनिगाहीका[9] गिला क्या
बहुत ढूँढोगे हमको, हम न होंगे
गुरेज़ाँ[10] हमसे फिरती है सबा[11] क्या

हरम[12] तक एक ख़ामोशी है तारी[13]
यह बुतख़ानेमें कल मज़कूर[14] क्या था?

---

१. सुखका लोभी, २. छिपा हुआ, ३. रंज, दुःख, ४. अभिमानका मौन, ५. बेचैनी प्रकट करनेको उत्सुक, ६. भलाइयोंके नियम, ७. विशालता, विस्तीर्णता, ८. आँखोमें, ९. संकुचित दृष्टिका, १०. अलग-अलग भागी हुई, ११. हवा, १२. मस्जिद तक, १३. छाई हुई, १४. ज़िक्र।

न सोज़े-ग़मको[1] समझा और न दर्दे-दिलको पहचाना
कहाँ दुनियाने हुस्नो–इश्ककी महफ़िलको पहचाना ?
रहा ना-आश्ना, जिनका तसव्वुर रहनुमाओंसे[2]
उन्हीं ग़मगुश्तगाने-शौक़ने मंज़िलको पहचाना[3]
मजाले-हक़्क़-शनासी[4] है यहाँ किसको, मगर वाइज़ !
तुझे देखा तो हर अन्देशए-बातिलको[5] पहचाना
हमें पहचान लो, ऐ रहरवाने ! वादिए - उल्फ़त !
कि हमने नक़्श - पाए-रहबरे-क़ामिलको पहचाना

मैं तो हूँ गुमकरदए-दिल[6] ऐ 'रविश' !
कौन मेरा हम-सफ़र होने लगा ?

ज़ौक़े-यक़ींने[7] कुफ़्रको[8] ईमाँ[9] बना दिया
जिस दर पै सर झुका दरे-जानाँ[10] बना दिया
हुस्ने-ख़ुलूसे-लग़ज़िशे-आदम तो देखिए
वीरानए - जहाँको गुलिस्ताँ बना दिया

---

१. दुःखकी ज्वाला, दग्ध हृदयको, २. जो पथ-प्रदर्शकोंसे अनभिज्ञ थे, ३. वही भूले-भटके मार्गसे लग पाये, ४. वास्तविकताको जाननेका साहस, ५. आधिभौतिकताके परिणामोंको, ६. दिल खोया हुआ, ७. श्रद्धाकी भावनाने, ८. अधार्मिकताको, ९. धर्म, १०. प्रियतम (ईश्वर) का द्वार।

क्या आईनेका ज़िक्र है, उस ख़ुश जमालने[1]
जिसपर निगाह की उसे हैराँ बना दिया
उस राज़को[2] जो क़ल्बे-अज़लमें[3] न छुप सका
आख़िर अमानते-दिले-इन्साँ[4] बना दिया

यह क्यों रक़्से-सबापर[5] लाला-ओ-गुल चाक दामाँ[6] हैं
ज़रा कुछ सोचकर अहले-जुनूँसे[7] बदगुमाँ[8] होना

तज़किरा[9] रहता है दिलसे सहरो-शाम उनका
लब तक आ जाये न भूलेसे कहीं नाम उनका
ज़िन्दगी क्यों हमा-तन-गोश[10] हुई जाती है
कभी आया है जो अब आयेगा पैग़ाम उनका ?
हसरते-दीद[11] रही ख़िलवते-दिलमें रू-पोश[12]
और दीदार ख़ुदाईमें रहा आम[13] उनका
जामो-मीनासे[14] उलझते हैं जो मैख़्वार[15] 'रविश !
मसलके-बादा-परस्ती[16] है बहुत ख़ाम[17] उनका

---

१. रूपवानने, २. भेदको, ३. सृष्टिके अन्तरंगमें, ४. मानवके हृदयकी धरोहर, ५. वायुके नृत्यपर, ६. फूलोंने वस्त्र फाड़े हैं, ७. दीवानोंसे, ८. अविश्वासी, ९. जिक्र, १०. सुननेको दत्तचित्त, ११. देखनेकी इच्छा, १२. दिलके एकान्तमें छिपी हुई, १३. यूँ दुनियामें उनका जल्वा आम रहा, १४. मदिरा-पात्रोंसे, १५. सुरासेवी, १६. मदिरा-पानका उद्देश्य, १७. व्यर्थ, ग़लत।

ग़लत नहीं हैं ज़मानेके शिकवाहाए-दराज़[1]
वहाँसे दूर रहे हम, जहाँ ज़माना था
तुझे ख़बर न हुई और जलके ख़ाक हुआ
वह दिल जो तेरी मुहब्बतका आशियाना था

उससे बढ़कर तो कोई बे-सरो-सामाँ[2] न मिला
दिल मिला जिसको मगर दर्दे-ग़रीबाँ[3] न मिला
तल्ख़िए-बादए-अन्दोहे-वफ़ा[4] क्या कम है
इसमें ऐ दोस्त ! यह ज़हरे-ग़मे-दौराँ न मिला
अब कहाँ जायें बताओ तो कुछ ऐ अहले-हरम[5] !
बुतकदेमें[6] भी वह ग़ारत-गरे ईमाँ[7] न मिला
उनसे अब तज़करए-दौलते-कौनैन[8] है क्यों ?
जिन ग़रीबोंको तेरा गोशए-दामाँ[9] न मिला
ख़ूबिए-दौलत-ओ-दानिश पै[10] नज़र है सबकी
कोई इस दौरमें दिलदादए-इन्साँ[11] न मिला

---

१. लम्बी-चौड़ी शिकायतें, २. दरिद्र, ३. ग़रीबोंके दुःखोंसे दुःखी होने वाला दिल, ४. माशूक़के साथ निर्वाह करनेकी परेशानीरूपी कड़वी शराब, ५. मस्जिद वालो, ६. मन्दिरमें, ७. ईमान विचलित करनेवाला माशूक़, ८. संसारकी सम्पदाका उल्लेख, ९. आँचलमें स्थान, १०. धन और अक़्लकी ख़ूबियोंपर, ११. मानवोंको प्यार करनेवाला ।

वहीं लुट गया कारवाने-हयात[1]
जहाँसे तेरा ग़म, जुदा हो गया
चले थे ज़मानेसे मुँह फेर कर
यका-यक तेरा सामना हो गया
यहाँ एक-से-एक है अजनबी
इलाही ज़मानेको क्या हो गया
तग़ाफ़ुलमें[2] भी इस क़दर एहतियात[3]
तेरी बेनियाज़ीको[4] क्या हो गया
न आया जिसे शेवए-ज़िन्दगी[5]
वही ज़िन्दगीसे ख़फ़ा हो गया
वह पिछले पहर मैकदेका तवाफ़[6]
'रविश'! इन दिनों ख़्वाब-सा हो गया

ख़िज़ाँके साथ बहुत दूर मुझको जाना है
न इन्तज़ार करे महफ़िले-बहार मेरा
कहाँ निजात[7] मुहब्बतको बदगुमानीसे[8]
न एतबार तुम्हारा न एतबार मेरा

---

१. जीवनरूपी यात्री-दल, २. उपेक्षामें, ३. सावधानी, ४. लापरवाहीको, ५. जीनेका तरीक़ा, ६. मदिरालयकी परिक्रमा, ७. छुटकारा, ८. शक, सन्देहसे ।

हर्फ़े - शिकवाकी नारसाई[1] तक
लुत्फ़ था शिकवः-ओ-शिकायतका
शबे-महताब[2] हो कि सुबहे-बहार
पैरहन है तेरी लताफ़तका[3]

हमको तो गरेबाँसे रहा काम जुनूँमें
सहरा नज़र आया न गुलिस्ताँ नज़र आया

जो मैं करमें[4] न समझता तेरे तग़ाफ़ुलको[5]
तो बार-बार यह दिल मुझसे बदगुमाँ[6] होता

'रविश' ! क़फ़स ही को हम आशियाँ बना लेते
अगर ख़यालमें भी ख़्वाबे-आशियाँ होता

वहशते-दिलने[7] हिजाबाते-जहाँ[8] चाक[9] किये
एक पर्दा रुख़े-जानाँसे[10] उठाया न गया
सरहदे-इश्क़से[11] आगे न बढ़ी वहशते-इश्क़[12]
हुस्ने-हुश्यारको दीवाना बनाया न गया

---

१. शिकायतोंकी सुनवाई न होने तक, २. चाँदनी रात, ३. पवित्रताका परिधान,रूपका चमत्कार, ४. कृपा, ५. उपेक्षा भावको, ६.संशयी, ७. हृदयको उत्सुकताने, दिलकी दीवानगीने, ८. विश्वके आवरण, ९. फाड़ना,हटाना, १०. प्यारेके मुखसे, ११. प्रेम-सीमासे, १२.प्रेमोन्माद ।

दिलसे करता हूँ लाख-लाख सवाल
याद आता है जब जवाब तेरा
हाये उन लग़्ज़िशोंकी[1] रअ़नाई
ढूँढ़ता है जिन्हें अ़ताब[2] तेरा
इशरते-दिल[3] थी, दिलकी बर्बादी
टूटकर बन गया रुबाब[4] तेरा

यह तो थे शायद बहार आनेके दिन
बाग़बाँ क्यों सरगराँ[5] होने लगा ?
अब ख़ुलूसो-दोस्ती पर[6] भी 'रविश' !
वज़अ़दारीका[7] गुमाँ[8] होने लगा

यह कौन मसनदे-ख़िलवतसे[9] मस्ते-ख़्वाब[10] उठा
कि झाँकता हुआ मशरिक़से[11] आफ़ताब[12] उठा !
न देखने दिया कुछ मुझको फ़र्ते-हैरतने[13]
हज़ारों पड़ गये पर्दे जो इक हिजाब[14] उठा

---

१. भूलोंका मोहक रूप, २. ग़ुस्सा, ३. मनका चैन, ४. वायलिनकी तरह एक बाजा, ५. अप्रसन्न, असन्तुष्ट, ६. प्यार एवं मित्रतापर, ७. कृत्रिमताका, बनावटका, ८. शक, सन्देह, ९. एकान्त शयनकक्ष से, १०. आँखोंमें स्वप्न सँजोये, ११. पूर्वसे, १२. सूर्य्य, १३. आश्चर्य्य चकित होनेने, १४. लाजका पर्दा ।

अभी आज़ादिए-इन्साँ[1] है, फ़रेबे-इन्साँ[2]
दिले-इन्साँ है, निशाना अभी इन्सानोंका
साफ़ कहने पै हूँ मजबूर सुन ऐ बादे-सबा[3] !
तेरे गुलशन पै है साया अभी ज़िन्दानोंका[4]
बार-हा[5] इश्क़की टूटी हुई किश्तीने 'रविश !'
सर झुकाया है उभरते हुए तूफ़ानोंका

इश्क़ तनहा सही, बेकस सही, बे ज़ोर सही,
क्यों तेरे अश्क हैं बेताबे-मदद ऐ महबूब !
तूने बख़्शी है 'रविश' को ग़मे-दिलकी दौलत
क्यों न हो ऐशे-दो आलमको[6] हसद[7] ऐ महबूब !

अ़रसए-दहर[8] भी तेरे लिए कम ऐ वाइज़ !
और मेरे लिए इक गोशए-मैख़ाना[9] बहुत
सर्द[10] इस दौरमें है, सीनए-आदम[11] वर्ना
ज़िन्दगीके लिए सोज़े-दिले-परवाना[12] बहुत
हम कहाँ जायें बयाबाने-मुहब्बतसे 'रविश' !
ख़ाक उड़ानेके लिए है यही वीराना बहुत

---

१. मानवकी स्वतन्त्रता, २. मनुष्योंका जाल है, धोका है, ३. शीतल समीर, ४. कारागृहोंका, ५. बार-बार, ६. दोनों लोकोंको, ७. ईर्ष्या, जलन, ८. सम्पूर्ण संसार, ९. मदिरालयका कोना, १०. ठण्डा, जोशसे खाली, ११. मनुष्योंका सीना, १२. पतंगेकी दिलकी आग ।

ज़िन्दगी पर है गुमाने-सायए-गेसूए-दोस्त[1]
साँस लेता हूँ तो मिलता है, सुराग़े-बूए-दोस्त
गर्दिशे-ऐय्याम[2] मुँह तकती है मेरा और मैं
चूमता जाता हूँ आँखोंसे ग़ुबारे-कूए-दोस्त[3]
जज़्बे-दिलका[4] है यही आलम तो इक दिन देखना
ख़िज्र दीवानोंसे पूछेंगे निशाने-कूए-दोस्त
लग़ज़िशे–पैहमने[5] आख़िर दस्तगीरी[6] की 'रविश'
वे तकल्लुफ़ बढ़ गये मेरी तरफ़ बाज़ूए-दोस्त[7]

सुनने वाले भी तल्ख़कामर्[8] हुए
किस क़दर थी मेरी कहानी तल्ख़ ?
ग़मे-दिल ख़ुशगवार था जिसको
कर गई तेरी महरबानी तल्ख़

पशेमाँ[9] हैं तर्के-मुहब्बतके बाद
बढ़ीं उलझनें और फ़ुर्सतके बाद
अभी तो क़यामतका है आसरा
ख़ुदा जाने क्या हो क़यामतके बाद ?

---

१. प्रेयसीकी ज़ुल्फ़ोंकी छायाका विश्वास, २. संसारकी मुसीबतें, ३. प्रियतमाके कूचेकी खाक, ४. हृदयके भावोंका, ५. लगातार लड़खड़ानेने, ६. सहायता, ७. प्रियतमाके हाथ, ८. कड़वे, क्रुद्ध, ९. शर्मिन्दा, पछताये हुए।

यह हुस्ने-ख़ुलूसे-शिकायत बजा
मगर क्या रहेगा शिकायतके बाद
वह हर बार मिलते हैं इस शानसे
मिले जिस तरह कोई मुद्दतके बाद
मुहब्बतसे पहले यह आलम न था
कहाँ आ गये हम मुहब्बतके बाद

हम मैकशोंके[1] क़दमों पै अक्सर
झुक-झुक गये हैं, महराबो-मिम्बर[2]
शर्मायेगा अब ताहश्र तूफ़ाँ
टूटी हुई इक किश्ती डूबोकर
उस कारवाँमें[3] लुत्फ़े-सफ़र क्या
जिस कारवाँमें रहज़न[4] न रहबर[5]
अब मैकदेका आलम न पूछो
इक शीशए-दिल और लाख पत्थर
हाँ ज़िन्दगी ! इक पैग़ामे-लग़ज़िश[6]
जीना पड़ेगा कब तक सँभलकर ?
अब शमए-हसरत लौ दे उठी है
ऐ सर-सरे ग़म ! दामन बचाकर
इतना तग़ाफ़ुल[7] ऐ चश्मे-साक़ी !
रह-रह गये हम साग़र उठा कर

---

१. सुरा-सेवियोंके, २. मस्जिदके महराव और मिम्बर, ३. यात्री दलमें, ४. लुटेरे, ५. पथप्रदर्शक, ६. भूलोंसे परिपूर्ण, लड़खड़ाहटको ज़िन्दगी, ७. उपेक्षा, लापरवाही।

महरमे-राज़े[1]-मुहब्बत है अगर दिल तेरा
तो ख़ुदाके लिए इस राज़को रुसवा[2] भी न कर

हैरते-शौक़ ही बन जाये न ग़म्माज़े[3]-'रविश'
तू इस अन्दाज़से नादाँ उसे देखा भी न कर

तेरा सकूँत[4] न रुसवा[5] करे 'रविश' तुझको
कि दूर-दूर पहुँचती है ख़ामुशीकी पुकार
क्या ख़ुल्द भी है जल्वए-जानाँसे बे-नसीब[6]
हैराँ हूँ सूरते-दरो-दीवार देखकर
बादा ब-क़द्रे-ज़र्फ़ सही रस्मे-मैकदा[7]
साक़ी ! नज़ाकते-दिले-मैख़्वार[8] देखकर
अब इससे क्या ग़रज़ यह हरम है कि दैर है
बैठे हैं हम तो सायए-दीवार देखकर

दरे-जानाँ पै[9] अगर हसरते-सिज्दा[10] है तुझे,
अर्श[11] जिसके लिए झुक जाये वह सर पैदा कर,

१. प्रेमके भेदोंसे परिचित, २. बदनाम, प्रकट, ३. चाहनेकी अधिकता हो कहीं चुग़ली न कर दे, ४. मौन, निश्चल भाव, ५. बदनाम, मशहूर, ६. जन्नत प्रियतमाके जल्वेसे शून्य है, ७. पात्रताके अनुसार मदिरा देनेका मदिरालयका नियम उचित है, ८. किन्तु सुरासेवीके दिलकी भावनाओंका भी ध्यान रहे, ९. प्यारेकी चौखटपर, १०. नतमस्तक होनेकी इच्छा, ११. ख़ुदाका स्थान, आस्मान।

क्या हुआ गर तेरी रातें रहीं बेगानए-ख़्वाब[1]
हुस्न बेदार[2] हो जिससे वह सहर[3] पैदा कर
फ़लके-इश्क़के टूटे हुए तारोंकी क़सम
इक नई अंजुमने-शम्सो-क़मर[4] पैदा कर

किसने भेजा था पयामे-होश, दीवानोंके पास ?
दामनोंके चाक आ पहुँचे गरेबानोंके पास
रिन्द पैमाना शिकन[5] हैं, मोहतसिब मीना-बदोश[6]
दौलते-जामो-सुबू है आज फ़रज़ानोंके[7] पास
कोई क्या जाने कि क्या गुज़रा है दिल पर सानिहा
बरहमन क्यों सर झुका लेता है बुतख़ानोंके पास
गर न होतीं क़ैदें - रस्मो - राहकी मजबूरियाँ
शमअ़ ख़ुद उड़कर पहुँचती अपने परवानोंके पास

नक़ाबे-रुख़ सरकता जा रहा है
मगर वह ख़ुद हुए जाते हैं, रू-पोश[9]
हरीमे - ग़म[10] हो या ईवाने-इशरत[11]
चिराग़े-सुबहको होना है ख़ामोश

---

१. स्वप्नरहित, २. जागृत, ३. चमत्कार, ४. सूर्य-चन्द्रमाकी महफ़िल, ५. सुरासेवियोंके मदिरापात्र टूटे पड़े हैं, ६. शराब पीनेवालोंको सज़ा देने वालोंके पास मदिरासे भरे पात्र हैं, ७. मदिरा-पात्रका अधिकार अक़्लमन्दोंने हड़प लिया हैं, ८. दुर्घटना, वाक़िया, हादिसा, ९. पोशीदा, छिप रहे हैं, १०. दुःखोंका निवासस्थान, ११. सुखोंका महल ।

गै़र-फ़ानी[1] है ज़िन्दगीका ख़ुलूस[2]
हुस्ने-यज़दाँ[3] है आदमीका ख़ुलूस[4]
ख़ि.ज्रे-मंज़िलसे काम नहीं ऐ दोस्त !
एक हमदर्द अजनबीका ख़ुलूस

कहनेकी बात भी हो तो दुनियासे क्या कहें
दुनियाको दास्ताने-ग़मे-दिलसे क्या ग़रज़
सोज़े-ग़मे-निहाँको[5] जो समझे हैं बूए-गुल
उनको फ़ुग़ाँने-दर्दे-अनादिलसे[6] क्या ग़रज़ ?

हरीफ़े-आतिशे-गुल क्या हो ख़िरक़ए-ज़ाहिद[7]
ख़िज़ाँने ढूँढ़ लिया गोशए-पनाह ग़लत

ऐ हवाए-दह्र[8] ! आहिस्ता ख़िराम[9]
बुझ न जाये ख़िलवते-ग़मका[10] चिराग़
उनकी दुज़दीदा निगाहोंसे[11] मिला
मेरी ग़मगुस्तः[12] उम्मीदोंका सुराग़
गोशए-दिलसे निकलकर आज़ू
बन गई है दामने-हस्ती पै दाग़

---

१. अमर, स्थायी, २. प्रेम-व्यवहार, ३. ईश्वरीय रूप, ४. मनुष्योंसे प्रेम करना, ५. अन्तरंगमें छिपे दुःख-दर्दको, ६. बुलबुलोंकी दुःख भरी आहोंसे, ७. ज़ाहिदका लिबास फूलोंके सौन्दर्यरूपी परिधानका स्पर्द्धी कैसे हो सकता है, ८. दुनियाकी हवा, ९. धीमी चाल, १०. अन्तरंग दुःखोंका दीपक, ११. तसकर आँखोंसे, १२. खोई हुई ।

क़िसके दामनकी नवाज़िश[1] है 'रविश' !
अर्श[2] पर है आज अश्क़ोंका दमाग़

चश्मेतर[3], उठ न सकी ख़ाके-नशेमनकी[4] तरफ़
हमने मुँह फेर लिया देखके गुलशनकी तरफ़

इतना भी न होना था ऐ बादेसबा ! बे बाक[5]
फूलोंकी क़बाएँ चाक, कलियोंके गरेबाँ चाक
देख तो 'रविश' बढ़कर क्या हज़रते-वाइज़ हैं ?
यह कौन सुबू लेकर बैठा है ? बज़ेरे-ताक

तुझे ज़िद आज भी है, मेरे पैमाने-मुहब्बतसे
मुझे तेरे तग़ाफ़ुल पर मुहब्बतका गुमाँ अबतक

बरतर अज़ इन्तख़ाब[6] हैं हम लोग
आप अपना जवाब हैं हम लोग
दामने-शब[7] भिगोके अश्कोंसे
सुबह दम, आफ़ताब हैं, हम लोग
लाख नाकामियाँ हैं दामनमें
और फिर कामियाब हैं हम लोग

---

१. कृपा, २. आस्मानपर, ३. अश्रुपूर्ण आँख, ४. जले हुए नीडकी, ५. स्वच्छन्द, चंचल, ६. उत्तमोत्तम चुने हुए, ७. रात्रिका परिधान ।

वाइज़े-शहरने दुरुस्त कहा—
क़ाबिले-इज्तनाब[1] हैं हम लोग
देख लें हमको देखना है जिन्हें
उसकी आँखोंका ख़्वाब हैं हम लोग
इश्क़ इक ख़्वाबे-जाविदाँ[2] है 'रविश'!
और ताबीरे-ख़्वाब[3] हैं हम लोग

हज़ार गुमरही[4] अहले-कारवाँ[5] तस्लीम[6]
मगर न ख़िज़्रको होना था कारवाँसे अलग
ख़िज़ाँका जिक्र ही क्या है कि ऐ 'रविश'! हमने
भरी बहार गुज़ारी है गुलसिताँसे अलग

हमें जिसने रुसवाए-आलम[7] किया
वही बात हमसे छुपाते हैं लोग

कहीं निशाने-मुहब्बत, न सायए-ग़मे-दिल[8]
यही थी क़ाफ़िलए-इन्क़िलाबकी[9] मंज़िल?
यह रहबरी[10] भी अजब है कि रहनुमाओंने[11]
बदल दिये हैं, निशानाते-जादहो-मंज़िल[12]

---

१. घृणायोग्य, २. स्थायी स्वप्न, ३. स्वप्नका परिणाम, ४. मार्ग भटकना, ५. यात्री दलको, ६. मंज़ूर, स्वीकृत, ७. संसारमें बदनाम, ८. दुखी दिलोंकी छाया, ९. क्रान्तिकारियोंकी यात्राकी, १०. नेतृत्व, पथ-प्रदर्शकता, ११. नेताओंने, मार्ग बतानेवालोंने, १२. यात्रा-लक्षके मार्गके चिह्न ।

है अब ग़रूरे-चमनपर[1] यह तज़किरा[2] भी गराँ[3]
कि इस बहारमें है किसका ख़ूने-दिल शामिल
किसे डुबोके नदामतमें[4] ग़र्क़[5] है तूफ़ाँ
यह किस ग़यूरने[6] देखा न जानिबे-साहिल[7]

हरम हो, बुतकदा हो, दैर हो, कुछ हो, कहीं लेचल
जहाँ वह हुस्न ला-महदूद[8] हो ऐ दिल ! वहीं ले चल

सर झुका लेते हैं, सूए-ख़िल्वते-दिल देखकर
जब कहीं सुनते हैं ज़िक्रे-काबा-ओ-बुतख़ाना हम
ख़ुश्क आँखें, रूह तनहा, दिल शिकस्ता, लब ख़मोश
बस्तियोंमें देखते हैं, सूरते - वीराना हम
हम तक अब आये-न-आये दौरे-पैमाना 'रविश' !
मुतमइन[9] बैठे हैं ज़ेरे–सायए-मैख़ाना हम

आँख तेरी सूए काबा, दिल तेरा बेतुलसनेम[10]
मुझको तेरे दिलका अंदेशा, तुझे, फ़िक्रे-हरम
वाइज़े-नादाँ गिराये जा, हिजाबोंपर हिजाब[11]
कोई दीवाना उठा देगा नक़ाबे-कैफ़ो-कम[12]

---

१. उद्यानके अभिमानको, २. ज़िक्र, उल्लेख, ३. बोझल, भार, ४. शर्मिन्दगीमें, ५. डूबा हुआ, ६. स्वाभिमानीने, ७. किनारेकी तरफ़, ८. सीमारहित, अनन्त, ९. निश्चिन्त, १०. सुन्दरियोंमें, बुतखानेमें, ११. पर्दे, १२. कैसा और कितना, नशीला पर्दा।

हाय, अब इन बस्तियोंका ज़िक्र ही क्या हमनशीं!
जो अभी बसने न पाई थीं, कि वीराँ हो गईं

मुहब्बतकी जहाँबानीके[1] दिन हैं
ज़मींपर ख़ुल्दसामानीके[2] दिन हैं
जो हैं अपनी जगह ख़ुर्शीदे-बुनियाद[3]
अब उन ज़र्रोंकी ताबानीके[4] दिन हैं
इरादोंकी बुलन्दी ओजपर[5] हैं
हवादसकी[6] पशेमानीके दिन हैं
मुहब्बत जल्वागर है, झोंपड़ों में
अब इस दौलतकी अरज़ानीके दिन हैं
हर-इक ज़ंजीर है अब पा-शिकस्ता[7]
हर-इक ज़िन्दाँकी[8] वीरानीके दिन हैं
ज़वाल आमादा[9] है तामीरे-औहाम[10]
कमाले-फ़िक्रे-इन्सानीके दिन हैं
क़सीदे[11] बादशाहोंके हुए ख़त्म
मुहब्बतकी ग़ज़ल-ख़्वानीके दिन हैं

---

१. प्रेमके शासन करनेके, २. जन्नत-जैसे, ३. नींवके सूर्य्य, ४. कणोंके चमकनेके, ५. उत्थानपर, ६. दुर्घटनाओंकी, मुसीबतोंकी, ७. जीर्ण-शीर्ण, ८. कारागारके, ९. पतनोन्मुख, १०. अन्धविश्वासोंका निर्माण, ११ .प्रशंसा-त्मक शेर।

बहुत मासूम[1] है एक-एक लग़्ज़िशें[2]
ग़रूरे-पाकदामानीके[3] दिन हैं

किसने आँखें, पाए-साक़ीपर मिलीं ?
मैकदा लेने लगा अँगड़ाइयाँ
बढ़ गईं मंज़िलसे आगे लग़्ज़िशें
रह गईं थककर वफ़ा-पैमाइयाँ

बरहमन कश-म-कशमें खो गया है
सनम कम हैं, सनमख़ाने बहुत हैं
'रविश'! इस शहरे-बा-तमकीं में[4] हुश्यार
यहाँ ज़ीहोश दीवाने बहुत हैं

'रविश' इस ज़िदको क्या कहिए कि जब महफ़िलमें हम पहुँचे
वही ग़ारतगरे-महफ़िल[5] नहीं था, अपनी महफ़िलमें

नहीं मालूम, कल क्या पूछ लें वह महरबाँ होकर
मुकम्मिल आज सब महरूमियोंकी[6] दास्ताँ कर लें

---

१. भोली-भाली, २. भूल, लड़खड़ाहट, ३. पवित्रताके अभिमानके, ४. शानो-शौकतवाले शहरमें, ५. माशूक़, ६. वंचित वस्तुओंकी।

वह हुस्न जिसको बहारोंमें बारहा ढूँढ़ा
बदल-बदलके लिबासे-ख़िज़ाँ मिला मुझको
मेरा तो हाल ही क्या है, मेरा तो ज़िक्र ही क्या
तेरे सकूँमें भी रंगे-फ़ुग़ाँ मिला मुझको
हज़ार दैरो-हरम हैं सजूद आमादा[1]
जबीं मिलीं कि तेरा आस्ताँ मिला मुझको
शरफ़ अता[2] जो किया तूने हम-कलामीका[3]
ज़माना, मुन्तज़िरे-दास्ताँ मिला मुझको
मुझे जनूने-वफ़ासे बड़ी उम्मीदें थीं
यह मरहला[4] भी मगर रायगाँ[5] मिला मुझको

ख़ुदा वह दिन न करे मैं रहूँ न उस दिन तक
कि जब मुझे यह गुमाँ[6] हो कि बेवफ़ा है तू

कभी मग़रूर[7] तूफ़ानोंको भी ठुकरा दिया मैंने
कभी इक मौजे-ग़मके[8] साथ ही बहना पड़ा मुझको
'रविश' ! इस बज़्मे-रंगींमें सकूते-ग़मका[9] अफ़साना
कहा जाता न था मुझसे मगर कहना पड़ा मुझको

---

१. हज़ारों मन्दिर-मस्जिद नतमस्तक होनेको लालायित हैं, २. गौरव प्रदान, ३. वार्तालाप करनेका, ४. समस्या, ५. व्यर्थ, ६. सन्देह, ७. घमण्डी, ८. दुःखकी लहरके, ९. मौन व्यथाका ।

अजब आ़लम[1] है, आज़ारे-सरूरे-इश्क़[2]का आ़लम
उठे जैसे उफ़ुक़से[3] माहताब[4] आहिस्ता-आहिस्ता
निशाते-आर्ज़ू,[5] ख़्वाबे-तमन्ना[6], दर्दे-महरूमी[7]
मुहब्बतने उठाये सब हिजाब[8] आहिस्ता-आहिस्ता

ज़िन्दगी भी जी चुराकर रह गई
कौन मरता तेरे दीवानेके साथ ?

हमें ही ज़िद है, 'रविश' कुछ वगर्ना साक़ीने
हज़ार वार दिया जाम एहतराम[9]के साथ

ज़मानेसे मिलेगी दाद क्या दर्दे-ग़रीबाँकी[10] ?
यहाँ तो ठोकरोंमें ज़िन्दगी तुलती है इन्साँकी
ख़िज़ाँको भी[11] कभी इस दर्जा अफ़सुर्दा[12] न देखा था
यह अहदे-गुलमें क्या सूरत नज़र आई गुलिस्ताँकी ?

न पूछ ऐ नाख़ुदा[13] ! उस किश्तिए-बर्बाद[14]की अज़्मत[15]
कि जिसने ग़र्क़ होकर आबरू रख ली है तूफ़ाँकी

भेजता है कोई हर रोज़ मुझे ताज़ा पयाम[16]
रास्ता भूल ही जाती है, नसीमे–सहरी[17]

---

१. स्थिति, हालत, २. प्रेम रोगका, ३. क्षितिजसे, ४. चन्द्रमा, ५. अभिलाषारूपी सुख, ६. इच्छाओंके स्वप्न, ७. वंचित होनेका रंज, ८. पर्दे, ९. आदरके, १०. दीन-दुखियोंके दुःखकी, ११. पतझड़, १२. कुम्हलाया हुआ, १३. मल्लाह, केवट, १४. बर्बाद हुई नौकाकी, १५. प्रतिष्ठा, इज्जत, १६. सन्देश, १७. प्रातःकालीन हवा ।

उसने कुछ सोचके सब पर्दे उठा ही डाले
कर गई आज बड़ा काम मेरी बे-ख़बरी

कुछ मेरी ख़मोशी भी थी ग़म्माज़े-मुहब्बत[1]
उसपर तेरे अन्दाज़े-तग़ाफ़ुलकी[2] गवाही
इक जल्वए-यज़दाँ, तेरे आरिज़की तजल्ली[3]
ख़ुद पर्दए-काबा तेरी ज़ुल्फ़ोंकी[4] सियाही

कहाँ पहुँचके लुटा कारवाने-महरो-वफ़ा[5]
कि दोस्तीसे बहुत दूर दुश्मनी न रही

मैं नहीं, दर्द सही, ज़हर सही, झूमके पी
तेरा इन्कार न साक़ीको पशेमाँ कर दे
अम्ने-साहिल तेरी किश्तीके लिए रहज़न है
जिस तरह हो, उसे साहिलसे गुरेज़ाँ कर दे[6]

फ़र्शे-क़दम है हुस्ने-ख़रामाँके साथ-साथ
वह रौशनी कि नूरका दरिया कहें जिसे

---

१. मुहब्बतका चुग़लखोरी, (आवश्यकतासे अधिक चुप्पीसे लोगोंने भाँप लिया कि हज़रत कूचए-इश्क़में पाँव रख चुके हैं), २. उपेक्षा, लापरवाहीके ढंगने, ३. प्रेयसीके मुखकी ज्योति खुदाका जल्वा है, ४. प्रेयसीकी जुल्फ़ोंकी परछाईं गोया काबेका पर्दा है, ५. वफ़ादारी और कृपा रूपी यात्री दल, ६. किनारेपर नावको खड़ी रखनेकी इच्छा नावको खस्ता-खराब करना है, नावका गौरव इसीमें है कि उसे किनारेसे दूर रखा जाय।

क्या मर्तबा है, ख़ाक नशीनाना-इश्क़का
फ़र्शे-क़दम है, बामे-सुरैया कहें जिसे
उसने 'रविश' के ज़ौक़े-मुहब्बतको[१] देख कर
दिल वह दिया कि दर्दकी दुनिया कहें जिसे

महफ़िले-दहरपै जन्नतका गुमाँ[२] होता है
हुस्न जब इश्क़की जानिब निगराँ[३] होता है
कुछ मेरा हाल सुनाती है मेरी ख़ामोशी
कुछ तेरी नीम-निगाहीसे[४] अयाँ[५] होता है
दिल गवारा नहीं करता है, शिकस्ते-उम्मीद[६]
हर तग़ाफ़ुल पै नवाज़िशका गुमाँ[७] होता है
यह हुई अब दिले-बेताबो-तवाँ[८]की हालत
इल्तिफ़ाते-निगहे-नाज़ गराँ[९] होता है

सोज़े-ग़म रूहमें[१०] यूँ नूर-फ़शाँ[११] होता है
चाँद जिस तरह घटाओंमें रवाँ[१२] होता है

रूपोश हक़ीक़त[१३] है, जब तक अफ़साने बन्द नहीं होंगे
इसरारे-हरम आबाद रहें बुतख़ाने बन्द नहीं होंगे

---

१. प्रेम करनेके उत्साहको, २-३. हुस्न जब इश्क़का संरक्षक बनता है, तब दुनियाको जन्नत समझनेको जी चाहता है, ४. आधी खुली आँखोंसे, ५. प्रकट, ६. आशाओंका भंग होना, ७. उपेक्षाओंपर भी कृपा करनेका यक़ीन होता है, ८. बेचैन-कमज़ोर दिलकी, ९. प्रेयसीकी कृपादृष्टि भी बोझ प्रतीत होती है, १०. दुःखकी आग आत्मामें, ११. प्रकाशमान, १२. चलता है, १३. सत्यपर जब तक पर्दे पड़े हैं, ईश्वर जब-तक छुपा हुआ है।

ऐ अहले-ख़िरद[1] ! मुख़्तार हो तुम, तामीर करो ज़िन्दाँ[2], लेकिन
ख़ुद रक़्स[3] करेंगी दीवारें दीवाने बन्द नहीं होंगे
यह लाला-ओ-गुल, माहो-अंजुम मुँह नोच न लें वाइज़ तेरा
मैख़ाने बन्द नहीं होते, मैख़ाने बन्द नहीं होंगे
ख़ुद शमए-यक़ीं बन जायेंगे, हँस-हँसकर जल जानेके लिए
औहामके ज़ुल्मतख़ानोंमें[4] परवाने बन्द नहीं होंगे
यह तंज़ो-मलामत कुछ भी नहीं, जुज़ हर्फ़े-मुहब्बत कुछ भी नहीं
दुनिया है 'रविश' और दुनियाके अफ़साने बन्द नहीं होंगे

दिले-ख़ामोश ही तुझको सिखा देगा यह ऐ ज़ाहिद !
दुआ कहते हैं किसको और हुस्ने-मुद्दआ क्या है ?
यह सब तस्लीम है मुझको मगर ऐ दावरे - मशहर !
मुहब्बतके सिवा जुर्मे-मुहब्बतकी सज़ा क्या है ?
मुझे नींद आ गई है सायए-ज़ुल्फ़े-परीशाँमें
तुझे यह फ़िक्र है, हंगामए-रोज़े-जज़ा क्या है ?
'रविश' ! क्यों ज़िन्दगीने अपने चहरेसे नक़ाब उल्टी ?
मुझे समझा है शायद अजनबी यह माजरा क्या है ?

बदले हज़ार रंग, रुख़े-रोज़गारने
दी फ़ुर्सते-नज़र न तेरे इन्तज़ारने

---

१. अक़्लवालो, २. कारागारोंका निर्माण करो, ३. नृत्य, ४. अन्ध-विश्वासोंके अँधेरोंमें।

ज़बाँपर और कुछ है दिलमें कुछ और
अ़जब इख़्लास[1] बरता जा रहा है

अहले-मंज़िल ! यह वक्फ़ए-आराम
ऐतराफ़े - शिकस्ता - पाई[2] है
हुस्नको अब यह ग़म है दामनगीर
इश्क़ने क्यों शिकस्त खाई है
चश्मे-साक़ीसे है, गिला कि 'रविश' !
हमपै इलज़ामे-पारसाई है

ऐ अहले-नज़र ! यह भी किसीपर हुआ रौशन ?
आ़लम है हसीं या निगहे-शौक़ हसीं हैं ?
है बुतकदए-दहर[3]का ख़ामोश इशारा।
वह 'हुस्ने-गुरेज़ाँ[4]' कहीं महदूद[5] नहीं है।

ख़िज़ाँके बाद गुलशनमें बहार आई तो है लेकिन
उड़ा जाता है क्यों, अहले-चमनका रंग क्या कहिए

---

१. सभ्य व्यवहार, २. हार मानना है, ३. संसार रूपी मन्दिरका, ४. प्यारा, ५. सीमित।

बहुत ही सरगराँ हैं शोलहाए-शमए-आज़ादी[1]
रविश ! अब दामने-हिन्दोस्ताँकी आज़माइश है

हज़ारों तूर उसी की हसरते-दीदारपर[2] क़ुर्बां[3]
कि जिसकी ज़िन्दगी ही हसरते-दीदार हो जाये[4]
मेरा ख़्वाबे-तमन्ना[5] उन हसीं राहोंसे गुज़रा है
तसव्वुरसे[6] भी जिनकी ज़िन्दगी बेदार[7] हो जाये

ऐ चश्मे-इन्तज़ार ! यह आलम है, दीदनी[8]
सदियोंका फ़ासिला मेरी शामो-सहरमें है
लाखों तसल्लियाँ हैं, मगर सूरते-सुकूँ[9]
मेरी नज़रमें है, न दिले-चारागरमें[10] है
ऐ दोस्त ! मेरी सुस्तरवीका[11] गिला न कर
मेरे लिए तो ख़ुद मेरी मंज़िल सफ़रमें है
तकता है क्या फ़लककी तरफ़ बहरे-आशियाँ ?
बुनियादे-आशियाँ तो तेरे बालो-परमें है

---

१. स्वतंत्रता-मशालकी लौ क्रुद्ध है, २. देखनेकी अभिलाषापर, ३. न्योछावर, ४. जीवनका लक्ष्य ही केवल अपने प्यारेको निहारनेके अतिरिक्त और कुछ न हो, ५. इच्छा-स्वप्न, ६. विचार करनेसे, ७. जागृत, ८. देखने योग्य, ९. चैनकी स्थिति, १०. चिकित्सकके दिलमें, ११. सुस्त चालका।

जो आज तक किसीसे गवारा न हो सका
ऐ दोस्त! वह करूँगा गवारा तेरे लिए
हर चन्द कुफ़्रे-इश्क़[1] है, इफ़शाए-राज़े-इश्क़[2]
यह कुफ़्र भी मुझे है, गवारा तेरे लिए
जाने-हज़ीं पै[3] हसरते-दरमाँ[4] भी बार[5] है
मैं बन गया हूँ दर्द-सरापा[6] तेरे लिए
ऐ आबरूए-महफ़िले-कौनेन[7]! कुछ तो सोच
तेरा 'रविश' है दहरमें[8] तनहा तेरे लिए

बहा करे दिले-ख़ूँ - गुस्ता अश्क बन-बनकर
हमें भी ज़िद है कि हम मुसकराये जायेंगे

मुहब्बतसे यह नफ़रत आह नासेह!
तेरे सीनेमें शायद दिल नहीं है
'रविश' महफ़िलमें हम पहुँचे तो देखा
वही ग़ारतगरे-महफ़िल नहीं है

मैं हज़ार ज़ब्त करूँ तो क्या, मैं हज़ार कुछ न कहूँ तो क्या?
कि दयारे-नाज़े-हबीबमें[9] मेरी ख़ामुशी भी सवाल है
जो निगाह-हुस्न-शनास हो, तो अयाँ है, कुछ न निहाँ है कुछ
दिले-बाख़बर ही ज़बाँ बने, तो जो हाल है वही क़ाल है

---

१—२. प्रेमका भेद प्रकट करना प्रेमधर्ममें पाप है, ३. शोकाकुल प्राणोंपर, ४. चिकित्साका विचार, ५. बोझ, भार, ६. साकार व्यथा-दुख, ७. संसाररूपी महफ़िलकी इज़्ज़त, ८. दुनियामें, ९. प्रेयसीकी महफ़िलमें।

यूँ भी कुछ कम तो न था मरहलए-ग़म[1] दुश्वार
और दुश्वार बनाया तेरी ग़मख़्वारीने
मेरे अश्कोंका भरम खुल ही चुका था ऐ दोस्त !
बात रख ली तेरे दामनकी गुहरवारीने

ग़रूरे-ख़ुल्द ज़ाहिद, तर्के-दुनियाके भरोसेपर
सँभल ऐ बेख़बर ! क्यों ख़ानुमाँ बर्बाद होता है
'रविश'! उसकी नज़रमें संगरेज़े[2] क्या जवाहर क्या
बहुत ही तंगदिल अल्फ़ाज़का नक़्क़ाद[3] होता है

ख़ल्क़से[4] पुरसिशे-मुहब्बतें[5] क्यों ?
यह तो मेरा गुनाह[6] है प्यारे !
हाल मेरा छुपा नहीं तुझसे
तेरी ग़फ़लत गवाह है प्यारे !
दोस्त मिलते हैं अजनबी बनकर
कुछ अजीब रस्मो-राह है प्यारे !
इश्क़ ख़ुद ख़ानुमाँ-ख़राब[7] सही
ज़िन्दगीकी पनाह[8] है प्यारे !

ख़ूब दस्तूरे-मुहब्बत है कि उस महफ़िलमें
हश्र[9] हो जाये मगर आँख उठाये न बने

---

१. ग़मकी समस्या, २. पत्थरके टुकड़े, ३. आलोचक, ४. जनतासे, ५. प्रेमपूर्ण व्यवहार, कुशल क्षेमकी पूछ-ताछ, ६. मेरा कर्तव्य, ७ भाग्यहीन, बेघर-बार, ८. आश्रय, ९. प्रलय।

यह तनहाई यह वीरानी मुबारक
जहाँ मैं हूँ, वहाँ कोई नहीं है
निगाहे-कुफ़्रे-ईमाँसे है पिन्हाँ[1]
वह इक सिज्दा[2] जो मक़सूदे-जबीं[3] है
जहाँ छोड़ा था तेरी जुस्तजूने
सुना है ज़िन्दगी अब तक वहीं है
हवाए-ख़ुल्दसे[4] दामन बचाकर
'रविश'! किसके लिए ख़िल्वत-गज़ी[5] है?

जुंनूँ[6] हर रंगमें मसरूरो-शाँदाँ[7]
ख़िरद[8]! हर हालमें चींबर जबीं[9] है
गुले-अफ़[10]शाँ मसर्रत[11] हैं सितारे
मेरे आँसू हैं उनकी आस्तीं है
दिले-महबूब[12] काशाना[13] हो जिसका
वह ग़म कितना हसीनो-नाज़नीं[14] है

इश्क़ दुश्वार नहीं ख़ुशनज़री[15] मुश्किल है
सहल है कोहकनी[16] शीशागरी[17] मुश्किल है

---

१. छिपा हुआ, २. नतमस्तक होना, ३. मस्तकका लक्ष, ४. जन्नतके वातावरणसे, ५. एकान्तवासी, ६. उन्माद, प्रेमकी लगन, ७. प्रसन्न, ८. अक़्ल, ९. त्योरी चढ़ाते हुए, १०. खिले हुए फूल, ११. ख़ुशी, १२. प्यारेका दिल, १३. निवास, १४. सुन्दर और कोमल, १५. पारखी दृष्टि, १६. पर्वत तोड़ना सरल है, १७. शीशेका काम कठिन है।

वह क़ैस ही था कि जेबो-दामाँकी धज्जियोंसे रहा उलझता
मैं उस जुनूँकी तलाशमें हूँ, जो चाक तेरा नक़ाब कर दे

:

कितने अरमाँ थे कि हो मरहलए-ग़मे[1] आसाँ
अब यह हसरत[2] है कि कुछ और भी मुश्किल हो जाये

क्या उसके बग़ैर, ज़िन्दगानी ?
माना, वह हज़ार दिल–शिकन[3] है

जो राह अहले-ख़िरदके[4] लिए है ला-महदूद[5]
जुनूने-इश्क़को[6] वह चन्द गाँम होती है
शरारे–आतिशे - नुम्रूदसे भी हैं बदतर
वह[9]आज़ू[8] जो हविसकी[10] ग़ुलाम होती है
हर - एक जल्वा है मेरे लिए कशिश तेरी
हर - इक सदा[11] मुझे तेरा पयाम[12] होती है
नमाज़े - इश्क़का आता भी है, जो होश कभी
तो बेख़ुदी[13] मेरी बढ़कर इमाम[14] होती है

---

१. दुःखोंकी समस्याएँ सुलझ जायें, २. अरमान, ३. हृदय दुखाने वाला, दिल तोड़ने वाला, ४. अक़्ल वालोंके, ५. असीमित, ६. प्रेम-लगनके लिए, ७. क़दम, ८. वह आग जो हज़रत इब्राहीमको जलानेके लिए नुम्रूद बादशाहने जलवायी थी, ९. इच्छा, १०. काम वासनाकी, ११. आवाज़, १२. सन्देश, १३. तल्लीनता, १४. नेतृत्व करनेवाली।

है अब ज़िन्दगी सायए-इश्क़में[1]
ज़रा मौत दामन बचाकर चले
जो तुझसे ही कहनेकी थी एक बात
वही बात तुझसे छुपाकर चले
यह कुछ कम नहीं है मआले-वफ़ा[2]
तुझे रू-शनासे-वफ़ा[3] कर चले
वह शोलोंसे[4] अक्सर रहे हमकिनार[5]
जो फूलोंसे दामन बचाकर चले

यह हादसे[6] कि जो इक-इक क़दम पै हाइल[7] हैं
ख़ुद एक दिन तेरे क़दमोंका आसरा लेंगे
ज़माना चीं-ब-जबीं है तो बात क्या है 'रविश'
हम इस अताब पै[8] कुछ और मुसकरा लेंगे

२६ जनवरी १९६० ई०

---

१. प्रेमकी छायामें, २. वफ़ाका परिणाम, कार्य्य, ३. वफ़ासे परिचित, ४. अंगारोंसे, ५. समीप, ६. घटनाएँ, ७. अड़े हुए, ८. क्रोधपै ।

# अफ़सर मेरठी

हामिद अल्लाह 'अफ़सर' १८९८ ई० में उत्पन्न हुए। मेरठ निवासी हैं। अरबी-फ़ार्सीकी उच्च शिक्षाके साथ-साथ अँग्रेज़ीमें बी० ए० हैं और इण्टरमीडिएट कॉलेज लखनऊमें लेक्चरर हैं। शाइरीका शौक़ बचपनसे था, मगर किसीपर प्रकट नहीं करते थे। सहपाठियोंके आग्रह-पर १९१६ ई० के एक मुशाअ़रेमें आपने पहले-पहल ग़ज़ल पढ़ी। खूब दाद मिली। लेकिन फिर आप मुद्दतोंतक मुशाअ़रोंमें नहीं गये। कारण यह था कि आपको मिसरा तरहपर ग़ज़ल कहना अच्छा नहीं लगता, लेकिन शाइरी बराबर करते रहे।

मुशाअ़रोंके मिसरा तरहपर ग़ज़ल कहनेमें 'अफ़सर' घबराते हैं। जो कुछ देखते और अनुभव करते हैं; उमंग आनेपर उसीको शाइरीका परिधान पहनानेका प्रयास करते हैं। आप नज़्म, ग़ज़ल, रूबाइयाँ और क़ते भी कहते हैं। लेकिन आपकी शाइरीकी बिस्मिल्लाह ग़ज़लसे ही हुई। पहले नज़्मोंका उल्लेख किया जा रहा है।

## शिकवए-हूर

सर 'इक़बाल' की 'शिकवा' और 'जवाबे-शिकवा' अमर नज़्में हैं। उन्हींके अनुकरणमें 'अफ़सर' साहबने भी १२७ अशआ़रकी 'शिकवए-हूर' और 'जवाबे-शिकवए-हूर' नज़्म कही हैं। जिनके यहाँ ५५ शेर दिये जा रहे हैं। 'इक़बाल' और आपके दृष्टिकोणमें पृथ्वी-आकाशका अन्तर है। शाइराना कमालका जहाँ तक सम्बन्ध है, सर इक़बालकी नज़्मका जवाब नहीं। वैसी नज़्म लिखना अभी तक किसीको नसीब न हुआ। मगर इक़बालसे दृष्टिकोण अफ़सूरका बहुत उदार और विशाल है। इक़बालने अपने शिकवोंमें केवल मुसलमानोंकी दयनीय स्थितिका उल्लेख करते हुए उनकी वर्त्तमान पतितोन्मुखी हालतका ज़िम्मेवार खुदाको ठहरानेका प्रयास

किया है, और 'जवावे-शिकवा'में खुदाकी तरफ़से कहा गया है कि हमने मुसलमानोंको—इज़्ज़तो-अज़मत, दौलतो-हुकूमत, शानो-शौकत, अक़्लो-शुजाअ़तके अलावा दुनियाकी हर नायाव चीज़ अ़ता की। फिर भी वे इन्हें सँभालकर न रख सके और ख़ुद अपनी यह हालत वना ली। हाँ, अगर मुसलमान चाहें तो फिर अपना खोया हुआ सव कुछ पा सकते हैं।

लेकिन 'अफ़सर'का लक्ष्य केवल मुसलमान और इस्लाम न होकर मानव और मानवता है। मानवका कितना ह्रास एवं पतन हो रहा है और वह भी मानव-सन्तान पुरुषवर्ग-द्वारा, इसी तथ्यको जन्नतकी हूरसे इस तरह व्यक्त कराया है—

ख़ुदासे इस तरह गोया[1] हुई इक हूर जन्नतकी—
"इलाही! अपने बन्दोंपर हमेशा तूने रहमत[2] की
मगर बासद अदब[3] इक बात मुझको अर्ज़ करनी है
कि हालत बार-हा[4] अहले-ज़मीं[5] की मैंने देखी है
दिया मर्दोंके हाथोंमें ज़िमामे-दहरको[6] तूने
फँसाया मुश्किलोंमें ख़ुद निज़ामे-दहरको[7] तूने
हमेशा शोरो-शर[8] रक्खा है आलममें[9] बपा[10] इसने
बना दी है बहुत मासूम[11] दुनियाकी फ़ज़ा[12] इसने
बहम आवेज़िशें फ़र्ज़न्दे-आदमकी जबल्लत[13] है
इसे ख़ुदसे मुहब्बत, अपने हमजिन्सोंसे[14] नफ़रत है

---

१. वात करने लगी, २. कृपा, ३. अदबके साथ, नम्रतापूर्ण, ४. वहुत बार, ५. भूलोकवासियोंकी, ६. विश्व-शासनकी वागडोर, ७. विश्व-व्यवस्थाको, ८. झगड़ा-फ़िसाद, ९. दुनियामें, १०. प्रचलित, जारी, ११. दयनीय, १२. स्थिति, १३. परस्पर लड़ना-भिड़ना मानवपुत्रोंके संस्कारमें है, १४. समान शरीरवालोंसे।

क्रिया बरबाद, ख़लक़तको[1] हुकूमतके लिए इसने
बहाया है हमेशा ख़ून 'क़ुव्वतके[2] लिए इसने
कभी हटती नहीं है मादियतसे[3] नज़र इसकी
हमेशा ज़िन्दगी पस्तीमें[4] होती है बसर इसकी
रहा है इब्तदासे[5] रज़्मसाज़ी[6] मशग़ला[7] इसका
है दर्द-अंगेज़[8] इबरतनाक[9] ख़ूनी माजरा इसका

किया हर अहदमें[10] ख़ूँ-रेज़ियोंपर[11] अपनी नाज़[12] इसने
हलाकत पाशियोंमें[13] फ़ख्र,[14] समझा इम्तियाज़ इसने

सितमरानीकी[15] ख़्वाहिश मर्दकी फ़ितरतमें[16] दाख़िल है
दरिन्दोंकी है ख़ू[17] इसमें, यह वहशी है, यह क़ातिल है

बना दे इस जहाँको अपने हमजिंसोंका[18] इक मरक़द[19]
यही था इब्तदासे[20] इसकी हर ईजादका[21] मक़सद[22]

---

१. जनताको, २. ताक़त बढ़ानेके लिए, ३. नारियोंकी तरफ़से, ४. पतितावस्थामें, ५. प्रारम्भसे, ६. युद्ध करना, ७. कार्य, रुचि, ८. दुःखपूर्ण, ९. नसीहत लेने योग्य, १०. युगमें, ११. लहू बहानेपर, १२. अभिमान, १३. मनुष्योंको वध करनेमें, १४. गर्व, १५. अत्याचार करनेकी इच्छा, १६. स्वभावमें, १७. हिंसक पशुओंकी आदत, १८. अपने जैसे मानवोंका, १९. क़ब्रिस्तान, २०. प्रारम्भसे, २१. आविष्कारका, २२. उद्देश्य।

फ़ज़ामें[१] हर तरफ़ ज़हरे-हलाहल[२] भर दिया इसने
ग़ज़ब यह है हवामें मौतको हल कर दिया इसने
यह मसनूई[३] परोंसे उड़के पहुँचा आस्मानोंपर
क़ज़ा[४] बरसी वहाँसे ज़िन्दगीके गुलसितानोंमें[५]
बुलन्दीपर पहुँच कर भी न बाज़ आया यह सौदाई[६]
सितमगरने[७] ज़मींपर आस्माँसे आग बरसाई

नहीं महदूद[८] अपनी जिन्स तक[९] ज़ुल्मो-सितम[१०] इसका
हमेशा ही रहा हव्वाकी बेटीपर करम[११] इसका
ज़रीया[१२] अपनी तफ़रीहोंका[१३] इसने समझा औरतको
बनाया अपना इक बेबस खिलौना इसने औरतको
उसे हर माद्दी शैकी[१४] तरह मिल्क[१५] अपनी समझा है
कभी उसको ख़रीदा है, कभी ज़ालिमने बेचा है

मुक़ाबिलमें तेरे, लाखों ख़ुदा इसने बनाये हैं
उन्हें पूजा है उनकी बन्दगीके गीत गाये हैं
हुआ बेचैन आख़िर इस क़दर जज़्बा बड़ाईका
किया ऐलान अक्सर मर्दने अपनी ख़ुदाईका

---

१. वातावरणमें, २. विष, ज़हर, ३. बनावटी, ४. मौत, ५. उद्यानों-पर, ६. उन्मत्त, पागल, ७. अत्याचारीने, ८. सीमित, संयत, ९. पुरुषों तक, १०. अत्याचार, ११. नारी जातिपर कृपा ! ( व्यंग्यके रूपमें ), १२. साधन, १३. मनोरंजनका, १४. पौद्गलिक वस्तुओंकी तरह, १५. जागीर, सम्पदा ।

मगर हैरत यह है ऐ ख़ालिक़े हर दो जहाँ[1] ! तू भी
हमेशासे रहा है मर्द ही पर महर्बां तू भी
हिदायतके लिए ख़लक़तकी तूने जो नबी भेजे[2]
तुझे मालूम है ख़ुद ही वह सारे मर्द ही भेजे
मुझे होती शिकायत 'मेरे मुँहमें ख़ाक' क्या इससे
मगर इसमें नहीं शक मर्दका रुत्बा[3] बढ़ा इससे
बना देता अगर तू एक भी औरतको पैग़म्बर
तो होता मर्दको फिर फ़ौक़ियतका[4] हौसला क्यों कर ?

इलाही आ गया है वक़्त अब दुनियापै रहमतका[5]
बहुत ही हाल अबतर[6] हो गया है तेरी ख़लक़तका[7]
बनाया इब्ने-आदमने[8] तेरी दुनियाको वीराना
बहाइमसे[9] भी बाज़ी ले गया अब तो यह दीवाना
सितमगरने लिबासे-आदमीयत चाक[10] कर डाला
जो तूने नेमतें[11] बख़्शीं थीं उनको ख़ाक कर डाला
दिलोंको आतिशे-बुग़्ज़ो-हसदसे[12] भर दिया इसने
तेरी दुनियाको दोज़ख़से भी बदतर कर दिया इसने
मिटा डाला जहाँसे अम्नो-राहतका निशाँतक[13] भी
ज़मींपर वह सितम ढाये कि काँपा आस्माँतक भी

---

१. लोक-परलोकके स्रष्टा, २. जनताकी भलाईके लिए जो पैग़म्बर भेजे, ३. गौरव, ४. श्रेष्ठताका, ५. कृपा करनेका, ६. निकृष्ट, ७. सृष्टिका, ८. मानव-सन्तानने, ९. पशुओंसे, १०. मानवता रूपी वस्त्र फाड़ डाले, ११. अनुपम वस्तुएँ, १२. ईर्ष्या-द्वेषकी आगसे, १३. सुख-शान्तिका चिह्न ।

हैं ऐसी हस्तियाँ दरकार इसकी रहनुमाईको[१]
जो मज़हब अपना समझें नौए-इंसाँकी[२] भलाईको
जहाँमें एक मसलक वहदते-इंसान[३] हो जिनका
उख़ब्वत दीन[४] हो, इंसानियत ईमान हो जिनका
जो समझें इस हक़ीक़तको[५] जहाँकी पासबानीमें[६]
बराबर हैं हुक़ूक़ इंसानके इस दारे-फ़ानीमें[७]
जो दुनियासे मिटा डालें, ग़रूरे-किब्रो-नख़वतको[८]
जो अपने ख़ुल्क़से[९] तोड़ें तिलिस्मे-ज़ोरो-क़ूव्वतको[१०]
यह सब औसाफ़[११] पैदा कर दिये हैं तूने औरतमें
कुछ इनसे भी सिवा गुन भर दिये हैं तूने औरतमें
इलाही ! अब मिटादे इस जहाँ से ज़ुल्मो-सफ़्फ़ाकी[१२]
सुपुर्द औरतके कर दे इन्तिज़ामे--आलमे--ख़ाकी[१३]
गुज़ारेगा कोई क्यों ज़िन्दगी फिर रंजो-कुल्फ़तमें[१४]
मुहब्बत ही मुहब्बत होगी औरतकी हुकूमतमें''

## जवाबे-शिकवए-हूर

यह शिकवा कर चुकी जब हूरे-जन्नत रब्बे-अकरमसे[१५]
तो इक आवाज़ आई बारगाहे-अर्शे-आज़मसे[१६]

---

१. नेतृत्वके लिए, २ मानव मात्रकी, ३. मानव-संगठनका लक्ष्य, ४.. भ्रातृ-भाव धर्म, ५. वास्तविकताको, ६. संसारकी रक्षामें, ७. असार संसारमें, ८. घमण्ड, ग़रूर और घृणाभावको, ९. प्रेमव्यवहारसे, १०. शक्ति और बलके व्यूहको, ११. ख़ूबियाँ, गुण, १२. अत्याचार-नृशंसता, १३. संसारकी व्यवस्था, १४. दुःख-चिन्ताओंमें, १५. रहमदिल खुदासे, १६. आस्मान्में खुदाकी आवाज़ गूँजी ।

"कि ऐ मासूम भोली हूर तुझको जो शिकायत है
ज़मींके हालसे नावाक़िफ़ीयतकी बदौलत है
अभी शायद नहीं समझा है तूने इस हक़ीक़त को[1]
दिये हैं मुख्तलिफ़ औसाफ़[2] हमने मर्दो-औरतको

इससे आगे पुरुषोंको प्रदान की गईं विशेषताओंका १५-१६ अशआरमें वर्णन करनेके वाद स्त्रियोंको अता की गई खूबियोंका उल्लेख इस प्रकार करते हैं—

तू वाक़िफ़ ही नहीं है अस्लमें औरतकी फ़ितरतसे[3]
दिये हैं इसको चन्द औसाफ़ हमने अपनी क़ुदरतसे
वफ़ामें हमने इसकी सन्फ़को कामिल बनाया है
हक़ीक़तमें इसे इन्सानियतका दिल बनाया है
मुनव्वर[4] इसकी आँखोंको किया है हमने इस्मतसे[5]
ख़मीर[6] इसका हक़ीक़तमें बनाया है मुहव्बतसे
इसीके दमसे है जो कुछ है रौनक़ बज़्मे-हस्तीकी
वही तो जान है दरअस्ल इन्सानोंकी बस्तीकी
मुरव्वत[7] और मुहव्बत हर तरफ़ है इसकी दुनियामें
रवाँ[8] शर्मो-हया है ख़ून बनकर उसके आज़ामें[9]

यह औसाफ़ इसलिए औरतको बख़्शे हैं हक़ीक़तमें
मदद दे मर्दको वह इंकशाफ़े-राज़े-क़ुदरतमें[10]

---

१. वास्तविकताको, २. भिन्न-भिन्न विशेपताएँ, ३. स्वभावसे, ४. प्रकाशमान, ५. शीलसे, ६. शरीर, ७. लिहाज, ८. प्रवाहित, ९. धमनियोंमें, १०. प्रकृतिके भेद ज्ञात करनेमें।

भला हैरत न होगी किसको तेरी इस शिकायतसे
कि है महरूम[१] औरत क्यों जहाँबानीकी[२] दौलतसे
करेंगी काम किरनें चाँदकी क्योंकर कुदालोंका
लिया जायेगा क्योंकर बर्गे-गुलसे[३] काम ढालोंका ?
गराँ[४] गुज़रेगी तबए नर्मपर[५] काविश हुकूमतकी
सियासत[६] पल सकेगी गोंदमें क्योंकर मुहब्बतकी ?

है उसके वास्ते बेहतर जहाँबानीसे महरूमी[७]
अता[८] हमने उसे दुनियामें की है घरकी मख़्दूमी[९]
यह क्या कम है बनाया है उसे मर्दोंकी माँ हमने
रखा है उसके क़दमोंके तले बागे-जिनाँ[१०] हमने
उसे इज़्ज़त अता की है, उसे हुरमत[११] अता की है
उसे इफ़्फ़त[१२] अता की है, उसे इस्मत[१३] अता की है
हमारे हर नबीने उसको माँ कहकर पुकारा है
उसीकी गोदमें हँस-खेल कर बचपन गुज़ारा है

निज़ामे-दहर[१४] अब भी उसके हाथोंमें है ऐ नादाँ !
कि गोदीमें उसीकी तरबियत[१५] पाता है हर इंसाँ

---

१. वंचित, २. हुकूमतसे, ३. फूलकी पत्तीसे, ४. बोझल, भार, ५. कोमल स्वभावपर, ६. राजनीति, ७. शासनसे अलग रहना, ८. प्रदान, ९. अन्तःपुरका शासन, घरकी मालिकी, १०. जन्नतका उद्यान, ११. प्रतिष्ठा, १२. पाकदामनी, शीलव्रतित्व, संयम, १३. शील, १४. विश्व-व्यवस्था, १५. परवरिश, लालन-पालन।

सधाये जायें बच्चे अम्ने-आलमपर[1] नज़र रखकर
तो पैदा ही न होने पायें फिर दुनियामें ग़ारतगर[2]
वह अम्नो-आफ़ियतके दर्स[3] बच्चोंको अगर देगी
तो ज़ुल्मो-जौरो-नफ़रतसे जहाँको पाक कर देगी
ज़िया[4] निकलेगी उसकी तरबियतसे[5] जाँनिसारीकी[6]
जहाँसे दूर कर देगी ग़रज़मन्दीकी तारीकी[7]

## शोलए-किरदार[8]

जिनकी कथनी कुछ, और करनी कुछ, ऐसे रँगे महानुभावोंका उल्लेख १६ अशआरमें किया है, यहाँ ६ शेर दिये जा रहे हैं।

जिनको हर हालतमें ख़ुश और शादमाँ[9] पाता हूँ मैं
उनके गुलशनमें बहारे-बेख़िज़ाँ[10] पाता हूँ मैं
कैसी हैरत है कि ख़ुद उनको है, मज़दूरीसे आर[11]
जिनको मज़दूरोंके हक़में तरज़ुबाँ[12] पाता हूँ मैं
वहमे-माज़ीको[13] बदलते हैं जो हरदम हालसे[14]
जागुज़ीं उनकी बहारोंमें ख़िज़ाँ पाता हूँ मैं

---

१. संसारकी शान्तिको लक्ष रखकर, २. संहारक, ३. पाठ, ४. रोशनी, ५. शिक्षा-दीक्षासे, ६. प्राणोत्सर्ग करनेकी, जानपर खेल जानेकी, ७. स्वार्थकी अँधेरी, ८. आचरण-ज्वाला, ९. प्रसन्न, १०. पतझड़की आशंकासे रहित, ११. नफ़रत, १२. नेतागीरी करते हुए, १३. भूतकालीन बातोंको, १४. वर्तमान कालसे।

भेजते हैं लानतें जो अहले-ज़र पर ख़ुद उन्हें
अहले-ज़रके दरपै ख़म मिस्ले-कमाँ[1] पाता हूँ मैं
वाज़[2] कहते हैं मुहब्बतके, मुरव्वतके जो रोज़
घरमें ख़ुद अपने, उन्हें चंगेज़ख़ाँ[3] पाता हूँ मैं
देखता हूँ कूचहाए-मासियतमें[4] घूमते
बरसरे-मिम्बर जिन्हें रतबुल्लिसाँ[5] पाता हूँ मैं

## एक गदाए-बेनवा[6]

[ २६ मैं-से १६ ]

धन-संचय करना देशमें दरिद्रता और भुखमरी फैलाना है—

इक गदाए-बेनवासे आज यह मैंने कहा
"क्या भला लगता है तुझको भीक दर-दर माँगना
बात यह क्या है कि महनतसे हज़र[7] करता है तू
दूसरोंके सूखे टुकड़ोंपर बसर करता है तू
तेरी बेकारीका कुल हिन्दोस्ताँपर है असर
बार[8] है तेरा वजूदे–नामुबारक[9], क़ौमपर
हर कसो-नाकसके[10] आगे हाथ फैलाता है तू
हट्टा-कट्टा है मगर महनतसे घबराता है तू

---

१. कमानकी तरह झुका हुआ, २. भाषण, ३. एक ज़ालिम बादशाहका नाम, ४. गुनाह करनेके अड्डोंपर, ५. भाषण-मंचसे बुराई करने वाले, ६. निरीह भिक्षुक , ७. नफ़रत, ८. बोझ, ९. मनहूस अस्तित्व, १०. पात्र-अपात्रके ।

ठोकरें खिलवाती है कम्बख़्त बेकारी तेरी
झिड़कियोंकी नज़्र हो जाती है ख़ुद्दारी[1] तेरी
आजिज़ीसे[2] आगई पस्ती[3] तेरे इख़लाक़में[4]
कौन हो सकता है तुझसे पस्ततर[5]! आफ़ाक़में[6] ?"

सुनके मेरी बात बोला वह गदाए बेनवा—
"तूने जो कुछ भी कहा बाबा! वह बिल्कुल सच कहा
कुछ कहूँ मैं भी अगर बरहम[7] न हो तेरा मिज़ाज
मेरी इस हालतका ज़िम्मेदार है तेरा समाज
मेरी वीरानीका बाइस[8] तेरे साहूकार हैं
जिनके घरमें सीमो-ज़रके[9] हर तरफ़ अम्बार[10] हैं
सोने-चाँदीसे ज़मींका पेट भर देते हैं यह
लाखों इन्सानोंकी रोज़ी दफ़्न[11] कर देते हैं यह

हैं गदा-पोशीदा[12] कुछ मज़हबके ठेकेदार भी
कासा[13] बन जाते हैं अक्सर जब्बह-ओ-दस्तार[14] भी
नामपर मज़हबके डाके डालते हैं, रात-दिन
पेट मक्कारीसे अपना पालते हैं, रात-दिन

---

१. स्वाभिमानता, २. गिड़गिड़ानेसे, ३. गिरावट, ४. आचरणमें, ५. हदसे गिरा हुआ, ६. संसारमें, ७. क्रुद्ध, ८. कारण, ज़िम्मेदार, ९. चाँदी-सोनेके, १०. ढेर, ११. भूमिगत, गाड़ देना, १२. मँगते बनानेमें सहायक, १३. भिक्षा-पात्र, प्याला, १४. पगड़ी।

कुछ अज़ाबे-हक़से[1] भी यह फ़ित्नागर[2] डरते नहीं
यह डराते हैं, ख़ुदासे, ख़ुद मगर डरते नहीं
अपने फ़नमें[3] यह बहुत होते हैं कामिल[4] ऐ अज़ीज़ !
इनके फन्देसे निकल जाना है मुश्किल ऐ अज़ीज़ !
करते हैं मतऊन[5] ख़ुद मज़हबको ज़ालिम बेहया
होते हैं बदनाम मज़हबके हक़ीक़ी रहनुमा[6]

शाइरोंमें भी नहीं बाबा गदाओंकी[7] कमी
भीकपर यह भी बसर करते हैं अक्सर ज़िन्दगी
पहले इक कासा क़सीदेका[8] लिये फिरते थे यह
दर पै ज़रदारोंके जाकर मुँहके बल गिरते थे यह
अब भी कुछ-कुछ है, ख़ुशामदके क़सीदोंका रिवाज
लेकिन अब अच्छा नहीं इनको समझता है समाज
कुछ सुना इनकी गदाई कितनी हैबतनाक[9] है ?
शुक्र है मेरी गदाई मक्रसे तो पाक[10] है

---

१. ईश्वरके कोपसे, २. मक्कार, ३. हुनरमें, कौशलमें, ४. दक्ष, ५. बदनाम, ६. नेता, धर्मात्मा, ७. मँगतोंकी, ८. प्रशंसामें कही गई कविता, ९ भयानक, छल-प्रपंच सहित, १०. पवित्र, साफ़।

## आजकल

[ १० में-से २ ]

गो ग़ुलामी नज़रे-तहज़ीबो-तरक़्क़ी हो चुकी
बिक रहा है फिर भी हर कूचेमें इन्साँ आजकल
ज़िक्र करते हैं ख़ुदाका हम कुछ इस अन्दाज़से
जैसे ख़ुद इन्साँ ख़ुदाका है निगहबाँ[1] आजकल

## सोज़े-नातमाम[2]

[ ५ में-से ३ ]

इलाही ! आज यह क्या हो गया ज़मानेको ?
कि है गुनाह[3] वसीउलख़याल[4] होना भी
ख़िज़ाँ कमीं[5] में है, गुलचीं है ताकमें शबो-रोज़
ग़ज़ब है बाग़में फूलोंकी डाल होना भी
जो चोटियोंपै है वह घाटियोंसे गुज़रा है
कमाल की है अलामत ज़वाल[6] होना भी

---

१. रक्षक, २. अपूर्ण उत्ताप, ३. अपराध, ४. विशाल दृष्टिकोण, उदार हृदय, ५. घातमें, ६. पूर्णताकी स्थिति अपूर्णतामें है, नीचे से ही ऊपर चढ़ा जा सकता है।

## रमूज़े-हयात[1]

अमलकी[2] जिनमें है क़ुव्वत[3] उन्हें मिलती हैं तासीरें[4]
नुमायाँ[5] हो हयाते-नौ[6] अगर ज़र्रेका[7] दिल चीरें
तड़प हो दर्दकी अब भी अगर पैदा किसी दिलमें
तो लब हों आश्नाँ[8] आहोंसे, आहोंमें हो तासीरें
ख़ुदा तौफ़ीक़[9] देता है, जिन्हें, वह यह समझते हैं
कि ख़ुद अपने ही हाथोंसे बना करती हैं तक़दीरें
तलब हो ज़िन्दगीकी[10] तो सकूँना-आश्ना[11] हो जा
कि लफ़्ज़ोंमें नहीं होती हैं इन बातोंकी तफ़सीरें[12]

## नोश-ओ-नेश
### [ १२ में-से ७ ]

उठ गया इंसानकी नज़रोंसे महनतका वक़ार[13]
बख़्श दी तहज़ीबे-हाज़िरने[14] तन-आसानी[15] बहुत
रह गया मायूस[16] होकर तू ही ऐ नादान! ख़ुद
हैं खज़फ़ रेज़ोंमें[17] अब भी लाले-रुम्मानी[18] बहुत

---

१. जीवनका उद्देश्य, ज़िन्दगीका भेद, २. कार्य करनेकी, अमली जामा पहनानेकी, ३. शक्ति, ४. प्रभाव डालनेकी शक्ति, ५. प्रकट, ज़ाहिर, ६. नवजीवन, ७. कणका, ८. परिचित, ९. योग्यता, सहायता, १०. जीवनकी इच्छा, ११. सुख-चैनसे बे-पर्वाह, १२. टीकाएँ, १३. आदर, इज़्ज़त, १४. वर्त्तमान सभ्यताने, १५. शरीरको आराम पहुँचानेवाली चीज़ें, १६. निराश, १७. ठीकरोंके टुकड़ोंमें, १८. अनारके दाने।

अब उठा ही चाहता है, होशके रुख़से नक़ाब[1]
भर चुकी है, अक़्लका बहरूप नादानी बहुत
गामज़न[2] सदियोंसे है, गो[3] जादए-तहज़ीबपर[4]
दूर है इनसानियतसे नौए-इनसानी[5] बहुत
हैं यह सब तहज़ीबे-हाज़िरकी करम-फ़र्माइयाँ[6]
हो गया है आज अरज़ाँ[7] ख़ूने-इनसानी बहुत
लेके निकले हैं सरे-बाज़ार सूखी हड्डियाँ
फ़ाक़ामस्तोंको हुआ है शौक़े-उरियानी[8] बहुत
आइए अब ख़ुदको भी महनतसे कर लें आश्नाँ[9]
हो चुकी मज़दूरकी 'अफ़सर' सनाख़्वानी[10] बहुत

## शरहे-इसरार

### [ ६ में-से ४ ]

नज़रको वुसअ़ते[11] हासिल न होंगी दूरबीनोंसे
ख़ुदा तक हो नहीं सकती रसाई[12] इन मशीनोंसे
किसे कहते हैं दरिया, यह ख़शो-ख़ाशाक[13] क्या जानें
हक़ीक़तका[14] पता शायद मिले कुछ तहनशीनोंसे[15]

---

१. चेतनाके कपोलसे पर्दा, २. मार्गरत, ३. यह माना कि, ४. सभ्यताकी पगडण्डीपर, ५. वर्तमान मानवता, ६. कृपा, ७. सस्ता, ८. नग्नताका चाव, ९. परिचित, १०. प्रशंसा, ११. विशाल दृष्टिकोण, उदार दृष्टि, १२. पहुँच, १३. तिनके-घास, १४. वास्तविकताका, १५. दरियाकी तहमें जानेवालोंसे ।

इबादतके[1] लिए भी अब ज़रूरत है मशीनोंकी
गये वह दिन हुआ करते थे जब सज्दे जबीनोंसे[2]
वही अहदे-अमलमें[3] बरसरे-मंज़िल[4] भी पहुँचेंगे
पसीना बनके जिनका ख़ून निकलेगा जबीनोंसे[5]

## इशारे

जहाँमें रवाँ ज़िन्दगीके हैं धारे
बढ़े जाओ आगे, हैं इनके इशारे
चले हैं यहाँ ख़ुद जो अपने सहारे
सलामत रहे वोह किनारे-किनारे

यह माना भँवरसे निकलना है मुश्किल
है हर क़तरा दरियाका तूफ़ाने-दर दिल
कहीं तो नज़र आ ही जायेगा साहिल[6]
कभी लग ही जायेंगे हम भी किनारे

यह हैं इस निज़ामे-तमद्दुनके[7] जल्वे
तुझे फ़ख़्र[8] जिसपर हमेशा रहा है
जो महनतसे खेतोंको भरपूर कर दें
वही दाने-दानेको दामन पसारे

---

१. उपासनाके लिए, २. मस्तकें ज़मीनपर टेककर नमाज़ पढ़ी जाती थी, ३. कर्म-युगमें, ४. लक्ष तक, निश्चित मार्ग तक, ५. माथेसे गिरेगा। ६. किनारा, ७. सभ्य संसारकी व्यवस्थाके, ८. अभिमान।

वह गुल ताज़ा होंगे जो मुर्झा गये हैं
छटेंगे वह बादल भी जो छा गये हैं
वह सँभलेंगे गेसू[1] जो बल खा गये हैं
बहार आ रही है ख़िज़ाँके सहारे[2]

यह कहता है, बात होशकी इक जनूनी[3]
न हरगिज़ समझना इसे बदसगूनी
यह बज़्मे-फ़लक[4] इससे होगी न सूनी
अगर टूट जायेंगे दो-चार तारे

है ख़तरेमें मँजधारके नाव जिनकी
ख़ुदा जाने क्या जानपर उनके बीती
खड़े हैं लिये हम तो किश्तीको अपनी
कभी इस किनारे कभी उस किनारे

अभी तो बहुत दूर है तुमको चलना
है पुर पेच राहोंसे[5] होकर निकलना
सँभलकर है गिरना, है गिरकर सँभलना
कहाँ तक चलोगे किसीके सहारे

---

१. ज़ुल्फ़ें, लटें, २. पतझड़की ओटमें, ३. दीवाना, पागल, ४. आस्मानकी महफ़िल, ५. कण्टकाकीर्ण मार्गोंसे ।

वह हैबत[1] हमारी अगर दीदनी[2] थी
तो इबरतके क़ाबिल[3] है यह बेबसी[4] भी
कभी जो बरसते थे आँखोंसे अपनी
निकलते हैं आहोंसे अब वह शरारे[5]

•

ठहरता नहीं ज़िन्दगीका सफ़ीना[6]
यही इस जहाँका है 'अफ़सर' क़रीना
है बेताबो-बेचैन रहना ही जीना
यह हर लहज़ा करती हैं मौजें इशारे

## रम्ज़की बातें[7]

[ ६ में-से २ ]

डर कैसा ? तारीकियाँ शबकी घिर-घिरकर जब आयेंगी
मेरे इस मिट्टीके दियेमें सूरजके गुन पायेंगी
तू ऐ भूले-भटके राही ! उठके कमर तो कस पहले
यह ही टेढ़ी-मेढ़ी राहें ख़ुद रहबर[8] बन जायेंगी

---

१. भय, डर, २. दर्शनीय, ३. सबक़ लेने योग्य, ४. मजबूरी, लाचारी, ५. चिनगारियाँ, ६. नौका, ७. भेदकी बातें, ८. पथ-प्रदर्शक।

## रज़मगाहे-हयात[1]

## [ १४ में-से ७ ]

दिखा वोह जज़्बे[2], क़दमोंमें उतर आयें जहाँ[3] लाखों
कि अर्सा[4] इस जहाँ में ज़िन्दगीका तंग[5] है साक़ी !
कहींसे ढूँढ़कर ला, आफ़तावे-नौके[6] जलवोंको
कि तेरे मैकदेकी[7] सुबह भी शब-रंग[8] है साक़ी !
रखे ख़ुद हाथ यज़दाँ[9] सुनके जिसको अपने कानोंपर
कहाँ तेरी सदा[10] इतनी बुलन्द आहंग[11] है साक़ी !
यहीं आकर हुईं शीरो-शकर[12] दुनियाकी तहज़ीवें
असर अब तक किनारे-आवेरूदे[13] गंग है साक़ी !
तुझे अब तक नहीं है, रफ़अतोंका[14] अपनी अन्दाज़ा
झुका क़दमोंपै तेरे चर्ख़े-मीना रंग है साक़ी !
यह क्योंकर दोश[15] पर लेकर चलेंगे बारे-आज़ादी[16] ?
तेरे मस्तोंमें हर-इक आज लुँजो-लंग[17] है साक़ी !
जिन्हें तौफ़ीक़[18] है वह अब भी कसबे-सोज़[19] करते हैं
शरारोंसे[20] भरा दामाने-कोहो-संग[21] है साक़ी !

---

१. जीवन-संघर्ष-स्थल, २. कशिश, जोश, ३. लोक, ४. जीवन-क्षेत्र, ५. संकीर्ण, ६. नवीन सूर्य्यके, ७. मदिरालयकी, ८. रात्रि-जैसी, ९. ख़ुदा, १०. वाणी, ११. ऊँची आवाज़, १२. घुली-मिलीं, १३. पवित्र गंगाके किनारेपर, १४. उड़ानका, पहुँचका, १५. कंधोंपर, १६. स्वराज्यभार, १७. लूले-लँगड़े, १८. सामर्थ्य, १९. कड़ी मेहनत, २०. अंगारोंसे, २१. पर्वतों और पत्थरोंका दामन।

## दर्गहे-हुस्नो-इश्क[1]

[ ८ शेरमें-से ५ ]

कहाँकी ताअत[2], कहाँकी बख़्शिश[3], हरमें[4] ख़ुदाकी दुकाँ नहीं है
यह दरगहे-हुस्नो-इश्क़ ज़ाहिद ! मुक़ामे-सूदो-ज़ियाँ[5] नहीं है

गुमाँ[6] था मंज़िलका मुझको जिसपर, वहाँ पहुँचकर खुला यह उक़दा[7]
कि मैं भी गुम करदहराह[8] तू भी, यहाँ कोई राहदाँ[9] नहीं है

शरार[10] हैं आहे-आतिशींके[11], समझ रहे हो जिन्हें सितारे
ग़ुबार है इक दिले-हज़ींका[12], यह आस्माँ आस्माँ नहीं है

नज़रको वुसअत[13] नसीब होगी, हदोंसे निकलेगा जब तख़ैय्युल[14]
हरम भी ऐ शैख़ ! सतहे-बीं[15] सुन, मकान है, ला-मकाँ[16] नहीं है

करे जो हिम्मत तो कुछ फ़ज़ाएँ इन आसमानोंके पार भी हैं
यह मैंने माना सकूँ[17] मयस्सर तुझे तहे-आस्माँ नहीं है

## नालए-बेबाक[18]

[१० में-से २ ]

एक हालतपर यह रह सकती नहीं
डर गया क्यों गर्दिशे-अफ़लाकसे[19] ?

---

१. हुस्न-इश्क़की दरगाह, २. उपासना, ३. प्रदान किया जाना, क्षमा किया जाना, ४. मस्जिद, ५. हानि-लाभका स्थान, ६. विश्वास, सन्देह, ७. भेद, ८. मार्ग भटका हुआ, ९. मार्गसे अभिज्ञ, १०. चिनगारियाँ, ११. आहरूपी आगके, १२. दुःखे दिलका, १३. विशालता, व्यापकता, १४. सीमा तोड़कर जब विचार बाहर होंगे, १५. संकीर्ण है, १६. अनन्त, विस्तृत, १७. चैन, १८. स्पष्ट कथन, १९. दुनियाकी मुसीबतोंसे ।

मनअ़किस[1] क्योंकर हों इसरारे-हयात[2]
ज़ंग[3] पहले दूर कर इदराकसे[4]

## बहार

[ १८ में-से १० ]

फिर बहार आई हवाए-ख़ुशगवार आने लगी
फिर कोई शै चुपके-चुपके दिलको उकसाने लगी
फिर गुलोंके दिलमें कुछ शोले-से भड़काने लगी
फिर चमनकी हर रविशपर आग दहकाने लगी
ताककी बेलोंमें जब पहुँची तो बल खाने लगी
ताककी[5] बेलोंसे जब निकली तो लहराने लगी
फिर हवाओंको हरी शाख़ोंमें उलझाने लगी
फिर चमनमें ज़ुल्फ़को संबुलकी[6] सुलझाने लगी
फिर हँसी बनकर लबोंपर फूलके छाने लगी
फिर ख़ुशी बनकर कलीके दिलमें लहराने लगी
फिर फलोंमें रूठकर बैठी ब-अन्दाज़े-लतीफ़
पत्तियोंके झाँजसे फिर दिलको बहलाने लगी
फिर निछावर की गुलोंपर[7] लाले-रम्मानीकी[8] छूट
फिर 'ज़मुर्रद[9] करके हल सब्ज़ेपै फैलाने लगी

---

१-२ जीवनके भेद प्रकट, ३. मैल, काई, ४. अक़्लसे, ५. अंगूरकी, ६. एक ख़ुशबूदार घास, बालछड़, ७. फूलोंपर, ८. लाल अनारके दानोंकी, ९. रतन।

छिप गई लै बनके कोयलके रसीले रागमें
आमकी कलियोंपै ख़ुशबू बनके लहराने लगी
फिर हुई झंकार-सी पैदा वह दिलके तारमें
फिर वह चरवाहेके नग़्मोंकी सदा आने लगी
छुपके निकली फिर चमनसे गुल बदामाँ शाद-शाद
बस्तियोंपर फिर चमनका इत्र बरसाने लगी

## नसीमे-सहर[1]

हंगामे-सुबह[2] नाज़से[3] बादे-सबा[4] चली
हर चार सिम्त[5] बाग़में कलियाँ खिला चली
जिस फूलके क़रीबसे गुज़री हँसा चली
सब्ज़ा[6] जो ख़्वाबमें था, उसे भी जगा चली
कलियोंसे छेड़ करती चली गुदगुदा चली
हर गुलसे खेलती हुई बा-सद अदा चली
पौदोंने गोदमें जो लिया तो पलट गई
शर्माई और लजाई, कटी और सिमट गई
इक साँस लेके फिर रविशोंसे गुज़र चली
बे-ख़ौफ़ बे-हिरास चली, बे – ख़तर चली
दामन हज़ार तरहकी ख़ुशबूसे भर चली
शबनमसे[7] छूके भीग गई तरबतर चली

---

१. प्रातःकालीन वायु, २. प्रातःकालमें, ३. नाज़ो-अदासे, ४. हवा, ५. तरफ़, ६. हरियालापन, ७. ओससे।

ग़ुंचोंको[1] छेड़-छेड़के शरमिन्दा कर चली
किस ढंगसे चमनमें नसीमे-सहर चली
इक कुंजमें[2] जो पहुँची तो चकराके रह गई
बल तो बहुत-से खाये, पै बल खाके रह गई
फिर कुंजसे निकलके बहुत नातवाँ[3] चली
और ख़ुश्क पत्तियोंका लिये कारवाँ[4] चली
कुछ ठंडे-ठंडे साँस भरे नीमे-जाँ[5] चली
बे - रूने - बाग़[6], सूरते-उम्रे-रवाँ[7] चली
ख़ाक इस क़दर उड़ाई कि बहुत ही गराँ[8] चली
यह कौन जानता है चमनसे कहाँ चली
'अफ़सर' सबा हर - एकको मसरूर[9] कर गई
कैफ़ीयतोंसे रूहको[10] मामूर[11] कर गई

## चाँदनी रात

चाँदनी अफ़सुर्दा[12] भी है ज़र्द[13] भी
छन रहा है हल्का-हल्का दर्द भी
दिलकी धड़कन गोया दिलको छोड़कर
मुन्तशिर[14] है चाँदनीके फ़र्शपर

---

१. कलियोंको, २. उद्यानमें ३. कमज़ोर, ४. यात्रीदल, ५. अधमरी-सी, ६. उद्यानके बाहर, ७. जाती हुई उम्रके समान, ८. तेज़, शीघ्र, ९. प्रसन्न, १०. दिलोंको, आत्माको, ११. परिपूर्ण, १२. कुम्हलाई, १३. पीली, १४. बिखरी हुई।

कुछ परेशानी है, ऐसी माहमें[1]
जैसे खो जाये मुसाफ़िर राहमें
चाँदनीमें कोई शै[2] बेताब है
हुस्नका शायद परेशाँ ख़्वाब है
चाँद है अश्कोंसे[3] मुँह धोये हुए
नग़मे ग़म-अंगेज़[4] हैं सोये हुए
यह सकूँ[5] है आज कुछ आशुफ़्ता[6] हाल
या तड़पके बाद है कोई निढाल
ख़ामुशी जो हम-रहे-महताब[7] है
बोलनेके वास्ते बेताब है
चाँदनीका हुस्न इसके दमसे है
और मुहब्बत इसको 'अफ़सर' हमसे है

ग़ज़लोंके चुने हुए शेर—

अब रातका है अल्लह मालिक
दिन कुछ न पूछो क्योंकर गुज़ारा
कुछ सब्रकी भी तौफ़ीक़[8] दे-दे
होता नहीं है ग़मपर गुज़ारा

सच तो यह है इस दुनियामें हरकतसे ही बरकत है
जिसने कुछ ढूँढा होगा तो उसने कुछ पाया होगा

---

१. चन्द्रमामें, २. वस्तु, ३. आँसुओंसे, ४. गीत शोकाकुल हैं, ५. चैन, ६. परेशान, ७. चन्द्रमाके साथ, ८. सामर्थ्य।

मौत है वह राज़[1] जो आख़िर खुलेगा एक दिन
ज़िन्दगी है वह मुअम्मा[2] कोई जिसका हल नहीं

जब दिलपै न हो क़ाबू अपना, क्या ज़ब्त करें, क्या सब्र करें
मुझ जैसे काश वह हो जायें, जो आ-आकर समझाते हैं
हम जिसको मौत समझते हैं, पैग़ामे-हयाते-जदीद[3] है वोह
यह फूल चमनमें जितने हैं, फिर खिलनेको मुर्झाते हैं
दो शख़्स जब ऐसे मिलते हैं, आपसमें जिनको मुहब्बत हो
ख़ामोशी तारी[4] होती है, लब खुल-खुलकर रह जाते हैं

लिल्लाह यह बतादे ऐ जज़्बए-मुहब्बत!
क्या हुस्न है ख़ुदामें, क्या ऐब आदमीमें ?

इस जहाँमें हस्तीकी[5] रात यूँ गुज़रती है
इक चिराग़ बुझता है इक चिराग़ जलता है
हाल पूछनेवाले! हाल क्या बताऊँ मैं.
अब लहू भी रग-रगमें दर्द बनके चलता है
बे असर नहीं होता नाला जिस-जिसको कहते हैं
दिलमें जा उतरता है, दिलसे जब निकलता है
इस क़दर भी उल्फ़तमें हो न कोई बे क़ाबू
दिलमें सोचता क्या हूँ, मुँहसे क्या निकलता है

---

१. भेद, २. समस्या, पहेली, ३. नवीन जीवन-संदेश, ४. छा जाती है, ५. जीवनकी।

हमारे ज़मानेका दस्तूर यह है
वही जीतते हैं, जो खाते हैं मातें
हैं आमोंके बाग़ोंमें नग़मे[1] रसीले
यह सावनकी रातें हैं, कोयलकी रातें
यह गोरे-ग़रीबाँकी[2] बस्ती अजब है
न क़ौमें यहाँ हैं, न फ़िरके न ज़ातें
कोई दिलपै क़ाबू भी रक्खे कहाँ तक
जवानीके दिन और सावनकी रातें
यह जी चाहता है मेरा आज 'अफ़सर' !
अभी और तुमसे किये जाऊँ बातें

हाय क्या शग़्ल[3] मुहब्बतमें है दीवानोंका
दिलकी तस्वीर बनाते हैं मिटा देते हैं
पूछता है जो मुहब्बतकी हक़ीक़त कोई
हाल हम दिलकी तबाहीका सुना देते हैं
कैफ़ियत उनके करमकी[4] कोई हमसे पूछे
जिससे ख़ुश होते हैं दीवाना बना देते हैं

ख़ुद्दारियाँ[5] यह मेरे तजस्सुसकी[6] देखना
मंज़िल पै आके अपना पता पूछता हूँ मैं

---

१. संगीत, २. क़ब्रोंको, ३. काम, ४. कृपाकी, ५. स्वाभिमान, ६. खोज करनेकी, तलाशकी ।

उन प्यारी-प्यारी आँखोंपर इल्ज़ाम क्या रखूँ
दिलसे सितमज़रीफ़का मारा हुआ हूँ मैं

ग़ज़बके देखनेवाले हैं यह सितारे भी
कहाँसे देख रहे हैं हवा ज़मानेकी
फ़साना-ख़्वाँ[1] तेरी आँखें क़ुसूरवार नहीं
मैं जानता हूँ ख़ता है मेरे फ़सानेकी

यह उसके दिलसे पूछो तुम, होती है सहर[2] किस आफ़तसे
आँखोंमें गुज़ारी हों जिसने, यह लम्बी रातें जाड़ोंकी

उन्हें नसीब कहाँ शान बेनियाज़ी की
है सच तो यह कि बुतोंने ज़मानासाज़ी की
कमाले-इश्क़में नैरंगे-हुस्न होता है
हुआ है यूँ भी कि महमूदने अयाज़ी की

जो जीना हो तो पहले ज़िन्दगीका मुद्दआ समझे
ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो आदमी ख़ुदको ख़ुदा समझे
मुझे ऐ चाँद ! तेरी मंज़िलोंपर रश्क[3] आता है
मुसाफ़िर वह नहीं है जो सफ़रका मुद्दआ समझे

---

१. कहानी सुननेवाले, २. सुबह, ३. ईर्ष्या ।

हाय वह जिसकी उमीदें हैं ख़िज़ाँपर मौक़ूफ़
शाख़े-गुल सूखके गिरजाये तो काशाना[1] बने
भटकती हैं नज़रें मेरी हर तरफ़
ख़ुदा जाने किस भेसमें तू मिले

जो ग़म हद्से ज़ियादा हो, ख़ुशी नज़दीक होती है
चमकते हैं सितारे रात जब तारीक[2] होती है
सकूने-क़ल्बको[3] हलकी-सी भी उम्मीद काफ़ी है
कि नूरे-सुबहकी[4] पहली किरन बारीक होती है
वह दौलत जिसका दुनियाने मसर्रत[5] नाम रक्खा है
तेरे जल्वोंकी दामाने-नज़रमें भीक होती है

दिलमें घर करनेके अन्दाज़ कहाँसे लाऊँ
हो असर जिसमें वह आवाज़ कहाँसे लाऊँ
चुटकियाँ लेती है हर बात तुम्हारी दिलमें
मैं यह गुफ़्तारका अन्दाज़ कहाँसे लाऊँ

बज़्ममें इन मदभरी आँखोंको गर्दिश दे मगर
इसका अन्दाज़ा तो करले किसको कितना होश है
यह नज़रकी जुम्बिशें, यह चाल इठलाई हुई
कुछ तुम्हें भी आज अपनी बे-ख़ुदीका होश है ?

---

१. कुटिया, २. अँधेरी, ३. दिलके चैनको, ४. प्रातःकालीन सूर्यकी, ५. ख़ुशी ।

हमें सब्र भी इश्क़ ही ने सिखाया
कहें क्या कि हम किस गुरूके हैं चेले

कहींकी रहेगी न आवारा होकर
यह ख़ुशबू जो फूलोंने काँटे पै तोली
अकेला रहा भीड़में इस जहाँकी
किसीने यहाँ मेरी बोली न बोली

हरख़िज़ाँके ग़ुबारमें हमने
कारवाने-बहार[1] देखा है
कितने पशमीना पोश जिस्मोंमें[2]
रूहको तार-तार देखा[3] है

उठ कर ऐ खेनेवाले ! हिम्मतके पतवार लगा
किश्ती है टूटी-फूटी, दूर अभी है किनारा भी
इस दुनियाका जीना भी सच पूछो तो खेल-सा है
बाज़ी उसके हाथ रही जो जीता भी हारा भी

कुछ इस तरह टूटा हमारा क़फ़स[4]
कि हर आशियाना[5] क़फ़स बन गया
यह रफ़्तार क्यों सुस्त है वक़्तकी
हर-इक लमहा[6] एक-इक बरस बन गया

---

१. बहारका आगमन, २. दुशालेसे ढके शरीरोंमें, ३. आत्माको जीर्ण-शीर्ण, ४. पिंजरा, ५. नीड़, ६. क्षण ।

रही अब यहाँ हुस्नकी क़द्र क्या !
कि आशिक़ हर-इक बुलहविस[1] बन गया
ख़ुद अपने ही हाथोंसे ऐ हमनफ़स[2] !
चमन-का-चमन ख़ारो-ख़स[3] बन गया

इक दिन तुलूअ[4] होगा फ़र्दा[5] नये सिरेसे
होती है रोज़ पैदा दुनिया नये सिरेसे

हाल यह है रब्ते-अक़वामे-जहाँका[6] आजकल
ख़ुशगुमानीकी[7] तलब है, बदगुमानी[8] दिलमें है

अपने ऊपर कर भरोसा, जज़्बे-दिलसे[9] काम ले
यूँ न साक़ी आयेगा उठ बढ़के मीना थाम ले

जहाँके गुलज़ारे-ज़िन्दगीमें हवाएँ कैसी यह चल रही हैं
कि फ़र्द[10] मुर्झाके रह गये हैं, जमाअतें[11] फूल-फल रही हैं

२९ अगस्त १९५८ ई०

---

१. कामुक, २. साथी, ३. काँटों और घाससे भर गया, ४. उदय, ५. भविष्य, ६. जनताके व्यवहारका, ७. सद्व्यवहारकी इच्छा, ८. खोट, बुराई, ९. दिलकी आवाज़से, १०. व्यक्ति, ११. संगठित गिरोह ।

# निहाल सेवहारवी

मुंशी अब्दुल खालिक़ 'निहाल' उत्तर राज्यके सेवहारा, ज़िला विजनौरमें २७ अगस्त १९०१ ई० को जन्मे। शाइरी आपको उत्तराधिकारमें प्राप्त हुई, क्योंकि आपके दादा 'ग़रीक़' साहव भी वहुत अच्छे शाइर हुए हैं; जो कि शैख़ ज़ौक़-जैसे उस्तादके शिष्य थे। शिक्षा-प्राप्त करने योग्य आयुमें 'निहाल' को सिवहारेके स्कूलमें प्रवेश कराया गया, किन्तु आप वहाँसे कोई डिगरी प्राप्त न कर सके। शाइरीकी ओर रुचि बचपनसे ही थी। अतः आपके शाइराना दिलो-दिमाग़ गणित-जैसे शुष्क एवं नीरस विषयके एवज़ साहित्यिक अध्ययनमें विशेष रुचि रखते थे। परिणाम स्वरूप स्कूली बन्धनोंसे मुक्त होकर घरपर ही स्वतन्त्र रूपसे उर्दू-फ़ारसीका गहरा अध्ययन किया।

**परिचय**

युवा होनेपर आजीविकाकी खोजमें दिल्ली पहुँचे तो आपको नार्थ-वेस्टर्न रेलवेके एकाउण्ट्स आफ़िसमें किलर्की मिल गई। प्रकृतिका विचित्र विधान देखिए कि जिस गणितसे आप ज़ी चुराते रहे, उसी गणितने जीवन पर्य्यन्त आपका साथ दिया।

दिल्लीमें रहते हुए ही आपकी शाइरीका विकास हुआ। वहीं आपने मिर्ज़ा दाग़के ख्यातिप्राप्त प्रमुख शिष्य एवं दामाद नवाव सिराजुद्दीन अहमदख़ाँ साहव 'साइल' देहलवीके चरणोंमें वैठकर व्यवस्थित रूपसे शाइरीके गुर प्राप्त किये। संयोगकी वात आपके दादा शैख़ ज़ौक़के शिष्य थे और आप भी ज़ौक़के परशिष्य 'साइल' के शिष्य[1] हुए। गोया दादा-पोते दोनों ही ज़ौक़-

**ज़ौक़े-शाइरी**

---

१. नवाव 'साइल'के उस्ताद मिर्ज़ा 'दाग़' 'ज़ौक़'के प्रमुख शिष्य थे। 'ज़ौक़' और 'दाग़'का विस्तृत परिचय एवं कलाम 'शेरो-सुख़न' प्रथम भागमें और 'साइल'का चतुर्थ भागमें दिया जा चुका है।

स्कूलके स्नातक हुए। उर्दू-फ़ारसीका अध्ययन अच्छा था ही, नवाब साइल जैसे मँजे हुए उस्तादके सान्निध्यसे आपकी शाइरीमें उत्तरोत्तर निखार आता गया। नवाब साइलने अपने इस उदीयमान शिष्यको बहुत रुचि लेकर परवान चढ़ाया। दिल्लीकी बा-मुहावरा टकसाली ज़बानका अभ्यास कराया। भाषामें माधुर्य्य, प्रवाह, लालित्य और लोच लानेके गुर सिखलाये। दिल्लीके शाइराना वातावरणसे परिचित कराया। गुरु अपने शिष्यको जो कुछ दे सकता है, वह सब कुछ नवाब 'साइल' ने 'निहाल' को प्रदान किया।

**देशप्रेम और प्रेरणाप्रद शाइरी**

'निहाल'ने अपने उस्तादसे शाइरीके सभी उस्तादानः नुक़्ते हासिल किये। मगर उनकी पुरानी डगरपर चलनेके एवज़ उन्होंने डा० 'इक़बाल,' 'जोश' मलीहाबादी और 'हसरत' मोहानी—द्वारा खोज निकाले गये मार्गपर चलना उचित समझा। क्योंकि शाइरीकी वह पुरानी डगर काफ़ी जीर्ण-शीर्ण हो चुकी थी, लोग उसमें अब ठोकरें खाने लगे थे और नवीन मार्ग काफ़ी प्रशस्त एवं आकर्षक था। निहालने फ़रियादे-बुलबुलके बजाय 'सरोदे-कारवाँ' गुनगुनाना अधिक उपयुक्त समझा—

## सरोदे-कारवाँ[1]

[ १५ मैं-से ८ ]

जहादे-ज़िन्दगीमें[2] क्यों हो सरगिराँ[3], चले चलो
रवाँ-दवाँ[4] चले चलो, रवाँ-दवाँ चले चलो
बुलन्दियोंपै हो नज़र, क़दम उठाओ बेख़तर
नहीं है दूर महरो-माहो-कहकशाँ[5] चले चलो

---

१. यात्री-दलका गीत, २. जीवन-युद्धमें, ३. असन्तुष्ट, खिन्न, ४. शीघ्रतापूर्वक, तेज़ रफ़्तारसे, ५. सूर्य्य-चन्द्र और तारोंका समूह।

डरो न ग़मकी रातसे, तमव्वुजे-हयातसे[1]
बलासे सख़्त ही सही, यह इम्तहाँ चले चलो
हो सरपै बारिशे-सितम, मगर रुको न इक क़दम
हज़ार टूटती है बर्क़े-बेअमाँ[2] चले चलो
जो अ़ज़्म उस्तुवार[3] है, तो फ़तह हमकनार हैं
करो न भूलकर शिकस्तका गुमाँ[4] चले चलो
यह क्या, झिजकके रह गये, बुलन्दो-पस्त दहरसे[5]
मुजाहिदानः मस्ले-रोदे-नग़्मःख़्वाँ[6] चले चलो
हैं हिम्मतें अगर यही, मिलेगा कूए-दोस्त भी
न होगा यह जुनूने-शौक़ रायगाँ[7] चले चलो
हो जिस मुक़ामसे गुज़र बिहिश्ते-नौ[8] हो जल्वःगर[9]
ब-रंगे-मौसमे-बहार गुलफ़िशाँ चले चलो

'निहाल' पर भी जवानी आई। मगर आपने 'जवानीसे पहले जवानी लुटा दी' कहनेके बजाय 'जवानी' शीर्षक नज़्ममें भी इस प्रकारके शेर कहे—

## जवानी

[ २८ में-से ५ शेर ]

तू कहाँ है, तू कहाँ है ऐ जवानी हिन्दकी!
ऐ जवानी हिन्दकी! ऐ कामरानी हिन्दकी!

---

१. ज़िन्दगीकी लहरोंसे, थपेड़ोंसे, २. विनाशक बिजली, ३. दृढ संकल्प, ४. हारका सन्देह, ५. दुनियाके उत्थान-पतनसे, ६. देशके सिपाहियोंके गायनरूपी नदीकी तरह, ७. व्यर्थ, ८. नवीन स्वर्ग, ९. प्रकट।

तू नहीं तो एक गोरिस्ताँ[1] है अपनी सरज़मीं
वजहे-नंगे-आलमे-इन्साँ[2] है अपनी सरज़मीं
यह जहाने-हिन्दकी तारीक[3] सूरत अल्लामाँ
यह ग़ुलामी यह ग़ुलामीकी कहूलत अल्लामाँ
एक आलम फिर सुने शोरे-नवाए-इन्क़िलाब[4]
तू अगर इस देशमें आये तो आये इन्क़िलाब
यह तग़ाफ़ुल[5] ताबिके, इस ख़ाकदाँमें लौट आ
ऐ जवानी लौट आ, हिन्दोस्ताँमें लौट आ

'निहाल'ने कूचए-इश्क़में आवारा फिरने, आहों-फ़ुग़ाँ करने और हिज्रे-यारमें टसुवे बहानेके बजाय जीवनका लक्ष्य यह बताया—

## मुन्तहाए-ज़िन्दगी[6]

[ ६ में-से २ शेर ]

ख़िदमते-अहले-वतन है मुन्तहाए-ज़िन्दगी
इससे बढ़कर और क्या है कीमयाए-ज़िन्दगी[7]
जान देकर भी अलमदारे-वतन[8] मरते नहीं
मौतके क़ब्ज़ेसे बाहर है लिवाए-ज़िन्दगी[9]

जिन दिनों 'मुस्लिम लीग' भारतके बटवारेपर तुली हुई थी, उन दिनों भी निहाल—वतन, हिमालय, हिन्दोस्तान, मादरे-हिन्द, तरानए-हिन्द, जैसी देश-प्रेमसे लबालब नज़्म कहनेमें लीन थे। एक नज़्मका नमूना दिया जा रहा है—

---

१. क़ब्रिस्तान, २. मानवताके संसारमें तुच्छताका कारण, ३. अँधेरी, शोचनीय स्थिति, ४. क्रान्तिका नारा, ५. उपेक्षा, ६. जीवनकी पराकाष्ठा, सीमा, ७. जीवनका सार, ८. वतनके ध्वजा-वाहक, ९. जीवनकी पताका।

## मादरे-हिन्द

[ १० में-से ६ शेर ]

ख़ाकमें हिन्दकी अज़मत[1] न मिलाना हरगिज़
दामने-अम्न[2] पै धब्बा न लगाना हरगिज़
है यह रस्मो-रहे-तहज़ीबकी .तौहीन[3] सरीह[4]
ख़ून-मख़लूक़े-ख़ुदाका[5] न बहाना हरग़िज़
यहीं जीना, यहीं मरना, तो यह नफ़रत कैसी
नहीं भारतके सिवा कोई ठिकाना हरगिज़
चींवटी तक भी है इस देशकी वल्लाह अज़ीज़[6]
दिल क़िसी अहले-वतनका न दुखाना हरगिज़
वह ग़नी[7] है, जिसे हो ख़ल्क़की दौलत हासिल
दूसरा ऐसा न पाओगे ख़ज़ाना हरगिज़

मादरे-हिन्दके हैं गबरो-मुसल्माँ[8] फ़रज़न्द[9]
हर्फ़े-तफ़रीक़[10] कभी लब पै न लाना हरगिज़

'निहाल' पराधीनताको भारतके लिए अभिशाप समझते थे। आपके हृदयमें जो वेदना और व्यथा थी। उसे आपने इस प्रकार व्यक्त किया है—

---

१. प्रतिष्ठा, २. सुलह-शान्तिके दामनपर, ३. अपमान, ४. वास्तवमें, ५. ईश्वरीय सृष्टिका रक्त, ६. प्यारी, ७. धनिक, ८. हिन्दू-मुस्लिम, ९. पुत्र, १०. भेद-भावकी बात।

## ग़ुलामोंकी दुनिया

[ ४१ में-से ६ ]

बे-अ़म्ल[1] बे-आबो-ताबे-ज़िन्दगी,[2] बे-नंगो-नाम[3]
आह वह दुनिया जहाँके रहनेवाले हों ग़ुलाम
जिसके इन्सानोंको नंगे-आलमे-इन्साँ[4] कहें
कहनेवाले ज़िन्दगीका जिसको गोरिस्ताँ[5] कहें
कारगाहे-दहरमें[6] तक़दीरके हेटे हैं यह
जिनकी जन्नत छिन चुकी आदमके वह बेटे हैं यह
इनको क्या मालूम किस सूरतसे जीना चाहिए
किस तरह बे-मिन्नते-अग़ियार[7] पीना चाहिए
इनको क्या मालूम है, हस्तीका निस्बुलऐन[8] क्या ?
यह जहाँ कहता है आज़ादी किसे, है चैन क्या ?
इनको क्या मालूम क्या है, शेवहे-मर्दाने-कार[9]
आदमी क्योंकर बदल देते हैं रंगे-रोज़गार
इनको क्या मालूम क्या है अज़मते-ख़ाके-वतन[10]
चाहती है क्या फ़ुग़ाने-सीनए-चाके-वतन[11]
इनको क्या मालूम क्या है, मंज़िलत इन्सानकी
यह ग़ुलामीको समझते हैं सिफ़त इन्सानकी

---

१. अकर्मण्य, किसी बातको कार्य्य रूपमें परिणत न करना, २. प्रभा-हीन, ३. बेशर्म, अप्रसिद्ध, ४. मानव-संसारके दोष, ५. क़ब्रिस्तान, ६. संसारके कार्यालयमें, ७. शत्रुकी ख़ुशामद़के विना, ८. उद्देश्य, ९. पुरुषोंका कर्त्तव्य, १०. देशकी मिट्टीका गौरव, ११. मातृभूमिके विदीर्ण सीनेकी आह ।

इनको क्या मालूम क्या होता है एहसासे-ख़ुदी[1]
आदमीयतके लिए लाज़िम है क्यों पासे-ख़ुदी[2]

अकर्मण्य बने रहकर निराशाओं एवं असफलताके भँवरमें किश्ती डूबती देखना पुरुषत्वके लिए कलंक है। 'निहाल' तूफ़ानोंके अन्दरसे भी जैसे भी हो किश्तीको सही-सलामत किनारे लगानेको मर्दानगी समझते हैं। निराश एवं हतोत्साह होना वे जानते ही नहीं। वे मर्दानावार नारा लगाते हैं—

## नारए—मर्दाना

[ १४ अशआरमें-से ८ ]

ज़माना अज़ीयतरसाँ[3] है तो क्या है
मिरा मुद्दई[4] आस्माँ है तो क्या है

हज़ार ऐसे बारे-गराँ[5] हों तो क्या ग़म
हयात[6] एक बारे-गराँ है तो क्या है

सलामत[7] मिरा ज़ौक़े - ईज़ा - पसन्दी[8]
कड़ी मंज़िले-इम्तहाँ[9] है तो क्या है

बढ़े जा मेरे तौसने-अज़्मो-हिम्मत[10]
हर-इक गामपर[11] हफ़्तख़्वाँ[12] है तो क्या है

---

१. स्वाभिमानकी भावना, २. अहम्‌की आवश्यकता, ३. दुःखदायी, ४. प्रतिद्वन्द्वी, ५. भारी बोझ, ६. ज़िन्दगी, ७. सुरक्षित, ८. दुःख उठानेकी क्षमता, ९. परीक्षाका मार्ग कठिन १०. संकल्प और साहस रूपी अश्व, ११. क़दमपर, रास्तेपर, १२. वे सातों मंज़िलें जो रुस्तमको तै करनी पड़ी थीं।

हुजूमे-तबाहीसे[1] मैं खेलता हूँ
तबाहीका हरसू[2] निशाँ है तो क्या है

हवाओंके तेवर हैं बरहम[3] तो क्या ग़म
बलाओंका ख़ंजर रवाँ[4] है तो क्या है

बना लूँगा ऐसे हज़ार आशियाँ मैं
अगर शोलाज़न[5] आशियाँ है तो क्या है

मेरा देश मेरी उमीदोंका गुलशन
अगर नज़रे-जौरे-ख़िज़ाँ[6] है तो क्या है

इसी तरहकी प्रेरणा-प्रद केवल दो नज़्मोंके चन्द शेर यहाँ और दिये जा रहे हैं—

## नवाए-वक़्त[7]

[ ४० में-से १० शेर ]

आज काँटे हैं अगर तेरे मुक़द्दरमें तो क्या
कल तेरा भर जायगा, फूलोंसे दामन ग़म न कर
तू नज़र आता है जिस ज़ंजीरे-आहनमें असीर[8]
टूट जानेको है वोह ज़ंजीरे-आहन ग़म न कर

---

१. बर्बादियोंके गिरोहसे, २. चारों तरफ़, ३. क्रुद्ध, ४. चलता हुआ, ५. आगकी लपटोंसे घिरा हुआ, ६. पतझड़के ज़ुल्मकी नज़र, ७. वक़्तकी आवाज़, ८. लोहेकी कड़ियोंमें बन्दी।

इक नया अहदे-मुहब्बत[1] आस्माँ लानेको है
मुत्तहिद[2] हो जायेंगे शैख़ो-बिरहमन ग़म न कर
देखता है आज जिस गुलशनको तू वक़्फ़े-ख़िज़ाँ[3]
ताज़ा कैसा, ताज़ा तर होगा वह गुलशन ग़म न कर
फिर निशाते-ताज़ाका[4] पैग़ाम[5] लायेगी बहार
फिर चमनमें बुलबुलें होंगी नवाज़न[6] ग़म न कर
क़तरा इक दिन बहर[7] बन जायेगा, ख़ूने-दिल न पी
दानेको तेरे मिलेगी शाने-ख़िरमन[8] ग़म न कर
नुक्तए-तामीर[9] पिन्हाँ[10] है हर-इक तख़रीबमें[11]
बिजलियाँ हैं तरहे-अन्दाज़े-नशेमन ग़म न कर
गुल अगर इक शमअ़ होती है हवाए-दहरसे[12]
सैंकड़ों उसकी जगह होती हैं रौशन ग़म न कर

इस क़दर शादाब[13] हो जायेगी कुश्ते-ज़िन्दगी[14]
यह जहाँ कहलायेगा, इक दिन बिहिश्ते-ज़िन्दगी[15]

---

१. प्रेम-युग, २. संगठित, ३. पतझड़की नज़र, ४. नवीन ऐश्वर्य्यका, ५. सून्देश, ६. चहकती हुईं, ७. दरिया, ८. खलिहानका महत्त्व, ९. निर्माणका मानचित्र, १०. छिपा हुआ, ११. विध्वंसमें, १२. दुनियाकी हवासे, १३. हरी-भरी, १४. मुर्झाई ज़िन्दगी, १५. जीवन-स्वर्ग ।

## ऐ नौजवानो

[ १४ में-से ५ बन्द ]

ऐ नेज़ा बाज़ो[1] ! ऐ सैफ़रानो[2] !!
ऐ हिम्मतोंकी संगीं चटानो !
मअ़मारे-दौराँ[3] अपनेको जानो
वह करके छोड़ो जो दिलमें ठानो
ऐ नौजवानो ! ऐ नौजवानो !!

हिम्मतका अपनी सिक्कः बिठाओ
आफ़ाक़के[4] हर गोशे पै छाओ
फ़तहो-ज़फ़रका परचम[5] उड़ाओ
ज़ोरे-जवानी हाँ आज़माओ
ऐ नौजवानो ! ऐ नौज़वानो !!

क्यों ग़ैरका हो एहसान गवारा
काफ़ी है तुमको अपना सहारा
हो वलवलोंका[6] ज़ोरों पै धारा
मशरिक़[7] तुम्हारा, मग़रिब[8] तुम्हारा
ऐ नौजवानो ! ऐ नौजवानो !!

उल्फ़तकी गंगा हरसू[9] बहा दो
बुग़्ज़ो-हसदका[10] क़िस्सा चुका दो

---

१. भाला रखनेवालो, २. कृपाण-धारियो; ३. युग-निर्माता, ४. आकाशके, ५. विजय-ध्वजा, ६. उमंगोंका, ७. पूरब, ८. पश्चिम, ९. हर ओर, १०. ईर्ष्या-द्वेषका ।

हर तीरगीको[1] अज़्मे-फ़ना[2] दो
महरो-वफ़ाकी[3] शमएँ जला दो
ऐ नौजवानो ! ऐ नौजवानो !!
आया है ज़दमें[4] बर्क़े-तपाँकी[5]
लाज़िम नहीं क्या फ़िक्र आशियाँकी
तुमपर नज़र है सारे जहाँकी
तुम आबरू हो हिन्दोस्ताँकी
ऐ नौजवानो ! ऐ नौजवानो !!

'निहाल' साहब बर्क़े-तपाँसे तो अपने आशियांको बचाये रहे, परन्तु जिस चमने-हिन्दकी आबरू बचानेके लिए वे नौजवानोंको उत्साहित कर रहे थे, उसी चमने-हिन्दके बाग़वां, गुलचीं और सैयादके संकेतपर परस्पर कुछ ऐसे भिड़े कि आती हुई बहार, ख़िज़ांसे भी अधिक भयावनी हो उठी। साम्प्रदायिक विप्लवकी ऐसी आँधी उठी कि न उसने बुलबुलों और कौओं में अन्तर समझा, न उसने फूलों और काँटोंमें फ़र्क़ किया। एक सिरेसे उजाड़ना प्रारम्भ कर दिया। निहाल—जैसे देशभक्त, एकताके समर्थक, दृढ संकल्पी भी साम्प्रदायिक आँधीमें पाँव जमाये न रह सके। उन्हें भी मजबूरन अपना प्यारा वतन परित्याग करके पाकिस्तान जाना पड़ा, वहीं जनवरी १९५२ ई० में उनकी मृत्यु हुई।

'निहाल' नज़्म और ग़ज़लके शाइर थे। दोनों ही रंगोंमें उन्होंने सफलता प्राप्त की थी। लेकिन उनका समूचा कलाम देखनेसे ऐसा आभास मिलता है कि वे वास्तवमें नज़्म-गो शाइर थे। क्योंकि उनकी अधिकांश

---

१. अँधेरेको, २. मौतका निमंत्रण, ३. नेकियोंकी, ४-५ उत्तप्त बिजलीके निशानेमें।

ग़ज़लें भी नज़्म—जैसी नसीहत पूर्ण, स्फूर्तिदायक और प्रेरणाप्रद हैं। उनकी ग़ज़लोंके शेर, ग़ज़लके लबो-लहजे और पारिभाषिक शब्दोंमें न हो कर नज़्मिया ढंगपर अधिक हैं।

रंगे-जदीद [ प्रगतिशील ढंग ] की ग़ज़लोंसे चुने गये शेर—

मसाइबे-जहाँ[1] हैं, दिलशिकन[2] यह मानता हूँ मैं
गुज़र भी जा मसाइबे-जहाँसे खेलता हुआ

बनाये भी इन्हीं हाथोंसे थे, बिगाड़े भी
इक आशियाँ नहीं, सौ आशियाँसे खेल चुका
है मेरे अज़्मको[3] दरकार ताज़ा बाज़ीगाह[4]
ज़मींसे खेल चुका आसमाँसे खेल चुका

चश्मे-जहाँको[5] वुसअ़ते - जोशे - अ़मल[6] दिखाये जा
अर्ज़ो-समाके ताजदार[7]! अर्ज़ो-समापै छाये जा
जितना दबाये सख़्तिए-कोहे-गराने-ग़र्म[8] तुझे
मज़हकए-वजूदे-ग़र्म[9] और भी तू उड़ाये जा
हाँ यूँही दादे-ज़ुल्म[10] दे चर्ख़े-जफ़ा-शुआ़रको[11]
हाँ यूँही मुसकराये जा हाँ यूँही गुनगुनाये जा

---

१. संसारकी मुसीबतें, २. दिल तोड़नेवाली, ३. इरादेको, ४. नवीन क्षेत्र, ५. विश्वदृष्टिको, ६. कर्तव्यके उत्साहका क्षेत्र, ७. पृथ्वी-आकाशके सम्राट्, ८. दुःख रूपी पर्वतकी कठोरता, ९. कष्टोंके अस्तित्वका उपहास, १०. अत्याचारोंकी सराहना करके, ११. अत्याचारी आस्मानको।

लहज़ा-ब-लहज़ा[1] फ़ाश[2] कर दिलके हक़ाइक़े-निहाँ[3]
साग़रे-गिलको अपने तू साग़रे-जम[4] बनाये जा
होंगी इसी तरहसे तै मंज़िलें ओजकी[5] तमाम
रफ़अ़ते-महरो-माहको[6] फ़र्शे-क़दम[7] बनाये जा

क्या नहीं जानता है तू इनायते-इन्क़िलाबको
तुझसे यह खुलके क्या कहूँ नक़्शे-कुहन[8] मिटाये जा
हो वह हिजाब[9] या नुमूद[10] दोनों अदाएँ हैं तेरी
परदः कभी गिराये जा, जल्वा कभी दिखाये जा

ज़िन्दगी होती है मुश्किलसे कहीं मुश्किलतर
जिस क़दर कहते हैं आसाँ मुझे मालूम न था

आँखोंमें समाती नहीं कुछ रफ़अ़ते-अफ़लाक[11]
किस मर्तबए-ओजपै[12] इन्साँ नज़र आया
अच्छी कही ज़ाहिदने जवानीमें न पी मै
यह तो कोई बहका हुआ इन्साँ नज़र आया
इस दिलके लिए खेल है, बारे-ग़मे-कोनीन[13]
यह मरहलए-सख़्त[14] भी आसाँ नज़र आया

---

१. उत्तरोत्तर, २. प्रकट, ३. छिपी हुई वास्तविकता, ४. जमशेदका प्याला, ५. उन्नतिकी, ६. सूर्य-चन्द्रकी चालके, साथ चल, ८. दक़ियानूसी बातें, पुरानी प्रथा, ९. शर्म, लाज, पर्दा, १०. पर्देसे बाहर आना, प्रकट होना, जल्वा दिखाना, ११. आकाशकी चाल, १२. उन्नत मर्तबेपर, १३. दुनियाके दुःखोंका बोझ, १४. कठोर काम।

इस अ़हदमें कमयाबिए-इन्साँ[1] है कुछ ऐसी
लाखोंमें ब-मुश्किल कोई इन्साँ नज़र आया
क्या बात है इस जाने-तमन्नाके[2] करमकी[3]
इसका तो सितम भी मुझे एहसाँ नज़र आया
उस दर्दको माँगा मेरी हिम्मत कोई देखे
जो दर्द कि नाक़ाबिले-दरमाँ[4] नज़र आया

ज़बाँ पै शिकवए-बेदादे-यार[5] लाऊँ क्यों ?
यही है मशवरए-दिल तो मर न जाऊँ क्या ?
मिरी निगहमें दो आलम[6] हैं ज़र्रए-नाचीज़[7]
निगाह ज़र्रए-नाचीज़से मिलाऊँ क्या ?

वह दौरे-बुलन्दी भी है आने वाला
बनेगी ज़मीं आसमाने-मुहब्बत

सामने तेरे भी इक दिन दौरे-सहबा[8] आयगा
तू अभी समझा नहीं साक़ीका ईमाँ सब्र कर

बहार से जो बदल दें ख़िज़ाँकी बे कैफ़ी
सफ़े-जहाँ पै वह-रंगीं कलाम हैं हम लोग

---

१. मानवताका अकाल, २. प्रेयसीकी, ३. कृपाकी, ४. असाध्य, लाइलाज, ५. यारके जुल्मकी शिकायत, ६. लोक-परलोक, ७. तुच्छ कण, ८. मदिरा-पात्र।

निगाहे-इश्क़में[1] हैं अज़गिरोहे-ख़ासुलख़ास[2]
नज़रमें ख़ल्क़की[3] हरचन्द आम[4] हैं हम लोग

तूफ़ाने-रोज़गार[5] हैं अज़्मे-जवाँसे[6] हम
अब क्या दबेंगे सख़्तिए-हफ़्त आसमाँसे[7] हम
जिसमें सँभाला होश था खोये जहाँ हवास[8]
दो तिनके चाहते हैं, उसी आशियाँसे हम
जिस दिनसे इश्क़ अपना हुआ मीरे-कारवाँ[9]
आगे बढ़े हुए हैं हर-इक कारवाँसे हम
वोह बिजलियोंकी चश्मके-पैहम[10] कि कुछ न पूछ
तंग आगये हैं ज़िन्दगीए-आशियाँ से[11] हम
नज़्ज़ारा उनका बनके बहुत देर तक किया
दीवानगी बरतते रहे पासबाँसे[12] हम
इक आशियाँकी हमको तबाहीका ग़मचः ख़ूब !
मानूस[13] हैं शिकस्ते-हज़ार आशियाँ से[14] हम
परवानः दिलकी आगसे या शमअ़से जला
देखो हमें कि जलते हैं सोज़े निहाँसे[15] हम

---

१. प्यारकी नज़रोंमें, २. मुख्य व्यक्तियोंमें मुख्य, ३. दुनियाकी, ४. साधारण, ५. उद्यमशील, युगवीर, ६. युवकोचित संकल्पसे, ७. सातों आसमानोंकी कठोरतासे, ८. होश, ९. यात्रीदलका नेता, १०. लगातार छेड़-छाड़, ११. नीड़के जीवनसे, १२. द्वारपालसे, १३. परिचित, १४. अनेक घोसलोंके उजड़नेसे, १५. अन्दरूनी जलनसे।

हैं कबसे तिश्ना[1] अपने गुलिस्ताँ के नख़्ले-गुल[2]
ऐ अब्रे-ज़िन्दगी[3] तुझे लायें कहाँसे हम ?
ऐ काश हो यह जज़्बए-तामीर[4] मुस्तक़िल[5]
चौंके तो हैं ख़राबिए-ख़्वाबे-गराँसे[6] हम
इस इम्तयाज़े-ख़ाकनशीनीको[7] देखना
मुमताज़[8] हैं बुलन्दिए हर आस्माँसे हम
नागुफ़्तनी[9] हदीसे-मुहब्बत[10] नहीं, मगर
जो दिलकी बात है, वह कहें क्या ज़बाँसे हम ?
है और कितनी दूर तेरी मंज़िले-क़याम[11]
रह-रहके पूछते हैं यह उम्रे-रवाँ-से[12] हम

होनेको तो होती है, हर-इक शामदिल-आवेज़
वह आये तो कुछ और सलोनी-सी[13] हुई शाम

सर[14] नगूँ बैठे हुए क्या हो क़फ़सको ले उड़ो
इतनी हिम्मत क्या नहीं है ऐ असीराने-चमन[15] !
ग़ैरको किस मुँहसे इलजामे-तबाही दीजिए
बन गये दुज़्दे-चमन[16] ख़ुद ख़ाना-ज़ादाने-चमन[17]

---

१. प्यासे, २. फूल-पौदे, ३. ज़िन्दगीकी वारिस, ४. निर्माण करनेका उत्साह, ५. स्थायी, ६. गहरी नींदसे, ७. नम्रताकी विशेषताको, ज़मीनपर गुज़र-बसर करनेकी खूबीको, ८. श्रेष्ठ, ऊँचे, ९. न कहने योग्य, १०. प्रेमकी बातें, ११. निवासस्थान, १२. गमन करती हुई आयुसे, १३. चित्ताकर्षक, सुन्दर, १४. नतमस्तक, १५. चमनके क़ैदियो, १६. चमनका नाश करने वाले, लुटेरे, १७. उद्यानके रक्षक।

कामरानीहाए-जूए-शीर[1] नामुमकिन नहीं
चाहती है सख़्तिए-कुहसार ज़र्बे-कोहकन[2]

आशियाँ फूँका है बिजलीने जहाँ सौ मर्तबा
फिर उन्हीं शाख़ों पै तरहे-आशियाँ रखता हूँ मैं
कारवाँ होता है अपने नज़्मसे[3] जब बे-ख़बर
ता-ब-मंज़िल फ़िक्रे-नज़्मे-कारवाँ रखता हूँ मैं

कोई आसाँ है, अन्दाज़ा मेरी परवाज़े-पैहमका[4]
अज़लसे[5] बे-नियाज़े-आशियाँ[6] मालूम होता हूँ

रखते हो हमसे यूँ निगहे-लुत्फ़को[7] दिरेग़[8]
गोया कि इस जहाँमें तुम्हीं तुम हो, हम नहीं
मैं नामुराद शोरिशे-तूफ़ाँसे क्या डरूँ
तूफ़ाँ है बे-पनाह तो हिम्मत भी कम नहीं
है नंगपाए-शौक़को[9] वह जादहे-तलब[10]
जिस जादहे-तलबमें कोई पेचो-ख़म[11] नहीं
अपने क़दमके साथ है मंज़िल लगी हुई
मंज़िल पै जो नहीं वह हमारा क़दम नहीं

---

१. मीठे पानीकी नहर निकालनेमें सफलता पाना, २. पर्वतकी कठोरता फ़रहादकी सख़्त चोट चाहती है, ३. प्रबन्धसे, ४. लगातार उड़ानका, ५. प्रारम्भसे, हमेशासे, ६. घोंसलोंमें रहनेसे बेपर्वा, ७. सुखदायी दृष्टिको, ८. दूर, संकुचित, ९. तुच्छ उत्साहको, १०. मार्गकी इच्छा, ११. घुमाव, मोड़।

तामीरे-कायनातको[1] गहरी नज़रसे देख
वह ज़र्रा[2] कौन-सा है यहाँ जो अहम[3] नहीं

यह भी कहते हैं कि है अर्ज़े-तमन्ना[4] बे-सूद[5]
यह भी कहते हैं, तेरे मुँहमें ज़बाँ है तो सही

गर्मे-पैकार[6] हुईं गुर्ग-ख़साइलँ[7] अक़वाम[8]
ख़ूने-इन्साँ है, दरिन्दोंको[9] हलाल ऐ साक़ी!
आदमीयतका है ताबूत[10] सरे-दोश कमाल[11]
आदमीयतकी यह पामाले-कमाल[12] ऐ साक़ी!

इलाही! वह नज़र दे आशियाँ तक हो, क़फ़स जिसको
न ऐसी कम निगाही, जो क़फ़सको आशियाँ समझे
यहाँ तक तरजुमा[13] कर आपको दुनियाए-फ़ितरतका[14]
कि ख़ुद दुनियाए-फ़ितरत तुझको अपना तरजुमा समझे
यह रम्ज़े-ख़ास[15] उस्तादे-अज़लने[16] मुझको समझाई
जो समझे आपको वह मानिए-कोनों-मँकाँ समझे

---

१. संसारके निर्माणको, २. कण, ३. मुख्य, विशेष, ४. मनोभिलाषा व्यक्त करना, ५. व्यर्थ, निष्फल, ६. लड़ने-मरनेमें लीन, ७. भेड़िया मनोवृत्तिवाली, भेड़ियों-जैसे स्वभाववाली, ८. क़ौमें, जातियाँ, ९. ख़ूनी जानवरोंको, १०. अर्थी, जनाज़ा, ११. चालाकी कन्धोंपर, १२. गुणोंका पतन, १३. विज्ञ, मध्यस्थ, १४. प्रकृति-संसारका, १५. विशेष बात, १६. अनादि काल रूपी गुरुने।

चलो दुश्वार ही क्या है, ठिकाना चार तिनकोंका
निगाहे—बाग़बाँ देखी, मिज़ाजे—बाग़बाँ समझे

तेरे निसार[1] इस अन्दाज़से अ़ताब[2] न कर
अ़ताबपर भी करमका[3] गुमाँ[4] गुज़रता है
वह की ख़लूसकी[5] तौहीन[6] अहले दुनियाने
ज़बाँ पै लफ़्ज़ मुहब्बत गराँ[7] गुज़रता है
अदा निगाहोंसे होता है फ़र्ज़े—गोयाई
ज़बाँकी हदसे जो ज़ौक़े-बयाँ गुज़रता है
दरे-क़फ़स[8] तो इलाही है मुझ असीर[9] पै बन्द
कहाँसे दिलमें ग़मे—आशियाँ गुज़रता है ?

जितनी जफ़ाए—दोस्तसे[10] दिलबस्तगी[11] हुई
उतनी ही कामियाब मेरी आशिक़ी हुई
है तेरा हुस्न जबसे मेरा मरकज़े-निगाह[12]
हर शै[13] है एतबारे--नज़रसे गिरी हुई
दिल भी ग़ुलाम, दिलकी तमन्नाएँ भी ग़ुलाम
यूँ ज़िन्दगी हुई भी तो क्या ज़िन्दगी हुई ?

---

१. न्योछावर, २. क्रोध, ३. कृपाका, ४. वहम, शक, ५. मुहब्बतकी, स्नेहकी, ६. अपमान, ७. भारी, कठिन, ८. पिंजरेका द्वार, ९. क़ैदीपर, १०. प्यारेके अत्याचारोंसे, ११. घनिष्ठता बढ़ी, १२. दृष्टिकोण, १३. वस्तु ।

लाई वहीं पयामे तग़ैय्युर[1] हवाए-दहर[2]
यक लमहेको[3] जो गर्मे-तबस्सुम[4] कली हुई

कमाले-आदमे-ख़ाकी[5] तो देखो
ज़मींसे आस्माँ तक छा रहा है

ज़फ़ाए-चर्ख़े-कज रफ़्तारपर[6] फ़रियाद क्या करते ?
ख़ुद अपनी हिम्मते-आलीको[7] हम बर्बाद क्या करते ?

किस दर्जः दिलावेज़[8] था आनेका यह अन्दाज़
बिखरी हुई ज़ुल्फ़ोंको बनाते हुए आये
जिस रहमें[9] किया पाये-हिनाईने[10] तरद्दुद[11]
उस राहमें इक बाग़ लगाते हुए आये

गुज़रती है जो दिलपर ऐ असीरे-ग़म[12]! बयाँ कर ले
ख़मोशीपर गुमाने-बेहसी[13] क्यों हो, फ़ुग़ाँ[14] कर ले

---

१. क्रान्तिका सन्देश, २. दुनियाकी हवाएँ, ३. क्षणको, ४. मुसकानको उद्यत, ५. ख़ाकसे बने आदमीका कौशल, ६. आस्मानके अत्याचारकी, ७ पवित्र साहसको, ८. चित्ताकर्षक, ९. मार्गमें, १०. मेंहदी लगे पावोंने, ११. अस्त-व्यस्तता, कोई विगाड़, १२. दुःखसे जकड़े हुए, १३. अकर्मण्यताका सन्देह, १४. आह।

अगर अपनेको फ़ितरतका[1] यह इन्साँ राज़दाँ[2] कर ले
हर-इक ज़र्रःसे पैदा बेतकल्लुफ़ सौ जहाँ कर ले
अमीरे-दो जहाँ[3] बन जा, असीरे-ख़ारो-ख़स[4] कब तक
नई सूरतसे तरतीबे-बिनाए-आशियाँ[5] कर ले

मुहब्बत बिजलियोंसे खेलना ख़ुद सीख जायेगी
निजाते-आशियाँ[6] चाहे तो क़द्रे-आशियाँ[7] कर ले
सलीक़ः[8] किसको मैनोशीका[9] है, किसको नहीं साक़ी !
हर-इककी जाँच फ़र्माले, हर-इकका इम्तहाँ कर ले
हर-इक ज़र्रेको[10] कर दे आश्ना बामे-सुरैयासे[11]
ज़मींकी जिस क़दर पस्ती[12] है ओजे-आसमाँ[13] कर ले

वहाँ सौंपी गई है ख़िदमते-अर्ज़े-वफ़ा मुझको
जहाँ अहले-वफ़ाकी बात ही मानी नहीं जाती
हवाए-इश्क़ पुर आशोब[14] थी रोज़े-अज़ल[15] कैसी
अभी तक दिलसे इन्साँकी परेशानी नहीं जाती

---

१. प्रकृतिका, २. ज्ञानी, जाननेवाला, ३. दोनों जहानका स्वामी, ४. काँटों-तिनकोंमें फँसे रहना, ५. नीड़के निर्माणका प्रबन्ध, ६. घोंसलेकी स्वतन्त्रता, ७. घोंसलेका आदर, ८ शऊर, ९. सुरापानका, १०. अणुको, कणको, ११. सुरैया, नक्षत्रसे परिचित, १२. पतन, निचाई, १३. आकाश-जैसी बुलन्दी, १४. उपद्रवपूर्ण, विप्लवकारी, १५. सृष्टिके प्रारम्भमें ।

रंगे-क़दीम ( पुरातन ढंग ) की ग़ज़लोंसे चुने गये शेर—

मैं हूँ गुनाहगारे-इश्क़[1], दारो[2]-रसन मुझे क़ुबूल
ग़ैरके[3] रोबरू न कर शिकवा मेरे गुनाहका
तुमने यह क्या ग़ज़ब किया, मिलनेसे हाथ उठा लिया
अब वह सलूक भी नहीं रंजिशे-गाह-गाहका[4]

पनाहें[5] मिलती नहीं, फिर उन्हें दो आलममें
जो लोग तेरी गलीसे उठाये जाते हैं
शबे-फ़िराक़[6] चिराग़ोंका काम क्या घरमें
यह और आग-सी दिलमें लगाये जाते हैं

जी चाहता है, अर्सए-हस्तीको[7] छोड़ दूँ
रफ़अ़त-शनासे-अर्श[8] हूँ पस्तीको[9] छोड़ दूँ
मेरा तो फ़ैसला है कि शाने-ख़ुदा[10] है हुस्न
काफ़िर हूँ मैं जो हुस्न-परस्तीको[11] छोड़ दूँ

महदूदे तख़ैय्युल[12] है तेरा, उलझा है अगर तू ज़ातोंमें
तफ़रीक़ बनी आदममें[13] न कर, है बूए-फ़िसाद[14] इन बातोंमें

---

१. प्रेम-अपराधी, २. फाँसी-सूली, ३. प्रतिद्वन्द्वीके सम्मुख, ४ कभी-कभी ख़फ़ा होनेका, ५. शरण, ६. विरह-रात्रि, ७. जीवन-क्षेत्रको, ८. आकाशमें उड़नेसे परिचित, ९. पतनको, निचाईको, १०. ईश्वरीय चमत्कार, ११. सौन्दर्य्य-उपासनाको, १२. सीमित विचार, १३. मनुष्योंमें भेद-भाव, १४. उपद्रवोंकी गन्ध ।

सय्यादके घर जबसे आये, हर लहज़ः[1] जानके लाले हैं
कहते हैं सकूँ-परवर[2] जिसको, वह नींद कहाँ अब रातोंमें

मैं और ग़ुलामीकी ज़िल्लत[3] ? यह और विक़ारे-आज़ादी[4] ?
होती है नदामत-सी[5] जिस दम मुर्ग़ाने-हवाको देखता हूँ

मक़सूदे-ज़ीस्त[6] शोरिशे-तूफ़ाने-ग़ममें[7] है
इन्सान तो वही है जो ज़िन्दः अलममें[8] है
अब लज़्ज़ते-जफ़ा[9] भी नहीं है बक़दरे-ज़ौक़[10]
यह और ज़ुल्म है कि तग़ाफ़ुले[11] सितममें है
माना कि चर्ख़[12] भी है, जफ़ाजू[13] मगर कहाँ
वह लुत्फ़े-ख़ास[14] जो तेरे जौरो-सितममें है
वाक़िफ़ अभी नहीं है तेरी मसलहतसे ख़ल्क़[15]
आलम[16] हनूज़[17] कोशिशे-इरफ़ाने-ग़ममें[18] है

हिम्मते-परवाज़[19] आख़िर लेके पहुँची ता-क़फ़स[20]
ख़ुद मेरी वजहे-असीरी[21] मेरे बालो-पर बने

---

१. हर घड़ी, २ शान्तिदायक, ३. पातक, गुनाह, ४. स्वतन्त्रताका गौरव, ५. लज्जा-सी, पछतावा-सा, ६. जीवनका उद्देश्य, ७. दुःखोंकी बाढ़के शोरमें, ८. दुःखोंमें जीवित रहे, ९. अत्याचारोंका आनन्द, १० अपनी रुचिके अनुसार, ११. उपेक्षा, १२. आकाश, १३. अत्याचारी, १४. विशेष आनन्द, १५. दुनिया, जनता, १६. संसार, १७. अभी, १८. दुःखोंसे छुटकारा पानेके प्रयत्नमें, १९. उड़नेकी हिम्मत, २०. पिंजरे तक, २१. क़ैद होनेकी वजह ।

यूँ समझमें अज़मते-पीरे [1]मुग़ाँ क्या आयेगी
पहले ज़ाहिद रूशनासे - शीशओ - साग़र[2] बने
फोड़ लेना सरका समझा जायेगा ज़ोफ़े - जुनूँ[3]
बात तो जब है कि हर दीवारे-ज़िन्दाँदर[4] बने

मुद्दई[5] सैयाद, मैं बाज़ू-शिकस्ता[6] ज़ेरे-दाम[7]
क्या इलाजे - हसरते - परवाज़[8] होना चाहिए ?
अर्शसे[9] आगे निकल जायें हवाए - शौक़में
कम-से-कम यह रफ़अ़ते - परवाज़[10] होना चाहिए

साक़िए-दौराँसे शिकवा बेश-कमका है फ़िज़ूल
ज़र्फ़ जितना उसने देखा उतनी पैमानेमें है

## सितारे

जमाले-लालओ-गुल[11] जैसे उरियाँ[12] हो बहारोंमें
तुझे इक देखनेवालेने यूँ देखा हज़ारोंमें

गुलमें, शफ़क़में[13], दामने - अब्रे - बहारमें[14]
देखा जो मैंने आये नज़र तुम जगह-जगह

---

१. मदिरालयके स्वामीकी प्रतिष्ठा, २. मदिरा-पात्रोंका जानकार, ३. दीवानगीकी कमज़ोरी, ४. जेलकी दीवारद्वार बन जाये, ५. वादी, ६. पर टूटे हुए, ७. जालमें फँसा हुआ, ८. उड़ानकी अभिलाषाओंका, ९. आकाशसे, १०. उड़ानकी चाल, ११. फूलोंका सौन्दर्य्य, १२. नग्न, १३. सन्ध्याकालीन लालीमें, १४. बहारोंकी वर्षामें ।

उफ़रे पर्दा कि हमें जल्वः दिखाना तो कुजा
अब वोह अन्दाज़े - तबस्सुम भी सरे-तूर नहीं

मैं हूँ वोह, जिससे चर्ख़[1] दबता था
अब तो गरदानती ज़मीं भी नहीं

जान भी ज़िन्दगीपै देते हैं
ज़िन्दगी क़ाबिले-यक़ीं भी नहीं

आई बहार आओ चलो सैरको चलें
सब्ज़ेको रौंदते फिरें हम तुम जगह-जगह

असीरे-इश्क़[2] आज़ादाना आहें कर नहीं सकते
इलाही तंग दिल क्या इस क़दर दुनिया है ज़िन्दाँकी[3] ?

ख़िज़ाँ लक़ब है मेरे अहदे-इश्क़ो-उल्फ़तका
बहार कहते हैं जिसको तिरे शबाबमें है

देखो न हो वोह जल्वेको उरियाँ[4] किये हुए
दुनिया है तार - तार गरेबाँ किये हुए

मस्तीए-बादःमें[5] है जल्वए-साक़ी[6] भी शरीक
ऐसी सूरत हो तो फ़र्माइए क्या होश रहे ?

---

१. आस्मान, २. प्रेमके बन्दी, ३. कारागारकी, ४. नग्न, प्रकट, ५. शराबकी मस्तीमें, ६. साक़ीका जल्वा ।

मुहब्बतसे है ऐ ग़ाफ़िल ! क़यामे-आलमे-इमकाँ[1]
जो यह दुनियासे उट्ठेगी तो दुनिया भी नहीं होगी

यह मेरा ज़िम्मा कि आयेगा क़दमबोसीको[2] चाँद
आप अंगुश्ते - हिनाईसे[3] इशारा कीजिए

१० अप्रैल १९६१ ई०

---

१. संसारका अस्तित्व स्थिर है, २. पाँव चूमने, ३. मेहदी लगी उँगलीसे ।

# सहायक-ग्रन्थ-सूची

**प्रस्तुत पाँचवें दौरमें शाइरोंका कलाम उनकी निम्नलिखित कृतियोंसे संकलित किया गया है।**

**नक़्शे-जमील**—कलामे-'जमील' मज़हरी, मक्तबे-अदब पटना। प्रथम संस्करण १९५३ ई०। २०×३०=८ आकारके २५६ पृष्ठ। इस संकलनमें १८ विविध, १८ राजनैतिक, १२ इश्क़िया, २१ मुतफ़र्रिक़ नज़्में हैं।

**फ़िक्रे-जमील**—कलामे-'जमील' मज़हरी, मक्तबे-अदब पटना। प्रथम संस्करण १९५८ ई०। २०×३०=८ आकारके २१६ पृष्ठ। सन् १९५८ ई० तककी ग़ज़लोंका संकलन।

**महरावे-ग़ज़ल**—कलामे-'रविश' सिद्दीक़ी, मक्तबे-जामअ् लि० दिल्ली। प्रथम संस्करण १९५६ ई०। २०×२६=८ आकारके १५८ पृष्ठ, ग़ज़लोंका संकलन।

**कारवाँ**—कलामे-'रविश' सिद्दीक़ी, मक्तबे-जामअ् लि० दिल्ली। प्रथम संस्करण १९५० ई०। २०×३०=८ आकारके ३८ पृष्ठ। ६१ अशआ़रकी एक नज़्म।

**जूए–रवाँ**—कलामे-'अफ़सर' मेरठी, अनवर बुकडिपो लखनऊ। प्रथम संस्करण १९५४ ई०। २०×३०=१६ आकारके २३८ पृष्ठ। ४० नज़्मों, ३५ ग़ज़लों, १६ क़ितों और रूबाइयों तथा ८ फुटकर शेरोंका संकलन।

**शबाब–ओ–इन्क़िलाब**–कलामे 'निहाल' सेवहारवी, पब्लिशिंग हाउस दिल्ली। प्रथम संस्करण १९४४ ई०। २०×३०=८ आकारके २०४ पृष्ठ। पृ० ९ से १०० तक नज़्में, १०१ से २०४ पृष्ठ तक ग़ज़लें।

# उर्दू-शाइरीका प्रामाणिक

## इतिहास, तुलनात्मक अध्ययन, साहित्यिक-विवेचन

## और

## प्रारम्भसे वर्त्तमान कालीन शाइरोंका

## सर्वश्रेष्ठ कलाम और परिचय

शेर-ओ-शाइरी [ सर्वश्रेष्ठ ३१ शाइरोंका कलाम ]

शेर-ओ-सुख़न पाँच भाग [प्रारम्भसे १९५९ तककी ग़ज़लपर अनुसन्धान]

शाइरीके नये दौर पाँच भाग [१९२० से १९६१ तककी नवीन शाइरी]

शाइरीके नये मोड़ दो भाग [प्रगतिशील और प्रयोगवादी शाइरी १९३५से १९६१ तक]

शाइरीके नये मोड़ भाग तीन, चार, पाँच [ प्रेस में ]

उक्त ग्रन्थोंके ५००० पृष्ठोंमें जिन ख्यातिप्राप्त शाइरोंका परिचय एवं कलाम दिया गया है, उनकी वर्णानुक्रम सूची आगेके पृष्ठोंमें दी गई है।

# शाइरोंकी वर्णानुक्रम सूची

| नाम शाइर | शेरो-शाइरी पृष्ठ | शेरो-सुख़न भाग | शाइरीके दौर | शाइरीके मोड़ |
|---|---|---|---|---|
| अमानत | | पहला | | |
| अमीर मीनाई | २४२ | ,, | | |
| अर्श मलशियानी | ५१२ | | | दूसरा |
| अलम मुजफ़्फ़रनगरी | | चौथा | | |
| असग़र गोण्डवी | ५९६ | तीसरा | | |
| असर देहलवी | | पहला | | |
| असर लखनवी | | दूसरा | | |
| ,, | | चौथा | | |
| असीर | | पहला | | |
| अहसन | | पहला | | |
| अहसन मारहरवी | | चौथा | | |
| [ आ ] | | | | |
| आग़ा शाइर | | चौथा | | |
| आज़ाद मुहम्मद हुसैन | २७० | पहला | | |
| आज़ाद अन्सारी | | तीसरा | | |
| आज़ाद जगन्नाथ | | | | दूसरा |
| आज़ुर्दा | | पहला | | |
| आर्ज़ू देहलवी | | ,, | | |
| आर्ज़ू लखनवी | | दूसरा | | |
| आतिश | | पहला | | |
| आबाद | | ,, | | |
| आलम महल | | ,, | | |

| नाम शाइर | शेरो-शाइरी पृष्ठ | शेरो-सुखन भाग | शाइरीके दौर | शाइरीके मोड़ |
|---|---|---|---|---|
| [ ज ] | | | | |
| ज़की महदीअली खाँ | | पहला | | |
| ज़की मुहम्मद | | ,, | | |
| जज़्बी | ५५१ | | | |
| ज़फ़र | | पहला | | |
| जमील मज़हरी | | | पाँचवाँ | |
| जलाल लखनवी | | ,, | | |
| जलील मानिकपुरी | | दूसरा | | |
| ज़हीर | | पहला | | |
| जावेद रामपुरी | | ,, | | |
| जिगर मुरादाबादी | ६०२ | तीसरा | | |
| ज़िया | | पहला | | |
| जुरअत | | ,, | | |
| जोश मल्सियानी | | चौथा | | |
| जोश मलीहाबादी | ३७६ | | पहला दौर | |
| ज़ौक़ | १९३ | पहला | पूर्ण | |
| [ त ] | | | | |
| तस्कीन | | पहला | | |
| तस्लीम | | ,, | | |
| ताजवर नजीबाबादी | | चौथा | | |
| ताबाँ | | पहला | | |
| [ द ] | | | | |
| दर्द | १६७ | पहला | | |
| दरख़्शाँ | | ,, | | |

| नाम शाइर | शेरो-शाइरी पृष्ठ | शेरो-सुखन भाग | शाइरीके दौर | शाइरीके मोड़ |
|---|---|---|---|---|
| फ़ातिमा बेगम | | पहला | | |
| फ़ानी बदायूनी | ५९० | तीसरा | | |
| फ़िराक़ | | पहला | | |
| फ़िराक़ गोरखपुरी | ६०७ | | दूसरा | |
| फ़ुग़ाँ | | पहला | | |
| फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ | ५३२ | | | तीसरा |
| [ ब ] | | | | |
| बदर आलम | | पहला | | |
| बयान | | पहला | | |
| बर्क़ ज्वाला प्रसाद | | | दूसरा | |
| बर्क़ देहलवी | ४३२ | | | |
| बर्क़ लखनवी | | पहला | | |
| बहर | | ,, | | |
| बेख़ुद देहलवी | | चौथा | | |
| बेख़ुद बदायूनी | | चौथा | | |
| बेदार | | पहला | | |
| [ म ] | | | | |
| | | पहला | | |
| मजरूह | | ,, | | |
| मज़हर | | ,, | | |
| मजाज़ | ५४० | | | तीसरा |
| ममनून | | पहला | | |
| महबूब महल | | ,, | | |
| महर | | ,, | | |

| नाम शाइर | शेरो-शाइरी पृष्ठ | शेरो-सुखन भाग | शाइरीके दौर | शाइरीके मोड़ |
|---|---|---|---|---|
| [ ल ] | | | | |
| लुत्फ़ | | पहला | | |
| [ व ] | | | | |
| वज़ीर | | पहला | | |
| वज़ीर अलीख़ाँ | | ,, | | |
| वली | | ,, | | |
| वहशत कलकतवी | | तीसरा | | |
| वामिक़ जौनपुरी | | | | चौथा |
| [ श ] | | | | |
| शर्फ़ | | पहला | | |
| शहीद | | ,, | | |
| शाद अज़ीमाबादी | | तीसरा | | |
| शेफ़्ता | | पहला | | |
| शैदा बेगम | | ,, | | |
| शौक़ रैना | | दूसरा | | |
| [ स ] | | | | |
| सआदत अलीख़ाँ | | पहला | | |
| सदर महल | | ,, | | |
| सफ़ी लखनवी | | दूसरा | | |
| सबा | | पहला | | |
| सरदार जाफ़िरी | | | | तीसरा |
| सरशार लखनवी | | दूसरा | | |
| साइल देहलवी | | चौथा | | |
| साक़िब लखनवी | ५७६ | दूसरा | | |
| सागर निज़ामी | ४७६ | | तीसरा | |

# विषय-सूची

शेरो-शाइरी, शेरो-सुखनके पाँचों भागों, शाइरीके नये दौर और नये मोड़में जिन महत्त्वपूर्ण-आवश्यक विषयोंपर विवेचन हुआ है, उनकी संक्षिप्त सूची यहाँ दी जा रही है। इस सूचीके अतिरिक्त वहुत-से उपयोगी अंगोंपर शाइरोंके परिचय एवं कलाममें भी व्याख्याएँ की गई हैं, उनकी सूची विस्तार-भयसे यहाँ नहीं दी जा रही है। वह प्रत्येक पुस्तकके प्रारम्भ-की विषय-सूचीमें देखी जा सकती है। शाइरोंकी सूची अनुक्रमणिकामें मिलेगी।

## शेरो-शाइरी



## नग़मए-हरम

४० पृष्ठोंका सिंहावलोकन और १०४ बहू-बेटियों द्वारा कही गई ग़ज़लों, नज़्मों और गीतोंका संकलन। इन शाइराओंकी सूची स्थानाभावके कारण अनुक्रमणिकामें नहीं दी गई है।

---

# शेरो-सुख़न

भाग पहला

पृष्ठ संख्या



शेरो-सुख़न भाग दूसरे, तीसरे और चौथेमें जिन शाइरोंका परिचय एवं कलाम दिया गया है, उनकी तालिका अनुक्रमणिकामें मिलेगी।

---

'शाइरीके नये दौर'के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे और पाँचवें दौरके १२६३ पृष्ठोंमें, एवं 'शाइरीके नये मोड़'के दूसरे, तीसरे और चौथे, पाँचवें मोड़के अनुमानतः ११४६ पृष्ठोंमें जिन शाइरोंका परिचय एवं कलाम उल्लिखित है, उनकी तालिका अनुक्रमणिका में देखिए। पहले मोड़के १५४ शाइरोंकी सूची स्थानाभाव और पाँचवाँ मोड़ अमुद्रित होनेके कारण इन दोनों मोड़ोंमें उल्लिखित शाइरोंकी तालिका अनुक्रमणिकामें नहीं दी गई है।

---

१

दिल्लीवास—१९२० से ४

तक। प्रारंभमें चार वर्ष खद्दरका व्यापार

उर्दू-साहित्य एवं इतिहासका स्वतन्त्र अध्य

यन। १९२४से साहित्यिक अभिरुचि

१५००पृष्ठोंके एक दर्जन ऐतिहासिक

सामाजिक ग्रंथोंका निर्माण एवं प्रकाशन

जोकि अब अनुपलब्ध हैं। अनेकान्त औ

वीर पत्रोंका सम्पादन-प्रकाशन।

देश-सेवा—बाल्यावस्थासे ही

राष्ट्रीय विचार। १९३०के नमक-सत्याग्र

में दिल्लीसे प्रथम सत्याग्रही। १२४दफ़ामें

सवा दो वर्ष सी-क्लास कारावास।

विवाह—१९३५ई०में विवाह

चार पुत्र, एक पुत्री। १९३६–४० तक

तिलक इंश्योरेंसमें पब्लिसिटी ऑफ़ीसर।

१९४१ [illegible]—डालमियानगर

में साहू-जैन-[illegible]यक श्रम-कल्याण-

पदाधिकारी एवं उर्दू-शाइरीको हिन्दीमें

लानेवाले मूक साहित्य-साधक।

# भारतीय ज्ञानपीठ
## काशी

**उद्देश्य**

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध
और अप्रकाशित सामग्रीका
अनुसन्धान और प्रकाशन
तथा लोक-हितकारी
मौलिक-साहित्यका निर्माण

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन

प्र
श्रीमत



मुद्रक : सन्मति मुद्रणालय, दुर्गा वाराणसी